राष्ट्रीय दैनिक

प्रात: किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

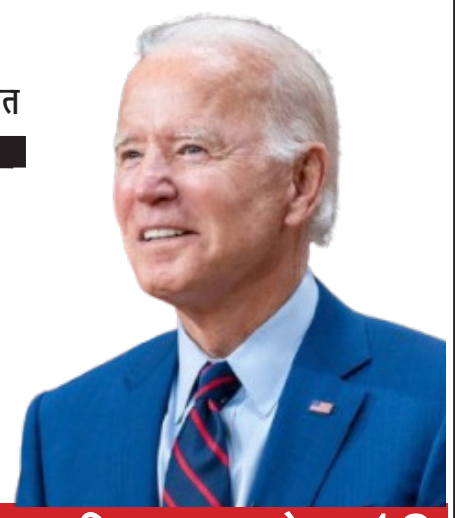

11 संन्यास पर पिता रविचंद्रन ने लगाए गंभीर आरोप ...

अमेरिकी सीनेट ने वार्षिक रक्षा नीति बिल किया पारित, हस्ताक्षर के ... 12

वर्ष : 15 | अंक : 244 | नई दिल्ली, शुक्रवार, 20 दिसंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 21°C

न्यूनतम तापमान 30.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 79,005

चांदी 92,500

सेंसेक्स 81,786

निफ्टी 24,668

संक्षिप्त खबरें

भाजपा सांसदों ने हमें संसद भवन में जाने से रोका, धमकाया : राहुल

नईदिल्ली।लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के धक्का-मुक्की के आरोपों को खारिज करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि सत्तापक्ष के सदस्यों ने विपक्षी सांसदों को संसद भवन में जाने से रोका और धमकी दी। उन्होंने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, मैं संसद के अंदर जाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन भाजपा के सांसद मुझे रोकने की कोशिश कर रहे थे, धक्का दे रहे थे और धमका रहे थे। राहुल गांधी ने दावा किया कि विपक्षी नेताओं के साथ धक्का-मुक्की की गई, लेकिन इससे उन्हें फर्क नहीं पड़ता। कांग्रेस नेता ने कहा, यह संसद है और अंदर जाना हमारा अधिकार है। अक्सर सफेद रंग टी-शर्ट पहनने वाले राहुल गांधी बृहस्पतिवार को नीले रंग की टी-शर्ट पहनकर संसद पहुंचे।उन्होंने कहा कि मुख्य मुद्दा यह है कि संविधान और बाबासाहेब की स्मृति का अपमान हुआ है। भाजपा ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की, जिसके कारण उसके सांसद प्रताप सारंगी गिर गए और उनके सिर में चोट लग गई।

महत्वपूर्ण खबर

राष्ट्रपति मुर्मू ने गोवा मुक्ति दिवस पर राज्य के लोगों को शुभकामनाएं दीं

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को गोवा के मुक्ति दिवस पर राज्य के लोगों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि राष्ट्र निडर स्वतंत्रता सेनानियों और सशस्त्र बलों को उनके असाधारण साहस के लिए नमन करता है।वर्ष 1961 में पुर्तगालियों से राज्य को मुक्त कराने के लिए सशस्त्र बलों के ऑपरेशन विजय की सफलता की याद में हर साल 19 दिसंबर को गोवा मुक्ति दिवस मनाया जाता है।मुर्मू ने एक पोस्ट में कहा, ह्यगोवा मुक्ति दिवस पर, राष्ट्र उन वीरों को श्रद्धांजलि देता है जिन्होंने औपनिवेशिक शासन से गोवा की मुक्ति के लिए निस्वार्थ बलिदान दिया। हम निडर स्वतंत्रता सेनानियों और हमारे सशस्त्र बलों को उनके असाधारण साहस व अटूट समर्पण के लिए नमन करते हैं।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के निर्माण की वजह से कई माह तक कालिंदी कुंज जंक्शन में यातायात रहेगा प्रभावित

नईदिल्ली।दिल्ली यातायात पुलिस ने आज जारी परामर्श (ट्रैफिक एडवाइजरी) में कहा कि दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के निर्माण की वजह से कालिंदी कुंज जंक्शन (मार्ग संधि स्थल) पर यातायात प्रभावित रहेगा। इसलिए वाहन चालक परेशानी से बचने के लिए वैकल्पिक मार्गो का सहारा लें। परामर्श में कहा गया कि आगरा कैनाल रोड पर एक पुल और दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे का निर्माण कार्य आगामी कई माह तक जारी रहने की संभावना है।

खरगे ने संसद भवन परिसर में धक्का मुक्की को लेकर बिरला को लिखा पत्र

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। बाबासाहेब आंबेडकर से जुड़े मुद्दे पर विपक्ष और सत्तापक्ष के सांसदों ने गुरुवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया। इस दौरान उनके बीच धक्का-मुक्की भी हुई। भारतीय जनता पार्टी का आरोप है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की, जिस वजह से उसके बुजुर्ग सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हुए। सारंगी को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। दूसरी तरफ राहुल गांधी ने दावा किया कि भाजपा सांसदों ने उन्हें और अन्य विपक्षी सदस्यों को संसद भवन में जाने से रोका और धक्का-मुक्की की। इसे लेकर कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को लिखे पत्र में कहा। उन्होंने कहा कि मुझे भाजपा सांसदों ने धक्का दिया, मैं अपना संतुलन खो बैठा और मकर द्वार के सामने जमीन पर बैठने के लिए मजबूर हो गया। खरगे ने लोकसभा अध्यक्ष से भाजपा सांसदों द्वारा उन्हें 'धक्का' दिए जाने के मामले की जांच का आदेश देने की मांग की। उन्होंने कहा कि यह न केवल उन पर, बल्कि राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस अध्यक्ष पर हमला था।

मामले में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी मारपीट करने के लिए बीच में घुसे थे। उनका व्यवहार मानो गुंडे का व्यवहार था, यह देश गुंडे को

बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने हमारे एक बुजुर्ग सांसद को धक्का देकर गिरा दिया। वहीं, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि हमारे दो सांसदों को गंभीर चोटें लगी हैं। 4-5 सांसदों ने आकर शिकायत दर्ज कराई है। मकर द्वार पर आज इखढ-ठउझ सांसदों ने पहली बार प्रदर्शन किया। इनको (विपक्ष) लगा ये उनकी जागीर है... वे भीड़ को चीरते हुए आए। विपक्ष के नेता को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

राहुल ने क्या कहा?

राहुल गांधी ने कहा कि मैं संसद के अंदर जाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन भाजपा के सांसद मुझे रोकने की कोशिश कर रहे थे, धक्का दे रहे थे और धमका रहे थे। राहुल ने दावा किया कि खरगे और प्रियंका गांधी के साथ भी धक्का-मुक्की की गई, लेकिन इससे विपक्ष को फर्क नहीं पड़ता। यह संसद है और अंदर जाना हमारा अधिकार है। उन्होंने कहा कि मुख्य मुद्दा यह है कि संविधान और बाबासाहेब की स्मृति का अपमान हुआ है।

शिवराज और प्रह्लाद जोशी पहुंचे अस्पताल

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि सारंगी के सिर में चोट लगी और खून रोकने के लिए कुछ टांके लगाए गए हैं। चौहान और केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने अस्पताल जाकर सारंगी से मुलाकात भी की।

क्या है मामला?

दरअसल, गृह मंत्री अमित शाह की बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित टिप्पणी को लेकर विरोध जताते हुए विपक्षी सदस्यों ने मार्च निकाला तो भाजपा सांसदों ने कांग्रेस पर बाबासाहेब के अपमान का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। संसद भवन के 'मकर द्वार' के निकट सत्तापक्ष और विपक्ष के सदस्य एक दूसरे के सामने आ गए और जमकर नारेबाजी की।

किस बात पर विवाद?

दरअसल, अमित शाह की टिप्पणी को लेकर संसद के दोनों सदनों में बुधवार से गतिरोध बना हुआ है। कांग्रेस और विपक्षी दलों का आरोप है कि शाह ने 'भारत के संविधान की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा' विषय पर राज्यसभा में दो दिन तक चली चर्चा का जवाब देते हुए मंगलवार को अपने संबोधन के दौरान बाबासाहेब का अपमान किया। दूसरी तरफ भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने हमेशा बाबासाहेब का अपमान किया और उन्हें चुनाव में तक हरवाया।

संसद भवन के द्वार पर धक्का-मुक्की में भाजपा के दो सांसद हुए घायल

आज पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सांसद 1951 के बाद से कांग्रेस पार्टी द्वारा अंबेडकर के अपमान के खिलाफ विरोध करने वहां गए थे। जब राजग के सांसद मकर द्वार, मुख्य द्वार पर विरोध कर रहे थे, तब राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के सांसद आए और भाजपा के दो सांसदों पर हमला किया, उन्हें धक्का दिया और अन्य सांसदों के साथ भी धक्का-मुक्की की। भाजपा के दो सांसद प्रताप सिंह सारंगी और मुकेश राजपूत को गंभीर चोटें आई हैं।

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। संसद भवन के मकर द्वार पर गृह मंत्री अमित शाह के राज्यसभा में डॉ. भीमराव अंबेडकर के बारे में दिये गये बयान के विरोध में गुरुवार को प्रदर्शन कर रहे इंडी गठबंधन के सांसदों एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ धक्का-मुक्की में गिरकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दो सांसद घायल हो गये, जिन्हें यहां उपचार के लिए राममनोहर लोहिया अस्पताल में ले जाया गया। संसद भवन के मकर द्वार पर पूर्वाह्न 11 बजे बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर का चित्र लेकर भाजपा और इंडिया समूह के सांसद प्रदर्शन कर रहे थे। इसी दौरान हुई धक्का-मुक्की में भाजपा सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत गिर गये जिससे वे घायल हो गये। श्री सारंगी के सिर में चोट आयी है। श्री सारंगी को व्हील चेयर पर और श्री राजपूत को स्ट्रेचर पर एम्बुलेंस तक ले जाया गया। श्री सारंगी ने कहा कि वह सीढ़ियों के पास खड़े थे तभी कांग्रेस के नेता राहुल गांधी आये और उन्होंने एक सांसद को धक्का दिया जो मेरे (श्री सारंगी के) ऊपर गिरा जिससे वह भी गिर गये। बाद में दोनों घायल सांसदों को यहां डॉ राम मनोहर लोहिया अस्पताल में ले जाया गया। पता चला है कि श्री राजपूत को आईसीयू में भर्ती कराया गया है।

संसदीय कार्य, विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि इस धक्कामुक्की में दो नेता घायल हुए हैं। 4-5 अन्य सांसदों ने इस बारे में शिकायत की है...सभी सांसदों को विरोध करने का अधिकार है। उन्होंने (राहुल गांधी) शारीरिक हिंसा की और वे सारंगी जी की हालत देखने भी नहीं गए। उन्होंने (कांग्रेस ने) हमेशा बीआर अंबेडकर के साथ अन्याय किया है। उन्होंने हमेशा उनका अपमान किया है। हम अस्पताल से रिपोर्ट के अनुसार कार्रवाई करेंगे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा, संसदीय इतिहास में यह एक काला दिन है। मयार्दा को तार-तार कर दिया गया है। लोकतंत्र को तार-तार कर दिया गया है। राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की गुंडागर्दी जैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। भारत के संसदीय इतिहास में ऐसा आचरण कभी नहीं देखा गया। अगर वे हरियाणा और महाराष्ट्र हार गए तो वे संसद में अपनी हताशा क्यों निकाल रहे हैं ? राहुल गांधी और कांग्रेस के लोगों को लोकतंत्र में आचरण को समझने के लिए एक कार्यशाला बुलाई जानी चाहिए। मैं दुखी हूं। श्री अमित शाह के भाषण ने कांग्रेस को बेनकाब कर दिया है। वे इससे इतने हताश हो गए हैं कि अब गुंडागर्दी पर उतर आए हैं। हम इस गुंडागर्दी की निंदा करते हैं।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजीजू ने कहा कि मकर द्वार लोकसभा और राज्यसभा दोनों में सांसदों के प्रवेश का मुख्य द्वार है। कांग्रेस और उनके अन्य सांसद उस विशेष स्थान पर खड़े रहे और पूरे सत्र के दौरान वे तख्तियां दिखाते रहे और नारे लगाते रहे। आज पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सांसद 1951 के बाद से कांग्रेस पार्टी द्वारा अंबेडकर के अपमान के खिलाफ विरोध करने वहां गए थे। जब राजग के सांसद मकर द्वार, मुख्य द्वार पर विरोध कर रहे थे, तब राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के सांसद आए और भाजपा के दो सांसदों पर हमला किया, उन्हें धक्का दिया और अन्य सांसदों के साथ भी धक्का-मुक्की की।

भाजपा के दो सांसद प्रताप सिंह सारंगी और मुकेश राजपूत को गंभीर चोटें आई हैं। श्री रिजीजू ने कहा, मैं राहुल गांधी से कहना चाहता हूं कि अगर आप इस तरह की शारीरिक हिंसा का सहारा लेंगे, अगर अन्य सांसद भी शारीरिक हिंसा का सहारा लेने लगेंगे, तो क्या होगा ? हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। राहुल गांधी को अन्य सांसदों के खिलाफ अपनी शारीरिक शक्ति का उपयोग करने का अधिकार किसने दिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि अन्य सांसद कमजोर हैं। यह सिर्फ.इसलिए है क्योंकि हम अहिंसा में विश्वास करते हैं और हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। राहुल गांधी द्वारा सांसदों पर शारीरिक हमला निंदनीय है। यह उनके गुस्से, उनकी हताशा का घोर दुरुपयोग है और जिस तरह से राहुल गांधी ने संसद के साथ व्यवहार किया है, उससे पता चलता है कि राहुल गांधी लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते हैं। मैं राहुल गांधी से कहना चाहता हूँ कि हम देखेंगे कि हम क्या उचित कार्रवाई कर सकते हैं। लेकिन उन्हें देश से माफी मांगनी चाहिए कि उन्होंने दूसरे सांसदों के खिलाफ अपनी शारीरिक शक्ति का इस्तेमाल किया है। हम सिर्फ.इसलिए शारीरिक जवाबी कार्रवाई नहीं कर रहे हैं क्योंकि हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं।

पीएम मोदी ने जाना चोटिल सांसदों का हाल

भाजपा सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत गुरुवार को संसद भवन में सीढ़ियों से गिरकर चोटिल हो गए। सांसदों का आरोप है कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने उन्हें धक्का दिया, जिसके बाद वह गिर गए और घायल हो गए। इस घटना पर भाजपा नेताओं ने कड़ी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने का निर्णय लिया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चोटिल सांसदों का हालचाल भी जाना। भाजपा सांसदों के साथ हुई धक्का-मुक्की की जानकारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी दी गई।

अंबेडकर मुद्दे पर संसद के भीतर ही नहीं, बाहर भी हंगामा

नई दिल्ली। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को लेकर सियासत तेज हो गई है और गुरुवार को संसद के भीतर ही नहीं, संसद परिसर में भी सत्ता पक्ष तथा विपक्ष के सांसदों के बीच धक्का-मुक्की होने के साथ ही जमकर हंगामा हुआ। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि उनके साथ सदन में जाते हुए संसद के द्वार पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसदों ने धक्का मुक्की की है। श्री गांधी ने कहा कि सरकार बाबा साहब का अपमान कर रही है और संविधान पर आक्रमण किया जा रहा है। भाजपा के लोगों ने संसद के मकर द्वार को ब्लॉक करने की कोशिश कर उन्हें अंदर जाने से रोकने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि वह सदन में जा रहे थे तो भाजपा के एक सांसद ने उन्हें धक्का दिया। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गाँधी वाड्रा ने कहा कि सरकार ने बाबा साहब अंबेडकर के साथ संसद से बाहर छेड़छाड़ करते हुए उनकी फोटो हटा दी है। उन्होंने कहा, सदन में बाबा साहेब का अपमान करने के बाद आज फिर भाजपा ने उनका अपमान किया। उनकी फोटो के साथ छेड़-छाड़ करके किसी और की फोटो लगा दी। ये वही मानसिकता है जो जगह-जगह लगी बाबा साहेब की मूर्तियों को क्षति पहुँचाती है। ये बाबा साहेब का अपमान है। संविधान निमार्ता का अपमान है ये।

भारत और चीन के बीच फिर से शुरू होगी कैलाश मानसरोवर यात्रा!

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर भारत और चीन के बीच लंबे वक्त तक बने हुए विवाद की समाप्ति के बाद बीजिंग में दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों के बीच एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। इसका नतीजा ये रहा कि अब भारत और चीन के बीच फिर से कैलाश मानसरोवर यात्रा शुरू होगी! जिसमें भारत का नेतृत्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल ने किया और चीन की तरफ से बैठक में विदेश मंत्री वांग यी शामिल हुए। विदेश मंत्रालय ने बैठक के बाद एक बयान जारी कर बताया कि विशेष प्रतिनिधियों ने अपनी वार्ता में इस बात के महत्व को रेखांकित किया कि सीमा के इलाकों में शांति और सौहार्द को बनाए रखने से दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने में काफी मदद मिलती है। सीमा के मसले पर दोनों के बीच सकारात्मक और रचनात्मकता बातचीत हुई। एलएसी पर जमीनी स्तर पर शांति बहाली की भी डोभाल और वांग यी ने वकालत की। बैठक में साझा हितों से जुड़े हुए भारत और चीन के दोनों पक्षों, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी बातचीत की गई। इसके अलावा सीमा पार सहयोग, कैलाश मानसरोवर यात्रा की फिर से शुरूआत, सीमा पार नदी सहयोग और व्यापार के मामले पर विचारों का आदान-प्रदान किया गया। दोनों ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि दोनों देशों के बीच स्थिर और बेहतर

संबंध क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय शांति और समृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। यहां बता दें कि दोनों देशों के बीच 2020 से कोरोना महामारी के समय से ही कैलाश मानसरोवर यात्रा पर रोक लगी हुई है।

कायम होगी सीमा पर शांति: मंत्रालय ने बताया कि अपनी बातचीत के दौरान 2020 के विवाद से सीख लेते हुए दोनों विशेष प्रतिनिधियों ने सीमा पर शांति और सौहार्द कायम करने के उपायों पर मंथन किया और प्रभावी सीमा प्रबंधन पर भी जोर दिया। साथ ही इसकी प्राप्ति के लिए दोनों ने सैन्य और कूटनीतिक तंत्र के मार्गदर्शन का प्रयोग करने पर सहमति जताई। यह बैठक एलएसी विवाद की समाप्ति की भारत द्वारा 21 अक्टूबर 2024 को की गई घोषणा के बाद रूस के कजान शहर में दोनों देशों के राष्ट्रध्यक्षों के बीच हुई पहली द्विपक्षीय बैठक में बनी सहमति के आधार पर हुई। 2020 में हुए सीमा विवाद के खत्म होने के बाद हुई विशेष प्रतिनिधियों की यह पहली बैठक थी।

मोदी सरकार के तहत भारत रक्षा क्षेत्र में 'अभूतपूर्व' गति से आगे बढ़ रहा है : राजनाथ

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत आधुनिक हथियारों और तकनीक के मामले में पीछे रह गया था, लेकिन मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद यह रक्षा क्षेत्र में अभूतपूर्व गति से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है।सिंह ने एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आधुनिक युद्धकला तेजी से बदल रही है और राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए उच्चस्तरीय तकनीक अपनाये जाने की जरूरत है। रक्षा मंत्री ने वैज्ञानिकों और इंजीनियरों से बदलते समय के अनुरूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों पर पकड़ मजबूत करने का आह्वान किया तथा उनसे भारत की विरासत को कभी न भूलने का आग्रह किया।सिंह आईआईटी दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।रक्षा मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि ये विशिष्ट प्रौद्योगिकियां आने वाले समय में लगभग हर क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेंगी। उन्होंने कहा, अभी हम शुरूआती चरण में हैं। हमारा लक्ष्य सबसे पहले इन तकनीकों पर पकड़ मजबूत करना होना चाहिए, ताकि भविष्य में इनका उपयोग लोगों के कल्याण के लिए किया जा सके और उनकी तत्काल बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। सिंह ने कहा कि दुनिया निरंतर विकसित हो रही है और रक्षा क्षेत्र इस परिवर्तन से बचा नहीं रह सकता।

संबोधन प्रदेश सरकार की सक्रियता का ही परिणाम है कि उत्तर प्रदेश, सोलर रूफ टॉप इंस्टालेशन के मामले में गुजरात और महाराष्ट्र के बाद देशभर में तीसरे स्थान पर है।

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के अजातशत्रु थे : सीएम योगी

सीएम ने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता को स्थिरता में बदलना, सुशासन के लक्ष्यों को प्राप्त करना, देश के अंदर अंत्योदय की योजना, हर गरीब-वंचित को अधिकार मिले, अंत्योदय कार्ड-राशन उपलब्ध कराने की कार्रवाई हो, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, अनुसूचित जाति-जनजाति या पिछड़े वर्ग को उनका अधिकार दिलाने के साथ ही स्वर्णिम चतुर्भुज, विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर व हाईवे अटल जी की देन है।

प्रात: किरण/ एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के अजातशत्रु थे। उन्हे सुशासन का प्रतीक माना जाता है। उन्होने कहा राजनीतिक अस्थिरता को स्थिरता में बदलना, सुशासन के लक्ष्यों को प्राप्त करना, देश के अंदर अंत्योदय की योजना, हर गरीब-वंचित को अधिकार मिले, अंत्योदय कार्ड-राशन उपलब्ध कराने की कार्रवाई हो, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, अनुसूचित जाति-जनजाति या पिछड़े वर्ग को उनका अधिकार दिलाने के साथ ही स्वर्णिम चतुर्भुज, विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर व हाईवे अटल जी की देन है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को संगीत नाटक अकादमी में सुशासन सप्ताह का शुभारंभ किया। उन्होने श्री वाजपेयी के व्यक्तित्व, कृतित्व पर लगाई गई प्रदर्शनी का शुभारंभ व अवलोकन किया। श्री वाजपेयी के जन्मदिवस की 100वीं वर्षगांठ पर 25 दिसंबर तक सुशासन सप्ताह मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत मां के महान सपूत, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज से पूरे देश-प्रदेश में सुशासन सप्ताह

का शुभारंभ हो रहा है। अटल जी की पैतृक जन्मभूमि उत्तर प्रदेश है। उन्होंने अपनी कर्मभूमि के रूप में भी उत्तर प्रदेश को ही चुना। बलरामपुर व लखनऊ से कई बार उन्होंने संसद में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। विदेश मंत्री, प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने देश को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। अटल जी कवि, पत्रकार, साहित्यकार व राजनेता थे। वे समन्वय के साथ सबको लेकर चलने का सामर्थ्य रखते थे। वे भारतीय राजनीति के अजातशत्रु कहे जाते थे। अटल जी का छह दशक का सार्वजनिक जीवन बिना किसी कलंक के रहा। श्री योगी ने कहा कि आज से हर जनपद में कार्यक्रम प्रारंभ हुए है, जो सप्ताह भर (25 दिसंबर) चलेंगे। स्कूली बच्चों के लिए सुशासन पर निबंध लेखन, उच्च शिक्षा स्तर पर भाषण, पेंटिंग प्रतियोगिता, ग्रामीण क्षेत्र में संगोष्ठी के आयोजन हो रहे हैं। इसके साथ ही पूरे वर्ष भर भी आयोजन होंगे। विजेताओं को 25 दिसंबर को सम्मानित किया जाएगा। इस दिन शाम को अटल जी की कविताओं पर आधारित काव्य संध्या भी हर जनपद, स्कूलों-कॉलेजों में होगी। इसमें नवोदित कवियों को मंच प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि अटल जी की सेवाएं व कृतित्व देशवासियों के लिए प्रेरणा है। सुशासन सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश के हर स्कूल-कॉलेज, संस्थान में इससे संबंधित कार्यक्रम होंगे। श्रद्धेय अटल जी के आदर्शों से प्रेरणा हम सभी का मार्गदर्शन होगा। अटल जी ने सुशासन के जिन लक्ष्यों को देखा और सोचा था, पीएम मोदी के नेतृत्व में देश इसे प्रभावी ढंग से लागू भी कर रहा है। यह लक्ष्य प्रदेश भी प्राप्त करेगा। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, संस्कृति व पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

गाड़ी पार्क करने के दौरान नीचे गिरने से दो लोगों की मौत, तीन घायल

देहरादून, एजेंसी। धनोल्टी मार्ग स्थित एक रेस्टोरेंट के बगल में गाड़ी पार्क करने के दौरान गाड़ी बैरिकेटिंग तोड़ते हुए नीचे जा गिरी। इससे दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई। जबकि तीन लोग घायल हो गए। घायलों को चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। घटना बुधवार देर रात की है।

मसूरी थाना प्रभारी अरविंद चौधरी ने बताया बुधवार देर रात स्कॉर्पियों में सवार पांच लोग धनोल्टी जा रहे थे। इस दौरान चालक धनोल्टी में कैसेल रेस्टोरेंट पर गाड़ी पार्क कर रहा था। अंधेरे में आगे जगह का अंदाजा न होने के कारण गाड़ी बैरिकेडिंग तोड़ते हुए नीचे गिर गई। इससे दुर्घटना में हरपाल सिंह (46) पुत्र स्व. तेज सिंह पंवार, दिलीप सिंह पंवार (48) पुत्र स्व. भगवान सिंह पंवार निवासी कंडीसौड़ विकोल, टिहरी गढ़वाल की मौत हो गई। जबकि, वीरेंद्र सिंह (36) पुत्र शूरवीर सिंह, दीवान सिंह पंवार (54) पुत्र अव्वल सिंह पंवार निवासी कंडीसौड़ विकोल, टिहरी गढ़वाल व विजय लाल (40) स्व. संतू लाल निवासी धरासू उत्तरकाशी गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया।

सैन्यकर्मी के बंद घर से सोने के आभूषण और 70 हजार की नकदी चोरी

देहरादून, एजेंसी। लेह लद्दाख में तैनात सैन्यकर्मी के बंद घर से सोने के आभूषण और 70 हजार की नकदी चोरी हो गई। घटना के दिन सैन्यकर्मी की पत्नी रिश्तेदारी में गई थीं। तहरीर के आधार पर पुलिस के अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से चोरों की पहचान की जा रही है।

पुलिस को दी तहरीर में बाढ़वाला निवासी डोमा खाम्पा ने बताया कि 12 दिसंबर की सुबह करीब 11.30 बजे वह अपनी बड़ी दीदी के घर चली गईं। शाम को करीब चार बजे वापस लौटीं तो देखा कि घर के दरवाजों के ताले टूटे हुए हैं। लाइट जल रही है। कमरे के भीतर आलमारी का लॉक भी टूटा हुआ था।

उत्तराखंड के आठ छात्र बने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विजेता

देहरादून, एजेंसी। चैंपियंस वर्ल्ड की ओर से गत अक्तूबर और नवंबर में हुई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की अबेकस प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को चंडीगढ़ स्थित पंजाब कला भवन में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उत्तराखंड के आठ छात्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विजेता घोषित किया गया। अक्तूबर में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 16392 और नवंबर में अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में 31 देशों के 26379 छात्रों ने हिस्सा लिया था। प्रांजल गैरोला को पहले सत्र में पहली रैंक, दिव्यांशु साहू को पहले सत्र में दूसरी रैंक, अंकिशा मित्तल को चौथे सत्र में दूसरी रैंक, केएम अंकिशा को पहले सत्र में तीसरी रैंक, मान्या झिकवार को तीसरे सत्र में तीसरी रैंक, अग्रिमा रावत को चौथे सत्र में तीसरी रैंक, अमव सैनी को आठवें टर्म में दूसरी रैंक और हर्षित मेहरा को विशेष श्रेणी में तीसरी रैंक मिली।

अनुशासनहीनता के आरोप में सीएयू के उपाध्यक्ष निलंबित

देहरादून, एजेंसी। क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड (सीएयू) के उपाध्यक्ष व सदस्य धीरज भंडारी को अनुशासनहीनता के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। सीएयू के सचिव महिम वर्मा की ओर से जारी निलंबन पत्र में धीरज भंडारी पर अनुशासनहीनता, नियमों का उल्लंघन और सीएयू की छवि खराब करने का आरोप लगाया गया है।

सीएयू के सचिव महिम वर्मा ने बताया, सीएयू की आठ दिसंबर को संपन्न हुई एपेक्स काउंसिल की बैठक में उपाध्यक्ष व सदस्य धीरज भंडारी पर अनुशासनहीनता, नियमों का उल्लंघन और सीएयू की छवि खराब करने के आरोप लगाए गए थे।

डीएफओ से ग्रामीणों की नोकझोंक : मुआवजा देने की बात से गुस्साए ग्रामीण बोले- हम रुपये देते हैं, आप बाघ को मारो

रामनगर/नैनीताल, एजेंसी। चारा लेने गई रिंगौड़ा गांव की तुलसी देवी को बुधवार को बाघ ने मार डाला। मौके पर डीएफओ पहुंचे। डीएफओ ने कहा कि पीड़ित परिवार को जल्द मुआवजा दिलाने की कार्रवाई की जाएगी। इस पर ग्रामीणों को गुस्सा आ गया। उन्होंने कहा- हम रुपये देते हैं आप बाघ को मारो।

मवेशियों के लिए चारा लेने गई रिंगौड़ा गांव की तुलसी देवी को बुधवार को बाघ ने मार डाला। बुधवार सुबह 11.50 बजे ग्रामीणों ने शव को रिंगौड़ा गांव के बाहर नेशनल हाईवे-309 पर रखकर जाम लगा दिया। जाम लगाने के दौरान ग्रामीण बेहद आक्रोशित नजर आए। ग्रामीणों ने एंबुलेंस के अलावा किसी को भी आने-जाने नहीं दिया। जाम की सूचना पर रामनगर वन प्रभाग के डीएफओ दिगांथ नायक मौके पर पहुंचे। डीएफओ ने ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया और कहा कि पीड़ित परिवार को जल्द से जल्द मुआवजा दिलाने की कार्यवाही की जाएगी। इस पर ग्रामीण और आक्रोशित हो गए।

ग्रामीणों ने कहा कि हम वन विभाग को रुपये देते हैं आप बाघ को मारो। ऐसे में डीएफओ ने नियमानुसार ही कार्यवाही करने की बात कही। इसके बाद काफी देर तक डीएफओ के साथ ग्रामीणों की तीखी नोकझोंक होती रही।

जाम लगाने के दौरान आक्रोशित ग्रामीण गांव में पानी, बिजली और मोबाइल टावर लगाने की मांग करने लगे। इस पर डीएफओ ने शासन स्तर से कार्यवाही करने की बात

कही, लेकिन ग्रामीण नहीं माने। ग्रामीण मौके पर ही सभी मांगों को लेकर लिखित में देने की मांग पर अड़ गए। डीएफओ ने उन्हें समझाने की काफी कोशिश की, वे नहीं माने और डीएफओ को वापस जाने के लिए कह दिया। मौके पर मौजूद तहसीलदार कुलदीप पांडेय, कोतवाल अरुण कुमार सैनी व कॉर्बेट पार्क के वार्डन अमित ग्वासीकोटी ने भी ग्रामीणो को समझाने की कोशिश की, लेकिन ग्रामीणों ने किसी की नहीं सुनी।

आक्रोशित ग्रामीण किसी भी कीमत पर अपनी मांगे मंगवाना चाहते थे, ऐसे में विधायक दीवान सिंह बिष्ट को मौके पर बुलाने की मांग करने लगे। नैनीताल में हो रही एक बैठक में शामिल होने की वजह से विधायक नहीं पहुंचे। विधायक प्रतिनिधि के रूप में नगर मंडल अध्यक्ष मदन जोशी दोपहर 2:30 बजे मौके पर पहुंचे। विधायक प्रतिनिधि से भी ग्रामीणों की तीखी नोकझोंक हुई और उनसे भी ग्रामीणों ने मूलभूत सुविधा दिलवाने की मांग की। विधायक प्रतिनिधि ने बताया कि ग्रामीणों को विधायक निधि से पांच लाख रुपये से पानी की टंकी बनवाने, मृतक महिला के एक बच्चे की शिक्षा देने का आश्वासन दिया गया। लिखित आश्वासन पत्र में तहसीलदार, डीएफओ, कॉर्बेट पार्क के वार्डन व विधायक प्रतिनिधि ने हस्ताक्षर किए। दोपहर 3:10 बजे ग्रामीणों ने जाम खोला, जिसके बाद राहगीरों ने राहत की सांस ली।

बाघ का शिकार बनीं तुलसी देवी के तीन बेटों में मोहन कड़ाकोटी धनगड़ी गेट पर बीट वॉचर हैं। दो बेटे महेश व हरीश मेहनत मजदूरी करते हैं। राइंका ढिकुली में पढ़ने वाली वृद्धा की पोती तनुजा ने जैसे ही अपनी दादी का मृत शरीर देखा तो वह बेहोश हो गई। पूरे घटनाक्रम के दौरान वृद्धा की पोती दो-तीन बार बेहोश हुई। ग्रामीण बार-बार किसी तरह उसे होश में लाते।

पर्यटकों की ग्रामीणों से हुई नोकझोंक

बाघ के हमले में वृद्धा की मौत से गुस्साए ग्रामीणों की ओर से लगाए गए जाम के कारण सड़क के दोनों ओर वाहनों की कतारें लग गईं। परेशानी के चलते दोपहर 2:30 बजे के आसपास ग्रामीणों से पर्यटक भिड़ गए और नियम संगत मांग करने को कहने लगे। इस दौरान ग्रामीणों से उनकी तीखी नोकझोंक हुई। तीन घंटे तक हाईवे पर जाम लगे रहने से सड़क के दोनों तरफ तीन से चार किलोमीटर लंबा जाम लग गया था। जब जाम खुला तो पर्यटकों के साथ राहगीरों ने राहत की सांस ली।

कैंसर के इंजेक्शन में क्रिस्टल से जांच के घेरे में दवा कंपनी, एडवर्स ड्रग रिएक्शन सेल करेगी जांच

देहरादून, एजेंसी। वर्ष 2023 के मार्च महीने में कैंसर रोग में इस्तेमाल होने वाली डॉक्सोरूबिसिन नाम के इंजेक्शन की आपूर्ति की गई थी। इसमें क्रिस्टल मिलने के बाद अस्पताल प्रबंधन ने दवाई के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी है।

दून अस्पताल में कैंसर रोग के उपचार में इस्तेमाल होने वाले एक इंजेक्शन में क्रिस्टल मिलने के बाद संबंधित दवा को जांच के लिए लैब में भेजा गया है। इंजेक्शन में गड़बड़ी मिलने पर दवा कंपनी को अस्पताल की काली सूची में शामिल किया जाएगा। इसके लिए चिकित्सा शिक्षा निदेशक की ओर से दून अस्पताल प्रबंधन को कड़े निर्देश दिए गए हैं।

दून अस्पताल में वर्ष 2023 के मार्च महीने में कैंसर रोग में इस्तेमाल होने वाली डॉक्सोरूबिसिन नाम के इंजेक्शन की आपूर्ति की गई थी। इसमें क्रिस्टल मिलने के बाद अस्पताल प्रबंधन ने दवाई के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी है। इंजेक्शन के

सैंपल को जांच के लिए लैब में भेजा गया है।

रिपोर्ट में किसी भी तरह की अनियमितताएं मिलने पर अस्पताल दवा कंपनी का टेंडर खत्म कर हमेशा के लिए संबंध विच्छेद कर लेगी। वर्तमान में एडवर्स ड्रग रिएक्शन की टीम इस पूरे प्रकरण की जांच कर रही है। अस्पताल प्रबंधन के अधिकारी बताते हैं कि दवा कंपनी की ओर से इसी इंजेक्शन के 200 पैकेट की आपूर्ति की गई थी।

इनमें से 127 पैकेट का इस्तेमाल किया जा चुका है। अब शेष पैकेट को इस्तेमाल से बाहर किया गया है। अधिकारियों के मुताबिक जब दवा कंपनी की ओर से इंजेक्शन की आपूर्ति की गई थी, तब दवा कंपनी की गृह जांच रिपोर्ट बिल्कुल सही थी। इसके बाद इंजेक्शन के इस्तेमाल की अनुमति दी गई थी।

अधिकारियों ने बताया कि जिस इंजेक्शन में खराबी पाई गई है, उसकी मैनक्योर ड्रग कंपनी की ओर से आपूर्ति की जाती है। कंपनी की ओर से डॉक्सोरूबिसिन के साथ ही पांच और दवाइयों की आपूर्ति की जाती है। कंपनी के ब्लैक लिस्ट में शामिल होने के बाद सभी दवाइयों की आपूर्ति पर रोक लगाई जाएगी।

अधिकारियों के मुताबिक सैंपल जांच में गड़बड़ी मिलने पर दवा कंपनी का टेंडर खत्म कर नई दवा कंपनी को टेंडर दिया जाएगा। ऐसे में इस प्रक्रिया को पूरा करने में समय भी लग सकता है। इससे कैंसर मरीजों को बाहर से दवाइयां खरादनी पड़ सकती हैं।

तय मानकों का अनुपालन करते हुए सभी दवाइयों के इस्तेमाल के निर्देश दिए गए हैं। खरीदारी के दौरान दवाइयों की सही ढंग से सैंपल जांच कराने का नियम हैं। संबंधित अधिकारी इसे पूरी तरह सुनिश्चित करने के बाद ही दवाइयों को इस्तेमाल में लाएं।

कसारदेवी के जंगल में आग, आबादी क्षेत्र चपेट में आने से बचा

अल्मोड़ा, एजेंसी। कड़ाके की ठंड में भी जंगल आग में धधक रहे हैं। सरियापानी एसडीआरएफ कैंप के पास कसारदेवी जंगल में आग धधक गई। हवा के झोंके से आग तेजी से जंगल में फैलने लगी। देखते ही देखते आग आबादी की तरफ बढ़ने लगी। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची फायर सर्विस ने कड़ी मशकत के बाद ढाई घंटे बाद आग पर काबू पाया। इससे आबादी क्षेत्र चपेट में आने से बच गया।

सरियापानी एसडीआरएफ कैंप के पास कसारदेवी का जंगल आग से सुलगता रहा। मंगलवार की सुबह कसारदेवी के जंगल में आग लग गई। 11.28 बजे फायर सर्विस यूनिट घटनास्थल पर पहुंची। तब तक आग आबादी क्षेत्र की ओर बढ़ रही थी। फायर सर्विस यूनिट ने चार होज पाइप फैलाकर पंपिंग कर तथा एक होज रील फैलाकर आग को बुझाना शुरू किया।

आग के दूर होने के कारण आग को फायर बीटर तथा पेड़ की टहनियों की सहायता से पीट-पीट कर कड़ी मशक्कत से ढाई घंटे बाद बुझाया गया। बताया जा रहा है कि कुछ शरारती तत्व बार-बार जंगल में आग लगा रहे हैं। इससे पूर्व सोमवार की शाम करीब 6.27 बजे जंगल को आग में सुलगता देख किसी ने इसकी सूचना फायर टीम को दी। सूचना के बाद मौके पर पहुंची फायर टीम ने काफी प्रयासों के बाद आग पर काबू पाया। फायर सर्विस टीम में लीडिंग फायरमैन किशन सिंह, फायर सर्विस चालक हरि सिंह, योगेश शर्मा, फायरमैन दीपक सिंह, महिला फायरकर्मी कल्पना, इंदु मेहता, बबीता जोशी आदि शामिल रहे।

भाजपाई के बगीचे में मिले चोरी के गिल्टे- फंसे वन विभाग वाले भी, पूछताछ में खुली अफसरों और कर्मियों की पोल

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। हल्द्वानी के चोरगलिया इलाके के नयागांव कटान में एक भाजपा कार्यकर्ता के बगीचे से वन विभाग की टीम ने लकड़ी के गिल्टे बरामद किए। केस दर्ज कर जांच शुरू की गई तो वन

विभाग के ही कर्मचारी और अधिकारी फंस गए। जानिए पूरा मामला

चोरगलिया इलाके के नयागांव कटान में एक भाजपा कार्यकर्ता के बगीचे से वन विभाग की टीम ने लकड़ी के 10 गिल्टे बरामद किए। केस दर्ज कर जांच शुरू की गई तो वन विभाग के ही कर्मचारी और अधिकारी फंस गए। कार्यकर्ता ने पोल खोली कि डिप्टी रेंजर और वन रक्षक उसके यहां सागौन की यह कटी हुई लकड़ी रख गए थे। प्रारंभिक जांच में सत्यता नजर आने पर डीएफओ ने एक वन रक्षक को निलंबित कर दिया।

चोरगलिया निवासी प्रकाश चंद्र बेलवाल ने पास के ही नयागांव कटान में अपना बगीचा बना रखा है। वहां मजदूर ही रहते हैं। भाजपा से जुड़े प्रकाश चंद्र एक किसान सेवा सहकारी समिति के निवर्तमान अध्यक्ष भी हैं। मंगलवार शाम वह अपने बगीचे में मौजूद थे। तभी जौलसाजा रेंजर सुनील शर्मा और नंधौर रेंजर भूपाल सिंह मेहता के नेतृत्व में टीम वहां पहुंची। टीम को खबर मिली थी कि प्रकाश चंद्र ने अपने बगीचे में चोरी से कटी गई लकड़ी छिपा रखी है।

टीम ने वहां पहुंचकर छानबीन की तो सागौन के 10 गिल्टे ढके हुए मिल गए। देखने से लगा कि यह लकड़ी पांच महीने पहले कटी गई है।

भवाली-अल्मोड़ा एनएच में कबाड़ से भरे कैंटर में लगी आग, मची खलबली; ड्राइवर और सवार लोगों ने बचाई जान

नैनीताल, एजेंसी। भवाली-अल्मोड़ा एनएच में बुधवार तड़के चार बजे रामगाड़ पुल के पास कैंटर में आग लगने से हड़कंप मच गया। गनीमत रही आग लगते ही वाहन में सवार तीन लोग सुरक्षित बाहर निकल आए। मौके पर पहुंची पुलिस टीम और दमकल वाहन ने आग पर काबू पाया।

भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग में बुधवार तड़के चार बजे रामगाड़ पुल के पास कैंटर में आग लगने से हड़कंप मच गया। गनीमत रही आग लगते ही वाहन में सवार तीन लोग सुरक्षित बाहर निकल आए। आग लगने की सूचना मिलते ही खैरना, भवाली कोतवाली और कैंची से पहुंची पुलिस फोर्स ने मौके पर पहुंचकर भीमताल और अल्मोड़ा से पहुंचे दमकल वाहन ने कैंटर में लगी आग बुझाई। सुबह 6 बजे बाद सड़क पर वाहनों की

आवाजाही शुरु होने से यात्रियों को राहत मिली।

अल्मोड़ा के दौलाघट-रानीखेत होते हुए हल्द्वानी की ओर कबाड़ ले जा रहा कैंटर बुधवार के तड़के 4 बजे जैसे ही रामगाड़ पुल के पास पहुंचते ही इंजन की वायर शार्ट हो जाने से बी6 कैंटर ने अचानक आग पकड़ ली। आग लगने से उसमे रखा कबाड़ का सामान जलकर राख हो गया। गनीमत रही चालक जीवन वर्मा पुत्र सुरेश वर्मा निवासी ऊंचाकोट बेतालघाट और अमन पुत्र इरशाद और अब्दुल वाहन से सुरक्षित बाहर निकल आए।

खैरना पुलिस के एसआई प्रकाश सिंह मेहरा और भवाली और कैंची से पहुंची पुलिस टीम ने मौके पर दमकल कर्मियों की मदद से आग पर काबू पाया गया। पुलिस ने हादसे की सूचना वाहन स्वामी को दी गई। दो घंटे बाद सड़क में यातायात सुचारु होने पर यात्री हल्द्वानी ,अल्मोड़ा ,रानीखेत की तरफ रवाना हुए।

नए साल में प्रदेश में 38वें राष्ट्रीय खेल, खिलाड़ियों के साथ ही विभाग और खेल संघों की भी परीक्षा

देहरादून, एजेंसी। उत्तराखंड को 38वें राष्ट्रीय खेलों का आवंटन 2014 में हुआ था। खेलों के आवंटन के बाद वर्ष 2018 में खेलों का आयोजन प्रस्तावित था, लेकिन खेल अवस्थापना सुविधाओं का विकास हो या फिर खिलाड़ियों के लिए कैंप लगाए जाने हों यह सभी काम अब अंतिम समय पर किए जा रहे हैं।

नए साल में उत्तराखंड में होने वाले 38वें राष्ट्रीय खेल राज्य के खिलाड़ियों के साथ ही विभाग और खेल संघों के लिए भी परीक्षा हैं, जिन्हें राज्य को पदक तालिका में बेहतर स्थान दिलाने के लिए 12 से 13 खेलों के अलावा अन्य खेलों में भी प्रदर्शन सुधारना होगा।

उत्तराखंड ने पिछले तीन राष्ट्रीय खेलों में जिन स्पर्धाओं में पदक जीते हैं, उनमें एथलेटिक्स, जूडो,

मुक्केबाजी, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, कुश्ती, ताइक्वांडो, कैनोइंग और कयाकिंग, योगासन, वुसू, जिम्नास्टिक और रोइंग आदि शामिल हैं। इन 12 से 13 खेलों को छोड़ दिया जाए तो अधिकतर में प्रदेश का पिछले तीन राष्ट्रीय खेलों कोई खास प्रदर्शन नहीं रहा।

वे चाहे वर्ष 2023 में गोवा में आयोजित 37वें राष्ट्रीय खेल हों या फिर गुजरात में 2022 में एवं वर्ष 2015 में केरल में हुए राष्ट्रीय खेल। अधिकतर अन्य खेलों में उत्तराखंड ने कोई पदक नहीं जीता। यह हाल तब है, जबकि राज्य में 40 से अधिक खेल संघ हैं। जिनमें अध्यक्ष और महासचिव के पद पर वर्षों से कई रसूखदार लोग काबिज हैं।

खेल विभाग के अफसरों के मुताबिक, राज्य के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन कर राज्य का नाम रोशन करें, इसके लिए विभाग तो प्रयासरत है, समय-समय पर खेल संगठनों को भी तमाम सुविधाएं दी जाती हैं। खिलाड़ियों के लिए भोजन, यात्रा भत्ते से लेकर किट तक उपलब्ध कराए जाते हैं। हालांकि, खेल संगठनों का कहना है कि उत्तराखंड को 38वें राष्ट्रीय खेलों का आवंटन 2014 में हुआ था। खेलों के आवंटन के बाद वर्ष 2018 में खेलों का आयोजन प्रस्तावित था, लेकिन खेल अवस्थापना सुविधाओं का विकास हो या फिर खिलाड़ियों के लिए कैंप लगाए जाने हों यह सभी काम अब अंतिम समय पर किए जा रहे हैं।

पेंट के गोदाम में लगी भीषण आग, मची अफरातफरी; लाखों का सामान हुआ खाक

रामनगर, एजेंसी। रानीखेत रोड स्थित पेंट के गोदाम में दोपहर में भीषण अग्निकांड हो गया। आग इतनी विकराल थी कि आसपास के दुकानदार भी दहशत में आ गए है। हल्द्वानी, रामनगर, काशीपुर के छह से अधिक दमकल वाहन बुलाए गए। अग्निकांड में लाखों रुपये का सामान आग की भेंट चढ़ गया। आग को काबू करने के लिए फायर विभाग की टीम रात आठ बजे तक जुटी रही।

कोसी रोड मुख्य बाजार के समीप व्यापारी का तीन मंजिला गोदाम है। जिसमें पीवीसी पाइप के साथ ही भारी मात्रा में पेंट्स एवं अन्य सामग्री रखी हुई थी। दोपहर डेढ़ बजे गोदाम के पहली मंजिल के भीतर आग लगी।

इसके बाद लपटें इतनी विकराल हुई कि आग दूसरे भवन फिर तीसरे भवन के भीतर तक पहुंच गई। गोदाम के भीतर से काला धुआं निकलता रहा। घटना के बाद आसपास के दुकानदार भी दहशत में आ गए। आग बुझाने के लिए अफरातफरी का माहौल बना रहा। आसपास भवनों में रह रहे लोग भी बाहर निकल गए। सूचना पर अग्निशमन अधिकारी उमेश परगाई टीम के साथ दो दमकल वाहन लेकर पहुंचे। सीओ भूपेंद्र सिंह भंडारी, एसएसआई मो. युनूस समेत पुलिसकर्मी भी पहुंच गए। आग की भयावता देख नैनीताल से जिला अग्निशमन अधिकारी नरेद्र सिंह भी पहुंच गए। बेकाबू होती आग को बुझाने के लिए हल्द्वानी व काशीपुर से भी दो दमकल वाहन बुलाए गए। पानी की आपूर्ति के लिए निजी टैंकर भी बुलाए गए। आग को बुझाने के लिए छह टीम लगी हुई है। अग्निशमन अधिकारी उमेश परगाई ने बताया कि आग बुझाई जा रही है।

संक्षिप्त खबरें

सरकार जानबूझकर सदन में कैग रिपोर्ट नहीं रख रही : गुप्ता

नई दिल्ली, । विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर कैग रिपोर्ट जारी करने की मांग को लेकर भाजपा विधायकों ने विधानसभा प्रांगण में धरना दिया। नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता के नेतृत्व में विधायकों ने कहा कि सरकार जानबूझकर कैग रिपोर्ट विधानसभा के पटल पर नहीं रख रही है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि आम आदमी पार्टी अपना भ्रष्टाचार छुपाना चाहती है। उसे डर है कि कैग रिपोर्ट सदन के पटल पर आने से भ्रष्टाचार उजागर हो जाएगा। भाजपा विधायकों ने कहा कि यह तानाशाही के तरीके से सदन चलाने का प्रयास है। भाजपा विधायकों को जनहित के मुद्दे पर चर्चा नहीं करने दिया जाता है। हम लगातार कैग रिपोर्ट रखने की मांग कर रहे हैं, लेकिन विधायकों को मार्शल आउट करा दिया जाता है। गुप्ता ने कहा कि भाजपा विधायकों ने मजबूरी में उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल की थी। उपराज्यपाल के लिखने के बाद भी सरकार विशेष सत्र बुलाकर कैग रिपोर्ट नहीं रख रही है। हमे दोबारा उच्च न्यायालय की शरण में जाना होगा। भाजपा विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष के नाम एक ज्ञापन देकर विशेष सत्र बुलाने की मांग की। प्रदर्शन में भाजपा विधायक मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अभय वर्मा, अजय महावर, जितेंद्र महाजन और अनिल वाजपेयी भी उपस्थित थे।

लूटपाट करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली, । पश्चिमी दिल्ली जिला पुलिस की एएटीएस ने लूटपाट करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान आशु तिवारी, करण, प्रेम और करण के रूप में हुई है। इनके पास से दो स्कूटी बरामद हुई है। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त सृष्टि पांडे ने बताया कि चार दिसंबर को पंजाबी बाग इलाके में लूट की वारदात हुई थी। वारदात में इस्तेमाल स्कूटी की पहचान कर आरोपियों तक पुलिस पहुंची।

अवैध हथियार के साथ नाबालिग पकड़ा

नई दिल्ली, । गांधी नगर थाना पुलिस ने 18 दिसंबर को अवैध हथियार के साथ एक नाबालिग को पकड़ा है। आरोपी नाबालिग के पास से एक तमंचा और तीन जिंदा कारतूस बरामद हुए हैं। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा में केस दर्ज किया गया है। पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम ने बताया कि गांधी नगर थाने में तैनात हेडकांस्टेबल नीरज धामा इलाके में गश्त पर थे। इस दौरान उन्होंने आरोपी को संदिग्ध अवस्था में देखा। तलाशी लेने पर उसके पास से अवैध हथियार मिले।

सीएजी रिपोर्टः स्पीकर रामनिवास गोयल से मिलेंगे बीजेपी विधायक, विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने की मांग

नई दिल्ली, । दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले सीएजी (सीएजी) की रिपोर्ट विधानसभा पटेल पर रखने का मुद्दा गर्मा रहा है. हाई कोर्ट के आदेश के बाद दिल्ली सरकार ने सीएजी की रिपोर्ट उपराज्यपाल को सौंप दी है. मगर जब तक यह विधानसभा पटल पर नहीं रखी जातीा, तब तक यह सार्वजनिक नहीं हो सकती. इसलिए विपक्ष लगातार दबाव बना रहा है कि यह रिपोर्ट विधानसभा का सत्र बुलाकर सदन में पेश की जाए. इस संबंध में कई पत्राचार के बाद आज बीजेपी के सभी विधायक विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल से मुलाकात करेंगे. विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता का कहना है कि सरकार सीएजी की 14 रिपोर्ट पेश करने से क्यों भाग रही है? ये समझ में नहीं आता है. एलजी ने सीएम आतिशी को लिखा है पत्र उन्होंने कहा ह्यउपराज्यपाल वीके सक्सेना ने भी विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने को लेकर मुख्यमंत्री आतिशी को पत्र लिखा है. ताकि सीएजी रिपोर्ट सदन में पेश की जा सके. रिपोर्ट पेश करने के लिए बीजेपी लगातार मांग कर रही है. विधानसभा के सितंबर, नवंबर और दिसंबर में बुलाए गए सत्र में विपक्ष लगातार सरकार पर सीएजी की रिपोर्ट प्रस्तुत करने को लेकर दबाव बनाता रहा. लेकिन सदन में जब बीजेपी विधायक अपनी बात शुरू करते थे, तब उनका माइक बंद किया कर दिया जाता था.ह्न जानबूझकर दबाई गई सीएजी रिपोर्ट्स- विजेंद्र गुप्ता विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि दिल्ली की जनता को यह जानने का पूरा हक है कि उनके पैसे का उपयोग कैसे हुआ. सीएजी रिपोर्ट को दबाने का यह जानबूझकर किया गया प्रयास वित्तीय कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार को छिपाने की साजिश है. आम आदमी पार्टी सरकार ने सीएजी की अहम रिपोर्ट को 497 दिनों तक जानबूझकर दबाए रखा और केवल दिल्ली हाई कोर्ट के संभावित प्रतिकूल आदेशों के दबाव में इन्हें प्रस्तुत किया. इन रिपोर्ट को आखिरी क्षण में प्रस्तुत करना साफ दिखाता है कि सरकार जवाबदेही से बचने और वित्तीय गड़बड़ियों को छिपाने के प्रयास में लगी थी. उपराज्यपाल सचिवालय ने शनिवार को दिल्ली सरकार से 497 दिनों से लंबित 14 सीएजी रिपोर्ट की सूची जारी करते बताया था कि आप सरकार की वित्त मंत्री व मुख्यमंत्री आतिशी ने सचिवालय में प्रस्तुत किया गया है.

बल्लीमारान विधानसभा के अलग-अलग कटरों में 6.5 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से विकास कार्य किए जा रहे हैं- इमरान हुसैन

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के खाद्य-आपूर्ति मंत्री और बल्लीमारान विधायक इमरान हुसैन ने डीयूएसआईबी, एमसीडी और दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों और इंजीनियरों के साथ बैठक कर बल्लीमारान विधानसभा में चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। साथ ही बल्लीमारान विधानसभा से संबंधित एमएलएएलएडी स्कीम के तहत विभिन्न प्रोजेक्ट्स की भी जानकारी ली। बैठक के दौरान, इमरान हुसैन ने डीयूएसआईबी द्वारा किए जा रहे बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न कटरों में चल रही परियोजनाओं और विकास कार्यों की समीक्षा की। मंत्री इमरान हुसैन ने बताया कि बल्लीमारान विधानसभा के अलग-अलग कटरों में 6.5 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से विकास कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। मंत्री इमरान हुसैन ने डीयूएसआईबी अधिकारियों को बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र के सभी कटरों का फिजिकल निरीक्षण करने का भी निर्देश दिया ताकि सभी स्थानों पर विकास कार्य तेजी से किए जा सकें। मंत्री ने डीयूएसआईबी अधिकारियों को क्षेत्र के अलग-अलग कटरों में रहने वाले लोगों को सभी आवश्यक बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने का भी निर्देश दिया। खाद्य-आपूर्ति मंत्री ने बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र में एमएलएएलएडी फण्ड के तहत 95 सड़कों और गलियों में आरएमसी और ड्रेनेज सिस्टम सुधार कार्यों का भी जायजा लिया जो लगभग 11.5 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से किये जा रहे हैं। बैठक के दौरान एमसीडी के इंजीनियरों ने मंत्री को अवगत कराया कि सभी स्थानों पर टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और कई साइटों पर सुधार कार्य पूरा भी हो चुका है। बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र की घनी आबादी और विकास कार्यों के महत्व को देखते हुए मंत्री (खाद्य-आपूर्ति) ने एमसीडी इंजीनियरों को निर्धारित समय में काम तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए। मंत्री इमरान हुसैन ने दिल्ली जल बोर्ड द्वारा किए जा रहे पानी की पाइपलाइन बदलने के काम की भी समीक्षा की और अधिकारियों को क्षेत्र में पानी की जरूरतों को देखते हुए काम को तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए। मंत्री ने बताया कि 1.5 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से पानी की पाइपलाइन बदलने और ड्रेनेज के रखरखाव का काम भी किया जा रहा है। मंत्री ने डीजेबी अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे रामनगर, कुरैश नगर से सटे इलाकों में क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों के स्थान पर नई पानी की पाइपलाइनें बिछाएं ताकि स्थानीय निवासियों को पानी की समुचित आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके। मंत्री ने डीजेबी अधिकारियों को आरडब्ल्यूए के परामर्श से क्षेत्र में क्षतिग्रस्त पाइपलाइन और जल निकासी के रखरखाव का काम करने का भी निर्देश दिया। मंत्री ने दिल्ली जल बोर्ड को एसी-22 बल्लीमारान में नालियों की पूरी तरह से सफाई और गाद निकालने के लिए सुपर सकर मशीनें लगाने का निर्देश दिया। मंत्री ने क्षेत्र में जल भंडारों को भी साफ करने के भी निर्देश दिए ताकि निवासियों को नियमित रूप से स्वच्छ पानी मिल सके। खाद्य-आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन ने बताया कि अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र में हाई मास्ट लाइट, कटरा में विकास कार्य, बिजली के तारों को सुव्यवस्थित करने, सड़क-गलियों निर्माण एवं मरम्मत, पानी की पाइपलाइन ,सीवर लाइन कार्य, बरात घर, कम्युनिटी सेंटर एवं चौपाल निर्माण आदि विकास कार्य तेजी से से किए जा रहे हैं।

बाबा साहब का अपमान करने पर भाजपा के खिलाफ आप का पूरी दिल्ली में हल्लाबोल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब डॉ अंबेडकर का अपमान करने पर आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को भाजपा के खिलाफ पूरी दिल्ली में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने जंगपुरा, मंत्री गोपाल राय ने बाबरपुर, मंत्री सौरभ भारद्वाज ने ग्रेटर कैलाश, विधायक दुर्गेश पाठक ने राजेंद्र नगर और विधायक कुलदीप कुमार ने कोंडली समेत सभी 70 विधानसभाओं में पार्टी कार्यकताओं ने प्रदर्शन किया। इस दौरान मनीष सिसोदिया ने देश को संविधान चलाएगा, आपकी नफरत की राजनीति नहीं। जिन्हें अंबेडकर का नाम और उनके विचार चुभते हैं, वे इस देश को छोड़ सकते हैं। अमित शाह जी, आप देश छोड़ सकते हैं। बड़ा जाति से नहीं, शिक्षा और विचारों से बनते हैं। आपके शब्द दलित समाज के प्रति आपकी घृणित मानसिकता को उजागर करते हैं। देश आपको बाबा साहब के अपमान के लिए कभी माफ नहीं करेगा। मनीष सिसोदिया ने कहा कि मंगलवार को देश के गृह मंत्री और भाजपा के नेता अमित शाह ने बाबा साहब का अपमान किया। उन्होंने एक तरह से उन सब लोगों का, जो बाबा साहब का नाम लेते हैं, उनका संसद में मजाक उड़ाया। अमित शाह ने कहा कि आजकल अंबेडकर-अंबेडकर चिल्लाना फैशन हो गया है, जितना नाम अंबेडकर का लेते हैं उतना नाम भगवान का लिया होता तो सात जन्मों का स्वर्ग मिल जाता। यह बाबा साहब का अपमान है। क्यों? क्योंकि मैं बाबा साहब का नाम लेता हूं। मैं बाबा साहब का नाम इसलिए लेता हूं क्योंकि बाबा साहब ने कहा कि सारे बच्चों को शिक्षा देनी चाहिए और बाबा साहब ने कहा कि जिस-जिस को शिक्षा मिल जाएगी, वह शेर के बच्चे की तरह दहाड़ेगा। अगर बाबा साहब ने यह कहा कि शिक्षा, शेरनी का वह दूध है जो पिएगा वो दहाड़ेगा, तब मेरे जैसा कोई नेता खड़े होकर कहता है कि हम शिक्षा-शिक्षा करेंगे, अंबेडकर-अंबेडकर करेंगे तो अमित शाह को दिक्कत हो रही है? अमित शाह को अंबेडकर के नाम से दिक्कत नहीं हो रही है, बल्कि उन्हें इस बात से दिक्कत हो रही है कि बाबा साहब ने कहा था कि हर धर्म और जाति के बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए। अमित शाह को बाबा साहब के इस बात से दिक्कत हो रही है कि उन्होंने कहा था कि हर गरीब, हर अमीर के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए। मनीष सिसोदिया ने कहा कि मैं अमित शाह से कहना चाहता हूं कि वह बाबा साहब का दिया हुआ संविधान है कि आज यहां हर धर्म और जाति के लोग मिलकर खड़े हैं। अगर बाबा साहब ने संविधान नहीं दिया होता तो हो सकता है कि लोग जातियों में बंटे होते। मैं एक खबर देख रहा था कि किसी गांव में एक दलित दूल्हे को घोड़ी पर चढ़कर नहीं जाने दिया गया। क्योंकि कुछ लोग अपने आप को बड़ी जाति का मानते हैं और कुछ लोगों को छोटी जाति का मानते हैं। तो बड़ी जाति के लोग छोटी जाति के लोगों से कहते हैं कि तुम तो छोटी जाति के हो, घोड़ी पर चढ़कर कैसे जा सकते हो, तुम्हारी बारात घोड़े पर चढ़कर नहीं निकलेगी। अभी मैं अखबार में पढ़ रहा था कि दो थानों की पुलिस लगाई गई। वो दो थानों की पुलिस इसलिए लगाई गई क्योंकि बाबा साहब ने इस देश में संविधान बनाकर दिया कि किसी के साथ भी भेदभाव नहीं होगा। सबकी जातियां समान हैं। कोई छोटी-बड़ी जाति नहीं है। मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा वाले बाबा साहब से इसलिए चिढ़ते हैं क्योंकि उन्होंने जाति खत्म करने की बात की। उन्होंने सभी को पढ़ाने की बात की। उन्होंने हिंदुस्तान की एकता और तरक्की की बात की।

कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने आप सरकार के बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस का दौरा किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली सरकार की शिक्षा क्रांति को वैश्विक स्तर पर सराहना मिल रही है। इस श्रृंखला में गुरुवार को कैम्ब्रिज के मेयर बैजू थिट्टाला ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस (एएसओएसई), एंड्रयूज गंज का दौरा किया। इस मौके पर दिल्ली कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष वारीश प्रताप भी मौजूद रहे। परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स स्पेशलाइजेशन के इस स्कूल में स्टूडेंट्स के म्यूजिक बैंड ने दोनों का स्वागत किया। इसके बाद दोनों ने स्कूल प्रांगण में लगे फाइन आर्ट्स की प्रदर्शनी का जायजा लिया। विजिट के दौरान मेयर बैजू थिट्टाला ने स्क्लप्चर लैब, म्यूजिक रूम और विजुअल आर्ट्स के लैबों का दौरा किया, स्टूडेंट्स की बनाई कलाकृतियों को देखा और उनसे बातचीत की। विभिन्न भारतीय चित्रकला शैली की चित्रकारी की प्रदर्शनी ने मोहा मेयर का मन विजिट के दौरान कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने सबसे पहले स्कूल प्रांगण में स्टूडेंट द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को देखा। यहाँ छात्रों द्वारा विभिन्न भारतीय चित्रकला शैली के फाइन आर्ट पेंटिंग्स की प्रदर्शनी की गई थी। साथ ही प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा बनाई गई बंगला चित्रकला शैली की पेंटिंग्स और कलाकृतियों ने मेयर का मन मोह लिया। यहाँ छात्रों ने उन्हें अपनी कलाकृतियां और उसके पीछे के संदेश के विषय में भी साझा किया। म्यूजिक लैब में म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट्स की धुन पर थिरके कैम्ब्रिज मेयर, छात्रों का आत्मविश्वास देखकर बोले-भारत का भविष्य सुरक्षित हाथों में स्कूल में म्यूजिक लैब में विजिट के दौरान छात्रों ने कैम्ब्रिज मेयर के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया। छात्रों में विभिन्न म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स की धुन पर पहले वेस्टर्न म्यूजिक और उसके बाद क्लासिकल इंडियन म्यूजिक के जरिए मेयर का मन मोह लिया। यहाँ संगीत की धुन पर मेयर भी खुद को थिरकने से न रोक सके। यहाँ स्टूडेंट्स का आत्मविश्वास और प्रतिभा देखकर कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने कहा कि,स्टूडेंट्स का ये आत्मविश्वास देखकर मुझे भरोसा है कि, भारत का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। म्यूजिक लैब के बाद मेयर ने फाइन आर्ट्स के लैबों का दौरा किया, स्टूडेंट्स की बनाई कलाकृतियां देखी। साथ ही स्क्लप्चर लैब में मिट्टी पर स्टूडेंट्स द्वारा बनाई गई महीन कलाकृतियों को भी देखा और स्टूडेंट्स से बातचीत की। इस मौके पर कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने दिल्ली के शिक्षा मॉडल के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त की और एक सर्वांगीण शिक्षा प्रदान करने की प्रतिबद्धता के लिए दिल्ली सरकार की सराहना की। उन्होंने कहा कि, दिल्ली के सरकारी स्कूलों में आए ये बदलाव बहुत सकारात्मक है। यहाँ बच्चों को मिल रही सुविधाएं, शिक्षकों द्वारा पढ़ने-पढ़ाने का इनोवेटिव तरीका अपनाना बहुत ही सराहनीय है। उन्होंने स्टूडेंट्स को प्रेरित करते हुए कहा कि,वो इसी तरह मेहनत करते रहे, अपने स्किल्स के दम पर वो हर मुकाम हासिल करेंगे। विजिट के दौरान कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कैम्ब्रिज मेयर को एएसओएसई में सिखाए जा रहे विभिन्न करिकुलम के बारे में जानकारी प्रदान की।

कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने आप सरकार के बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस का दौरा किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

अंबेडकर का अपमान करने पर गुरुवार को भी भाजपा पर हमलावर रहे। वह मंदिर मार्ग स्थित भगवान बाल्मीकि मंदिर जाकर पूजा-अर्चना की और यहां एक सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बाबा साहब अंबेडकर का अपमान किया है। इसलिए जो बाबा साहब से करे प्यार, वो भाजपा से करे इन्कार। मैं बाबा साहब को अपना आदर्श मानता हूं और उनका अपमान करने वाली भाजपा का हर स्तर पर विरोध करूंगा। अमित शाह ने बाबा साहब को लेकर जो कहा, वह बेहद पीड़ादायक है और मोदी जी का उनका समर्थन करना बाबा साहब के प्रति भाजपा की भावनाओं को बताता है। बाबा साहब हमारे लिए भगवान हैं। हम उनका अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब यह चुनने वक्त आ गया है कि बाबा साहब से प्यार करने वाला भाजपा से प्यार नहीं कर सकता। इस अवसर पर पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन, सांसद संजय सिंह व राघव चड्ढा, मंत्री इमरान हुसैन व मुकेश अहलावत, विधायक दुर्गेश पाठक, राखी बिड़लान और कुलदीप कुमार समेत अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। अमित शाह के कहने के लहजे से लग रहा था कि वह बाबा साहब से कितनी नफरत करते हैं?- केजरीवाल आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि संसद इस देश की सबसे बड़ी पंचायत है। जहां पूरे देश के लोग जाकर बैठते हैं और देश की समस्याओं पर चर्चा करते हैं। मंगलवार की शाम संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बाबा साहब डॉ. अंबेडकर पर एक बयान दिया। उन्होंने कहा कि अंबेडकर-अंबेडकर कहना आजकल एक फैशन हो गया है, इतनी बार अगर भगवान का नाम लोगे तो सात जन्म तक स्वर्ग मिलेगा। यह शब्द अपने आप में बहुत पीड़ादायक थे। यह बाबा साहब अंबेडकर का अपमान करने वाले शब्द थे। जिस लहजे में अमित शाह ने यह कहा, ऐसे लग रहा था कि उनके अंदर बाबा साहब के प्रति भारी नफरत भरी पड़ी है। उनके लहजे से लग रहा था कि वो बाबा साहब अंबेडकर से कितनी नफरत करते हैं। एक बार मुझे लगा कि शायद उनके मुंह से अनायास निकल गया होगा। लेकिन अगले दिन प्रधानमंत्री मोदी ने अमित शाह के बयान का समर्थन किया। मोदी जी अगर कह देते कि मैं इससे सहमत नहीं हूं तो हम मान लेते कि अमित शाह के मुंह से निकल गया होगा। वहीं, बुधवार शाम को अमित शाह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अपनी बात को सही ठहराया। इससे यह पता चलता है कि इन्होंने जानबूझकर सोच-समझकर एक रणनीति के तहत पूरे देश को संदेश देने के लिए कही थी कि बाबा साहब अंबेडकर के लिए उनकी क्या भावना है? पूरी दुनिया में नाम रौशन करने वाले बाबा साहब का भाजपा ने अपमान किया- केजरीवाल अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि मैं अपने आपको बाबा साहब अंबेडकर का केवल प्रशंसक ही नहीं बल्कि उनका भक्त मानता हूं। मैंने पहले भी उनके बारे में बहुत पढ़ा। लेकिन जब मैं जेल गया तो मैंने उनकी जीवनी कई बार पढ़ी। उनका जीवन पढ़ने से बहुत प्रेरणा मिलती है। उन्होंने जितना संघर्ष किया है, ऐसे बहुत कम लोग हैं। एक मामूली सा आदमी संघर्ष करके इतनी ऊंचाईयों पर पहुंच गया कि अमेरिका की यूनिवर्सिटी ने उन्हें पूरी सदी का सबसे बड़ा विद्वान घोषित किया है कि पिछले सौ साल में ऐसा विद्वान नहीं हुआ। उन्होंने पूरी दुनिया में नाम रौशन किया है। ऐसे व्यक्ति का इन लोगों ने अपमान किया। आप सरकार ने दिल्ली-पंजाब में सभी सरकारी कार्यालयों में बाबा साहब और भगत सिंह की तश्वीरें लगाना अनिवार्य किया है- केजरीवाल अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी में हम लोग दो महानुभावों बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह को अपना आदर्श मानते हैं। ऐसा नहीं है कि हम दूसरों को आदर्श नहीं मानते हैं। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस जैसे बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानी हैं, उन सब को भी हम आदर्श मानते हैं। लेकिन हम बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह को सबसे ज्यादा आदर्श मानते हैं। हमने दिल्ली सरकार और पंजाब सरकार में आदेश पारित कर दिया है कि हर दफ्तर के अंदर इन दोनों की तस्वीर लगाई जाएगी। मेरी तस्वीर नहीं लगाई जाती। किसी भी सरकार के दफ्तरों में उसके मुख्यमंत्री की तस्वीर लगती है। केंद्र सरकार के किसी भी दफ्तर में जाओ तो वहां पर मोदी जी और राष्ट्रपति की तस्वीर मिलेगी। दिल्ली सरकार के दफ्तर में अरविंद केजरीवाल या आतिशी की तस्वीर नहीं मिलेगी। वहां पर बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह की तस्वीर मिलेगी। मैं जिस घर में रहता हूं, वहां पर भी बाबा साहब अंबेडकर की तस्वीर लगी है। हम उन्हें इतना मानते हैं। दिल्ली सरकार के सारे स्कूलों के अंदर हमने बाबा साहब के जीवन को पढ़ाना शुरू कर दिया, ताकि हर बच्चे को उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके।

भाजपा ने बाबा साहब अंबेडकर का किया अपमान, जो बाबा साहब से करे प्यार, वो भाजपा से करे इन्कार : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब अंबेडकर का अपमान करने पर गुरुवार को भी भाजपा पर हमलावर रहे। वह मंदिर मार्ग स्थित भगवान बाल्मीकि मंदिर जाकर पूजा-अर्चना की और यहां एक सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बाबा साहब अंबेडकर का अपमान किया है। इसलिए जो बाबा साहब से करे प्यार, वो भाजपा से करे इन्कार। मैं बाबा साहब को अपना आदर्श मानता हूं और उनका अपमान करने वाली भाजपा का हर स्तर पर विरोध करूंगा। अमित शाह ने बाबा साहब को लेकर जो कहा, वह बेहद पीड़ादायक है और मोदी जी का उनका समर्थन करना बाबा साहब के प्रति भाजपा की भावनाओं को बताता है। बाबा साहब हमारे लिए भगवान हैं। हम उनका अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब यह चुनने वक्त आ गया है कि बाबा साहब से प्यार करने वाला भाजपा से प्यार नहीं कर सकता। इस अवसर पर पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन, सांसद संजय सिंह व राघव चड्ढा, मंत्री इमरान हुसैन व मुकेश अहलावत, विधायक दुर्गेश पाठक, राखी बिड़लान और कुलदीप कुमार समेत अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। अमित शाह के कहने के लहजे से लग रहा था कि वह बाबा साहब से कितनी नफरत करते हैं?- केजरीवाल आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि संसद इस देश की सबसे बड़ी पंचायत है। जहां पूरे देश के लोग जाकर बैठते हैं और देश की समस्याओं पर चर्चा करते हैं। मंगलवार की शाम संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बाबा साहब डॉ. अंबेडकर पर एक बयान दिया। उन्होंने कहा कि अंबेडकर-अंबेडकर कहना आजकल एक फैशन हो गया है, इतनी बार अगर भगवान का नाम लोगे तो सात जन्म तक स्वर्ग मिलेगा। यह शब्द अपने आप में बहुत पीड़ादायक थे। यह बाबा साहब अंबेडकर का अपमान करने वाले शब्द थे। जिस लहजे में अमित शाह ने यह कहा, ऐसे लग रहा था कि उनके अंदर बाबा साहब के प्रति भारी नफरत भरी पड़ी है। उनके लहजे से लग रहा था कि वो बाबा साहब अंबेडकर से कितनी नफरत करते हैं। एक बार मुझे लगा कि शायद उनके मुंह से अनायास निकल गया होगा। लेकिन अगले दिन प्रधानमंत्री मोदी ने अमित शाह के बयान का समर्थन किया। मोदी जी अगर कह देते कि मैं इससे सहमत नहीं हूं तो हम मान लेते कि अमित शाह के मुंह से निकल गया होगा। वहीं, बुधवार शाम को अमित शाह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अपनी बात को सही ठहराया। इससे यह पता चलता है कि इन्होंने जानबूझकर सोच-समझकर एक रणनीति के तहत पूरे देश को संदेश देने के लिए कही थी कि बाबा साहब अंबेडकर के लिए उनकी क्या भावना है? पूरी दुनिया में नाम रौशन करने वाले बाबा साहब का भाजपा ने अपमान किया- केजरीवाल अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि मैं अपने आपको बाबा साहब अंबेडकर का केवल प्रशंसक ही नहीं बल्कि उनका भक्त मानता हूं। मैंने पहले भी उनके बारे में बहुत पढ़ा। लेकिन जब मैं जेल गया तो मैंने उनकी जीवनी कई बार पढ़ी। उनका जीवन पढ़ने से बहुत प्रेरणा मिलती है। उन्होंने जितना संघर्ष किया है, ऐसे बहुत कम लोग हैं। एक मामूली सा आदमी संघर्ष करके इतनी ऊंचाईयों पर पहुंच गया कि अमेरिका की यूनिवर्सिटी ने उन्हें पूरी सदी का सबसे बड़ा विद्वान घोषित किया है कि पिछले सौ साल में ऐसा विद्वान नहीं हुआ। उन्होंने पूरी दुनिया में नाम रौशन किया है। ऐसे व्यक्ति का इन लोगों ने अपमान किया।

लोगों की सुविधा के मद्देनजर यमुना विहार बस डिपो से निजामुद्दीन तक बस सेवा शुरू कर दी गई है : गोपाल राय

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के पर्यावरण एवं विकास मंत्री गोपाल राय ने बाबरपुर में विभिन्न विकास कार्यों का उद्घाटन किया। गोपाल राय ने यमुना विहार ,नूर-ए- इलाही ,सुभाष मोहल्ला ,मोहनपुरी और नार्थ घोंडा के काली रोड का उद्घाटन किया। इस अवसर पर गोपाल राय ने कहा कि जब से हमारी सरकार बनी है ,बाबरपुर में लगभग 900 से ज्यादा सड़कों का निर्माण किया जा चूका है। शेष बचे रोड के निर्माण की भी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। उन्होंने कहा कि नूर-ए- इलाही रोड पर स्थित ट्रांसफार्मर को जल्द शिफ्ट किया जाएगा साथ ही लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यमुना विहार बस डिपो से निजामुद्दीन तक की बस सेवा शुरू की गई है। गोपाल राय ने कहा कि हमारी सरकार बनने के बाद यहाँ अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में चौतरफा विकास हुआ है। हमारी सरकार ने दिल्ली में 24 घंटे बिजली की गारंटी दी है। दिल्ली इकलौता राज्य है जहां 24 घंटे बिजली आती है और लगभग 22 लाख लोगों का बिजली का बिल जीरो भी आता है। लोगों को फ्री पानी मिल रहा है। सरकारी अस्पताल में स्वास्थ्य की बेहतर सुविधा मिल रही है। बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल रही है। उन्होंने कहा कि चुनाव जीतने के बाद महिलाओं को एक हजार की जगह 2100 रुपये दिए जाएंगे। साथ ही दिल्ली में 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों का मुफ्त इलाज किया जाएगा। गोपाल राय ने कहा कि यातायात को सुगम बनाने के लिए नूर-ए-इलाही रोड के कोने पर स्थित ट्रांसफार्मर को जल्द शिफ्ट किया जाएगा। इसके लिए बीएसईएस को निर्देश दे दिया गया है। साथ ही इसके लिए पैसा भी दे दिया गया है। यहाँ के पानी की समस्या की भी जल्द निदान किया जाएगा। यहाँ नूर-ए- इलाही के पास कूड़ाघर हुआ करता था जिसे हटाकर यहाँ पर उसी जगह मोहल्ला क्लिनिक खोला गया है तथा कूड़े के निस्तारण के लिए यहाँ कॉम्पेक्टर लगवाया गया है जिससे आस पास के कूड़े को निस्तारण किया जा सके। गोपाल राय ने बताया कि यमुनाविहार बस डिपो से निजामुद्दीन तक की बस सेवा शुरू की गई है। डिपो को धीरे धीरे बंद किया जा रहा था ,हमने लड़ाई लड़ के इस डिपो को चालू करवाया। अब इस डिपो से निजामुद्दीन तक की बस सेवा शुरू है , लोग सुबह से शाम तक यहाँ से निजामुद्दीन तक की बस सेवा का लाभ ले रहे हैं।

भाजपा का जेएनयू मुख्य गेट पर प्रदर्शन, कहा- कांग्रेस ने बाबा साहेब को भारत रत्न भी नहीं दिया

नई दिल्ली, । राज्यसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा दिए गए बयान ने राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है. अमित शाह के बयान के बाद कांग्रेस ने उन्हें आंबेडकर का अपमान करने का आरोप लगाया है. इसके साथ ही, कांग्रेस ने यह भी कहा है कि बीजेपी आंबेडकर के नाम का इस्तेमाल केवल दलित वोट बैंक को साधने के लिए कर रही है. कांग्रेस के आरोपों पर बीजेपी ने त्वरित प्रतिक्रिया दी और कहा कि कांग्रेस ने कभी भी आंबेडकर के योगदान को सही तरह से सम्मानित नहीं किया. बीजेपी के नेताओं ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने आंबेडकर के विचारों को अपने राजनीतिक लाभ के लिए गंभीरता से नहीं लिया. प्रदर्शन का आयोजनः इस विवाद के चलते बीजेपी कार्यकताओं ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के मुख्य गेट पर प्रदर्शन किया. इस प्रदर्शन में कई टॉप बीजेपी नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए, जिनमें लोकसभा सांसद कमलजीत सेहरावत और पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी भी शामिल थे. प्रदर्शनकारी कांग्रेस के खिलाफ नारेबाजी करते हुए आंबेडकर के प्रति कांग्रेस के कथित अपमान की निंदा कर रहे थे. बीजेपी का तर्क यह है कि कांग्रेस ने बाबा साहेब आंबेडकर को भारत रत्न देने से भी कतराया, जबकि इसमें अपने कई बड़े नेताओं को सम्मानित किया. इससे यह संदेश मिलता है कि कांग्रेस ने आंबेडकर के योगदान को कभी भी गंभीरता से नहीं लिया. वहीं कांग्रेस और बीजेपी के बीच यह विवाद अब एक राजनीतिक खेल बन चुका है. दोनों दल अब आंबेडकर समर्थक वोटरों को अपनी ओर खींचने की कोशिशों में लगे हुए हैं

मरे हुए लोगों की संपत्ति को अपना बताकर करोड़ों में करते थे सौदा, द्वारका से तीन जालसाज गिरफ्तार

नई दिल्ली, । दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के द्वारका सेक्टर 6 में मालिक की मौत के बाद दस्तावेजों में जालसाजी करके संपत्ति हड़पने के आरोप में मां-बेटे और उनके एक साथी को गिरफ्तार किया है. अधिकारियों ने गुरुवार को यह जानकारी दी. पुलिस के मुताबिक, आरोपी बेटे सरबजीत सिंह ने अपनी मां राजेंद्र कौर और एक सहयोगी पवनदीप सिंह के साथ द्वारका के सेक्टर 6 में एक संपत्ति के जाली दस्तावेज बनाए और इसे 1 करोड़ 85 लाख रुपये में बेच दिया. पुलिस ने शिकायत मिलने के बाद मामले की जांच शुरू तब मालूम चला कि इन तीनों आरोपियों ने संपत्ति मालिक की मौत के बाद 2023 में उनकी ये संपत्ति सनी यादव नाम के व्यक्ति को बेच दी है. पुलिस ने कहा कि मालिक के कोई संतान नहीं थी और उसकी पत्नी की भी 2019 में मृत्यु हो गई थी. पुलिस ने आरोपी सरबजीत सिंह को गिरफ्तार किया जिसने पूछताछ के दौरान इस मामले में अपनी संलिप्तता स्वीकार की. उसने खुलासा किया कि पवनदीप सिंह उर्फ प्रिंस इस मामले का मास्टरमाइंड था. पुलिस ने बताया कि प्रिंस ने अपने दोस्त सरबजीत सिंह के साथ मिलकर डी-501, बधवार अपार्टमेंट, सेक्टर 6, द्वारका के दस्तावेजों में आरोपी सरबजीत की मां राजेंद्र कौर के नाम से जालसाजी की. दस्तावेजों में जालसाजी करने के बाद उन्होंने इस मकान को सनी यादव नामक व्यक्ति को 1 करोड़ 85 लाख रुपये में बेच दिया. पुलिस के अनुसार पवनदीप सिंह को हिमाचल प्रदेश से गिरफ्तार किया गया. उसे पहले भी एक हत्या के मामले में गिरफ्तार किया जा चुका है ।
इसके बाद वह अपने कुछ साथियों के संपर्क में आया और उनसे उसे खाली प्लॉट और फ्लैट के दस्तावेजों में जालसाजी कर उन्हें बेचने का आइडिया मिला, ताकि आसानी से पैसा कमाया जा सके. सरबजीत सिंह की मां राजेंद्र कौर अपने बेटे की गिरफ्तारी के बाद से लापता थी. इसके बाद द्वारका कोर्ट ने उसे भगोड़ा घोषित कर दिया. राजेंद्र कौर को संत नगर एक्सटेंशन से गिरफ्तार किया गया ।
जिसके बाद यह मामला खत्म हो गया. पुलिस के अनुसार पवनदीप सिंह उर्फ प्रिंस ने सरबजीत के साथ मिलकर उसे लालच दिया कि अगर वह उसके नाम पर दस्तावेज बनाने दे तो वे उसे मोटी रकम देंगे.

आंबेडकर आधुनिक भारत के भगवान, उनका अपमान नहीं सहेंगे : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी आंबेडकर को लेकर संसद में दिए गए बयान पर गुरुवार को भी हमलावर रही। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने नई दिल्ली स्थित वाल्मिकी मंदिर पहुंचकर पूजा की। वहां आयोजित सभा में उन्होंने कहा कि बाबा साहब आंबेडकर आधुनिक भारत के भगवान हैं। उनका अपमान करने वाली भाजपा का हम हर स्तर पर विरोध करेंगे। वाल्मिकी मंदिर में पूजा के बाद आयोजित सभा में केजरीवाल ने कहा कि संसद इस देश की सबसे बड़ी पंचायत है। यहां पूरे देश से जनप्रतिनिधि बैठते हैं और देश की समस्याओं पर चर्चा करते हैं। उसी संसद में संविधान निर्माता बाबा साहब आंबेडकर के लिए दिया गया बयान पीड़ादायक है। केजरीवाल ने कहा कि मैं खुद को बाबा साहब का प्रशंसक ही नहीं बल्कि उनका भक्त मानता हूं। मैंने पहले भी उनके बारे में बहुत पढ़ा है, लेकिन जब मैं जेल गया तो मैंने उनकी जीवनी कई बार पढ़ी। उन्होंने देश के शोषितों, वंचितों को अधिकार दिया। संविधान में उनके अधिकार तय किए। ऐसे व्यक्ति का अपमान किया गया है। हमने बाबा साहब के सम्मान में उनकी तस्वीर सरकारी कार्यालयों में लगाना अनिवार्य

किया है। दिल्ली सरकार के सारे स्कूलों के अंदर हमने बाबा साहब के जीवन को पढ़ाना शुरू कर दिया ताकि हर बच्चे को उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके। उनसे प्रभावित होकर हमने शिक्षा को महत्व दिया है। झुग्गियों में जाना भाजपा की मजबूरी केजरीवाल ने दिल्ली भाजपा द्वारा झुग्गी प्रवास पर भी हमला बोला। उन्होंने कहा कि अगर बाबा साहब ने वोट का अधिकार नहीं दिया होता तो ये भाजपा वाले आज झुग्गियों में नहीं जाते। भाजपा वाले का झुग्गियों में जाकर रहना मजबूरी है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेता सिर्फ वोट के लिए दलित के यहां भोजन करने का दिखावा करते हैं। ये उनका सम्मान या चिंता नहीं बल्कि वोट के लिए करते हैं। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि भाजपा बाबा साहब का अपमान कर रही है। बाबा साहब के संविधान को तार-तार कर रही है। इन्होंने हमेशा आरक्षण, संविधान और दलितों को दिए जाने वाले अधिकारों का विरोध किया है। जो आज बाबा साहब का अपमान कर रहे हैं, दिल्ली के लोग उन्हें जवाब देंगे। दिल्लीवाले इस अपमान का बदला आने वाले चुनाव में लेंगे। पूर्व सीएम ने लोगों को शपथ दिलाई अरविंद केजरीवाल ने लोगों को शपथ दिलाई कि भाजपा ने हमेशा बाबा साहब और उनके द्वारा लिखे गए संविधान का अपमान किया है। संसद में भाजपा ने बाबा साहब का घोर अपमान किया है। मैं बाबा साहब आंबेडकर जी को अपना आदर्श मानता हूं और इसीलिए शपथ लेता हूं कि मैं हर स्तर पर भाजपा का विरोध करूंगा। इस शपथ पर घर-घर जाकर लोगों से हस्ताक्षर करवाना है। केजरीवाल ने इस मौके पर नारा दिया जो बाबा साहब से करे प्यार, वो भाजपा से करे इन्कार।

जब हमारी माताएं-बहनें आर्थिक रूप से मजबूत होंगी, तब उन्हें अपने आप मान-सम्मान मिलेगा- दुर्गेश पाठक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक दुर्गेश पाठक ने गुरुवार को राजेंद्र नगर विधानसभा में मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना को लेकर डोर-टू-डोर कैंपेन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस योजना को लेकर महिलाओं में भारी उत्साह है। लोग कह रहे हैं कि पहली बार किसी सरकार ने पहले महिलाओं की बस यात्रा मुफ्त की और अब उनके उत्थान के लिए 2100 रुपए महीना देने जा रही है। महिलाओं का कहना है कि इससे उन्हें घर चलाने में बहुत मदद मिलेगी और अच्छी तरह से अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाएंगी। जब हमारी माताएं-बहनें आर्थिक रूप से मजबूत होंगी, तब उन्हें अपने आप मान-सम्मान मिलेगा। दुर्गेश पाठक ने कहा कि दिल्ली सरकार ने इस योजना की घोषणा की कि दिल्ली की हर महिला को हर महीने 2100 रुपए मिलेंगे। इसे लेकर महिलाओं और उनके पूरे परिवार में जबरदस्त उत्साह है। हम जहां भी जा रहे हैं, हर तरफ लोग यही कह रहे हैं कि पहली बार कोई ऐसी सरकार आई है, जिसने पहले महिलाओं के लिए बस की यात्रा मुफ्त करके उन्हें तवज्जो दी और अब यह योजना लाकर महिला उत्थान के लिए जबरदस्त कदम उठाया है। दुर्गेश पाठक ने कहा कि दिल्ली सरकार की इस योजना के सामने चुनाव एक छोटी चीज है। हम हर जगह महिला सशक्तिकरण की बात पढ़ते और सुनते हैं, लेकिन कोई सरकार इसके लिए काम नहीं कर रही है। हमारी सरकार पहली है जो इसके लिए प्रत्यक्ष रूप से काम कर रही है। दुर्गेश पाठक ने आगे कहा कि इस योजना से महिलाओं को बहुत लाभ होगा। महिलाएं काफी खुश हैं। हम जिस भी महिला से बात कर रहे हैं, वह इस योजना का स्वागत कर रही है। उनका कहना है कि इससे उन्हें अपना घर चलाने में बहुत मदद मिलेगी। वह अच्छी तरह से अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाएंगी। इस महंगाई के समय में इससे उनके घर के खर्चे निकलेंगे। इससे महिलाओं का सम्मान बढ़ेगा, क्योंकि महिलाएं मजबूत होंगी तो उन्हें अपने आप सम्मान मिलेगा। आज महिलाओं का शोषण इसलिए होता है, क्योंकि वे कहीं न कहीं कमजोर हैं। उनके पास आर्थिक शक्ति नहीं है। अब जब वे आर्थिक रूप से मजबूत होंगी, तो उन्हें अपने आप मान-सम्मान मिलेगा।

कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने दिल्ली सरकार के बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस का किया दौरा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली में गुरुवार को कैम्ब्रिज के मेयर बैजू थिट्टाला ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस (एएसओएसई), एंड्रयूज गंज का दौरा किया। इस मौके पर दिल्ली कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष वारीश प्रताप भी मौजूद रहे। परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स स्पेशलाइजेशन के इस स्कूल में स्टूडेंट्स के म्यूजिक बैंड ने दोनों का स्वागत किया। इसके बाद दोनों ने स्कूल प्रांगण में लगे फाइन आर्ट्स की प्रदर्शनी का जायजा लिया। विजिट के दौरान मेयर बैजू थिट्टाला ने स्कल्प्चर लैब, म्यूजिक रूम और विजुअल आर्ट्स के लैबों का दौरा किया, स्टूडेंट्स की बनाई कलाकृतियों को देखा और उनसे बातचीत की। विजिट के दौरान कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिट्टाला ने सबसे पहले स्कूल प्रांगण में स्टूडेंट द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को देखा। यहाँ छात्रों द्वारा विभिन्न भारतीय चित्रकला शैली के फाइन आर्ट पेंटिंग्स की प्रदर्शनी की गई थी। प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा बनाई गई बंगला चित्रकला शैली की पेंटिंग्स और कलाकृतियों को मेयर ने

काफी सराहा। स्कूल में म्यूजिक लैब में विजिट के दौरान छात्रों ने कैम्ब्रिज मेयर के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया। छात्रों में विभिन्न म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट की धुन पर पहले वेस्टर्न म्यूजिक और उसके बाद क्लासिकल इंडियन म्यूजिक की प्रस्तुति की। संगीत की धुन पर मेयर भी थिरकने लगे थे। म्यूजिक लैब के बाद मेयर ने फाइन आर्ट्स के लैबों का दौरा किया, स्टूडेंट्स की बनाई कलाकृतियां देखी। साथ ही स्कल्प्चर लैब में मिट्टी पर स्टूडेंट्स द्वारा बनाई गई महीन कलाकृतियों को भी देखा और स्टूडेंट्स से बातचीत की। इस मौके पर कैम्ब्रिज मेयर बैजू थिठ्ठाला ने दिल्ली के शिक्षा मॉडल के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त की और एक सर्वांगीण शिक्षा प्रदान करने की प्रतिबद्धता के लिए सरकार की सराहना की। उन्होंने कहा, दिल्ली के सरकारी स्कूलों में आए ये बदलाव बहुत सकारात्मक है। यहां बच्चों को मिल रही सुविधाएं, शिक्षकों द्वारा पढ़ने-पढ़ाने का इनोवेटिव तरीका अपनाना बहुत ही सराहनीय है। उन्होंने स्टूडेंट्स को प्रेरित करते हुए कहा, वो इसी तरह मेहनत करते रहें, अपने स्किल्स के दम पर वो हर मुकाम हासिल करेंगे। विजिट के दौरान कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कैम्ब्रिज मेयर को एएसओएसई में सिखाए जा रहे विभिन्न करिकुलम के बारे में जानकारी प्रदान की। इस दौरान उन्होंने कहा, अपने स्कूल में कैम्ब्रिज मेयर की मेजबानी करना सौभाग्य की बात है। उनका हमारे स्कूल में आना और यहां सीखने के लिए अपनाए जा रहे इनोवेटिव तरीकों से रूबरू होना न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि वैश्विक मंच पर भी शिक्षा के प्रति दिल्ली सरकार के समर्पण को दिखाता है। कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, शिक्षा के क्षेत्र में इनोवेशन के एक प्रतीक के रूप में है। ये सीखने का एक ऐसा माहौल तैयार करता है, जहां छात्र न केवल मुख्य विषयों को सीखते हैं बल्कि आधुनिक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के लिए महत्वपूर्ण स्किल्स भी सीखते हैं। उन्होंने कहा, अब तक सिस्टम में ऐसे स्कूल थे जो बच्चों को डॉक्टर-इंजीनियर बनाना तय करते थे लेकिन कभी किसी ने यह कल्पना नहीं की थी कि ऐसे स्कूल भी होंगे जहां बच्चों के अंदर की प्रतिभा को निखारते हुए यह तय किया जाएगा कि उन्हें आर्टिस्ट बनाना है उन्होंने कहा कि, दिल्ली सरकार ने अपने परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स डोमेन के इन स्कूलों के जरिए इस सपने को पूरा करने का काम किया है। गौरतलब है कि कैंब्रिज मेयर बैजू थिठ्ठाला भारतीय नागरिक हैं एवं मूलतः केरल के कोट्टायम के रहने वाले हैं। वर्ष 2004 में इंग्लैंड जाने से पहले वह लगभग 8 साल दिल्ली में भी रहे हैं। बच्चों से भेंट करते हुए उन्होंने अपने गांव से कैंब्रिज मेयर तक की यात्रा के कई रोचक संस्मरण साझा किए तथा हौसला अफजाई की।

नजफगढ़ जोन के डीसी के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा

द्वारका की समस्याओं को लेकर द्वारका फोरम की मीटिंग

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

द्वारका फोरम के एक प्रतिनिधिमंडल ने नजफगढ़ जोन के नवनियुक्त उपायुक्त संतोष कुमार राय से मुलाकात कर द्वारका की प्रमुख नागरिक समस्याओं पर चर्चा की। इस बैठक में कचरा के निपटान, स्वच्छता, बिजली संबंधित समस्याएं और बागवानी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। संतोष कुमार राय ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वे इन समस्याओं की गहराई से समीक्षा करेंगे और इन्हें प्रभावी ढंग से हल करने के लिए आवश्यक कदम उठाएंगे। उन्होंने द्वारका की समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए ठोस प्रयास करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस बैठक में द्वारका फोरम के प्रमुख सदस्य में कौशल खन्ना, अंजना सिन्हा, सुचिता सिन्हा, ए.एस. चटवाल, अनिल कुंद्रा और अमन भंडारी उपस्थित रहे। द्वारका फोरम स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर काम करने और निवासियों की समस्याओं को शीघ्रता से हल कराने के लिए लगातार प्रयासरत रहती है। फोरम को उम्मीद है कि उपयुक्त के प्रयास से द्वारका में जल्द ही सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे।

अवैध बांग्लादेशी रोहिंग्या पर भाजपा नेताओं ने उठाया सवाल

वसंत कुंज के जयहिंद कैम्प झुग्गियों में जाकर की पूछताछ

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी रोहिंग्या मुसलमानों पर राजनीति गरमाई हुई है। भाजपा नेता झुग्गी बस्ती में पहुंचकर वहां की हालात देखकर जायजा भी ले रहे हैं और पता भी लगा रहे हैं। साउथ दिल्ली के वसंत कुंज स्थित जय हिंद कैंप की झुग्गी बस्ती में बीजेपी नेता कुसुम खत्री और नरेंद्र खत्री ने टीम के साथ पहुंचकर झुग्गियों का दौरा किया। साथ ही इस मुद्दे को लेकर गंभीर आरोप भी लगाए। कुसुम खत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने भारी संख्या में बांग्लादेशी रोहिंग्या मुसलमानों को वसंत कुंज क्षेत्र में बसाया हुआ है। जिससे दिल्ली में अपराध की दर बढ़ रही है। इस पर सवाल भी उठाया और आम आदमी पार्टी को जिम्मेदार भी ठहराया। आरोप लगाया कि उनकी सरकार ने जानबूझकर इन लोगों को यहां बसाया है। उन्होंने इस संबंध में स्थानीय लोगों से आधार कार्ड और वोटर कार्ड की जानकारी ली और स्थानीय लोगों से बातचीत भी की। जय हिंद कैंप में रहने वाले लोगों ने कहा कि यहां काफी संख्या में बांग्लादेशी रोहिंग्या मुसलमान रहते हैं। भाजपा नेताओं ने इनकी बढ़ती संख्या को लेकर चिंता का विषय बताया और कहा कि इसे रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

1 लाख में आधार कार्ड में 3 बार चेंज करके किया अपडेट

- शख्स 1, पासपोर्ट 3, हर बार नाम चेंज करके गया थाईलैंड
- एयरपोर्ट पर खुली पोल, शातिर एजेंट दिल्ली से गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आईजीआई एयरपोर्ट थाना की पुलिस टीम ने फर्जी वीजा के मामले में उत्तर प्रदेश के रहने वाले एक एजेंट को दिल्ली से गिरफ्तार किया है। जो 7-8 सालों से मनोज ट्रैवल टर्मिनल नाम का एजेंसी चला रहा था। बाद में लोगों को विदेश जाने के लिए उसके डॉक्यूमेंट को चेंज करने के नाम पर मोटी रकम ले रहा था। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपी की पहचान मनोज जायसवाल के रूप में हुई है। यह उत्तर प्रदेश के गोरखपुर का रहने वाला है। यह पहले टिकट बुकिंग एजेंसी के रूप में काम शुरू किया था, बाद में यह आधार कार्ड और पैन कार्ड भी अपडेट करने लगा था। ज्यादा पैसा कमाने के लालच में विदेश भेजने का काम भी शुरू कर दिया था। डीसीपी एयरपोर्ट उषा रंगनानी ने बताया कि इस साल 21 अगस्त को सतीश कुमार तिवारी नाम का शख्स थाईलैंड से आईजीआई एयरपोर्ट पर पहुंचा था। जब उसके डॉक्यूमेंट की जांच की गई तो उसमें गड़बड़ी का पता चला। जब उसके

फिंगरप्रिंट को मैच करने की कोशिश की गई तो अलग-अलग पासपोर्ट से उसका फिंगरप्रिंट मैच कर रहा था। जांच कर रही टीम का शक बढ़ गया, पूछताछ हुई तो पता चला कि उसका ओरिजिनल नाम सतीश कुमार तिवारी है, लेकिन पासपोर्ट अलग अलग बना हुआ है। तलाशी में उसके पास से उसी के दूसरे नाम सतीश तिवारी का आधार कार्ड की कॉपी इत्यादि मिला। फिर पुलिस ने एफआईआर दर्ज किया और सतीश कुमार तिवारी को गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछताछ हुई तो बताया कि उसने बताया की सबसे पहले 2010 में वीजा बनवाया था थाईलैंड जाने के लिए। वह 6 साल बाद भारत वापस आया, क्योंकि उसे वहां ओवर स्टे के कारण ब्लैक लिस्ट कर दिया गया था। वह फिर सतीश तिवारी नाम से दूसरा पासपोर्ट बनवाया और 2018 में गोरखपुर के एजेंट मनोज से संपर्क किया तो उसने आधार कार्ड में भी चेंज करके उसका सतीश तिवारी नाम से डॉक्यूमेंट बना दिया। नया पासपोर्ट तैयार कर दिया 2018 में वह थाईलैंड चला गया। लगभग 2 साल बाद वह फिर वापस भारत आया इस बार भी उसे ओवर स्टे के कारण ब्लैक लिस्ट कर दिया गया था। वह फिर मनोज से संपर्क किया इस बार एजेंट ने उसका नाम बदलकर सतीश कुमार करके उसका डेट ऑफ बर्थ भी चेंज कर दिया और नया पासपोर्ट बना दिया 2021 में वह फिर उस पासपोर्ट के जरिए थाईलैंड चला गया और 2024 फरवरी में वह वापस आया। वह फिर थाईलैंड जाने के लिए ट्राई किया लेकिन उसका थाईलैंड एयरपोर्ट पर सबसे पहले वाला पासपोर्ट का डिटेल डिटेक्ट हो गया। इस मामले में जब आइजीआइ एयरपोर्ट पर उस फजीर्वाड़ा के बारे में पता चला तो उस समय से एजेंट मनोज की पुलिस तलाश कर रही थी। एसीपी वीके पीएस यादव की देखरेख में एसएचओ सुशील गोयल, सब इंस्पेक्टर विनोद, कांस्टेबल मुकेश की टीम ने इसके ठिकाने के बारे में पता लगाया और फिर इसे दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया। इसने बताया कि वह आधार कार्ड अपडेट करने के लिए एक लाख रुपया लिया था।

रोहिंग्याओं और अमित शाह के बयान को लेकर एमसीडी सदन में हंगामा

नई दिल्ली, । दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) सदन में बृहस्पतिवार को विपक्षी पार्षदों ने सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) पर रोहिंग्याओं और बांग्लादेशी घुसपैठियों को आश्रय देने का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। महापौर महेश खिंची अपराह्न तीन बजे तक सदन नहीं पहुंचे, जिस कारण दो बजे शुरू होने वाला सत्र अब तक शुरू नहीं हो सका, जिससे तनाव और बढ़ गया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस के पार्षद सदन में आसन के समीप आ गए और बेंचों पर चढ़ गए। उनके हाथों में ह्वआपह्ल के खिलाफ लिखे नारों की तख्तियां थीं। विपक्षी पार्षदों ने जो तख्तियां ली हुई थीं, उनपर लिखा था, ह्वअवैध रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठिये ह्वआपह्ल के दोस्त हैंह्ल, ह्वझूठे केजरीवाल, शर्म करोह्ल। वहीं ह्वमेयर साहब टाइम पे आओह्ल और ह्वनहीं चलेगा, ऐसे सदन नहीं चलेगाह्ल जैसे नारे सदन में गूंज रहे थे। विपक्षी पार्षदों ने महापौर की अनुपस्थिति की आलोचना की और सदन की कार्यवाही शुरू करने से पहले उनसे माफी की मांग की। ह्वआपह्ल पार्षदों ने इसके जवाब में बाबा साहेब आंबेडकर पर संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हालिया बयान पर निशाना साधते हुए ह्वबाबा साहेब का अपमान नहीं सहेंगेह्ल और ह्वजय भीमह्ल जैसे नारे भी लगाए। सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्यों ने भाजपा पर आंबेडकर की विरासत को कमजोर करने का आरोप लगाया।

फ्लैट ऑनर की मौत के बाद फर्जी डॉक्यूमेंट बनाकर बेचा

- द्वारका से. 6 सोसायटी के बधवार अपार्टमेंट का मामला
- हिमाचल से मास्टर माइंड, महिला के बेटे को पहले पकड़ा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

द्वारका सोसायटी के एक फ्लैट ओनर की मृत्यु के बाद उसका फर्जी डॉक्यूमेंट बनाकर उस फ्लैट को एक करोड़ 85 लाख में बेचने के धोखाधड़ी के मामले में पुलिस ने 70 साल की बुजुर्ग महिला को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि इस मामले में फजीर्वाड़ा करने वाले मास्टरमाइंड को हिमाचल प्रदेश से और बुजुर्ग महिला के बेटे को दिल्ली से पुलिस पहले पकड़ चुकी है। डीसीपी द्वारका अंकित सिंह के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राजेंद्र कौर उसके बेटे सरबजीत और मास्टर माइंड पवनदीप सिंह उर्फ प्रिंस के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार जिस फ्लैट को लेकर यह चीटिंग की गई वह द्वारका सेक्टर 6 के बधवार अपार्टमेंट में स्थित है। फ्लैट के ओनर की पिछले साल डेथ हो गई थी और उनकी पत्नी की 2019 में ही मृत्यु हो चुकी थी। उनके कोई बच्चे नहीं थे, लेकिन उनके फ्लैट का फर्जी डॉक्यूमेंट बनाकर उसे दूसरे शख्स को इन्होंने भेज दिया था। जब इसकी जानकारी फ्लैट के ओनर के रिलेटिव को मिली तो उन्होंने इसकी शिकायत पुलिस में की। एसएचओ संजीव मंडल की देखरेख में इंस्पेक्टर रमेश चंद, सहायक सब इंस्पेक्टर महावीर, हेड कांस्टेबल प्रवीण यादव की टीम ने पूरे मामले की छानबीन की और इस मामले में पहले सरबजीत और पवनदीप को गिरफ्तार किया था। लेकिन 70 साल की बुजुर्ग महिला राजेंद्र कौर फरार चल रही थी। बाद में इसे भगोड़ा भी घोषित कर दिया गया था। पुलिस ने टेक्निकल सर्विलांस और इनफॉरमेशन की मदद से इसके बारे में पता लगाकर इसे भी आखिरकार पकड़ लिया। पुलिस के अनुसार सारा प्लान मास्टरमाइंड पवनदीप सिंह उर्फ प्रिंस ने बनाया था। जिसने फर्जी डॉक्यूमेंट तैयार किया और इस प्रॉपर्टी को एक शख्स को एक करोड़ 85 लाख रुपए में बेच दिया। पवनदीप सिंह को पुलिस ने हिमाचल प्रदेश में रेड करके गिरफ्तार किया था।

सहकर्मी सहायता समूह विकलांग लोगों को उनकी प्रजनन यात्रा में कैसे सशक्त बना सकते हैं

दिल्ली : डॉ. कनिका शर्मा, माता-पिता बनने का मार्ग कई लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन विकलांग व्यक्तियों के लिए, यह यात्रा अक्सर अतिरिक्त बाधाओं के साथ आती है। प्रजनन संबंधी समस्याएं, चिकित्सा स्थितियां और संसाधनों तक सीमित पहुंच इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाना अधिक कठिन बना सकती है। हालांकि, सहकर्मी सहायता समूह विकलांग व्यक्तियों के लिए एक शक्तिशाली संसाधन के रूप में उभर रहे हैं, जो उन्हें माता-पिता बनने के अपने सपनों को पूरा करने के लिए आवश्यक भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। ह्लसहकर्मी सहायता समूह विकलांग लोगों के लिए उनके प्रजनन की यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली संसाधन हो सकते हैं। समान चुनौतियों का सामना करने वाले अन्य लोगों के साथ अनुभव साझा करने से समुदाय की भावना को बढ़ावा मिलता है, अलगाव की भावना कम होती है और भावनात्मक समर्थन मिलता है। ये समूह चिंताओं पर चर्चा करने, सलाह का आदान-प्रदान करने और सुलभ प्रजनन उपचारों के बारे में जानने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं,ह्व डॉ. कनिका शर्मा, बिरला फर्टिलिटी और आईवीएफ, पश्चिमी दिल्ली में आईवीएफ विशेषज्ञ साझा करती हैं। सहकर्मी सहायता समूह विकलांग लोगों को उन लोगों से जुड़ने की अनुमति देते हैं जो उनकी अनूठी चुनौतियों को समझते हैं। ये समूह एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं, जिससे एक सहायक वातावरण में चिंताओं और सफलताओं दोनों को साझा करना आसान हो जाता है। चाहे प्रजनन उपचार, चिकित्सा विकल्प या यात्रा के भावनात्मक पहलुओं पर चर्चा हो, सदस्य व्यावहारिक सलाह और अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। जो व्यक्ति अपनी स्थिति के कारण अलग-थलग महसूस करते हैं, उनके लिए ये समूह अपनेपन और समझ की महत्वपूर्ण भावना प्रदान कर सकते हैं। डॉ. कनिका आगे कहती हैं, सहकर्मी सहायता न केवल व्यक्तियों को उनके अनुभवों को मान्य करके सशक्त बनाती है बल्कि बाधाओं को दूर करने की उनकी क्षमता में आत्मविश्वास भी पैदा करती है। सामूहिक शक्ति और साझा ज्ञान के साथ, विकलांग लोग अपने माता-पिता बनने के सपने को पूरा करने के दौरान अधिक सूचित, समर्थित और आशावान महसूस कर सकते हैं। निष्कर्ष के तौर पर, सहकर्मी सहायता समूह विकलांग लोगों को उनकी प्रजनन यात्रा में सशक्त बनाने में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं ।

सिद्धार्थ बस्ती में लोगों ने किया विरोध

नई दिल्ली, । जंगपुरा विधानसभा क्षेत्र के सिद्धार्थ बस्ती स्थित आंबेडकर पार्क में गृहमंत्री अमित शाह के बयान के विरोध में लोगों ने प्रदर्शन किया। आप नेता मनीष सिसोदिया भी प्रदर्शन में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि अगर अमित शाह जी को बाबा साहेब के नाम से दिक्कत है तो देश छोड़कर कहीं और चले जाएं। हिंदुस्तान के लोग तो बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का नाम लेंगे ही, क्योंकि उन्होंने ऊंच-नीच का भेद मिटाकर सबको बराबरी से रहने का अधिकार दिया है। यही बात भाजपा वालों को चुभती है।

छात्र देश के विकास में योगदान दें : उपराज्यपाल

नई दिल्ली, । दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में 39 सौ से अधिक छात्रों को स्नातक, परास्नातक और पीएचडी की डिग्री प्रदान की गई। उपराज्यपाल ने छात्रों को डिग्री प्रदान की। इनमें 2,894 स्नातक, 809 परास्नातक और 207 पीएचडी डिग्री शामिल है। उपराज्यपाल ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी को अवसरों का सही उपयोग करते हुए विजेता बनना चाहिए। उन्होंने छात्रों को अपने जीवन के प्रत्येक पहलू में जिम्मेदारी निभाने और देश के विकास में योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे केवल मौके का इंतजार न करें बल्कि अपनी प्रतिभा के दम पर अवसर पैदा करें और उनका सही उपयोग कर विजेता बनें। उन्होंने छात्रों को कृतज्ञता का महत्व बताते हुए कहा कि डिग्रियां केवल पढ़ाई के खर्च की रसीदें हैं। ज्ञान वही है जो दूसरों के प्रति आपके व्यवहार में झलकता है। समारोह में छात्रों, उनके परिवारों और फैकल्टी सदस्यों के साथ ही अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस दीक्षांत समारोह में विभिन्न विषयों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 45 विद्यार्थियों को वाइस-चांसलर गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनिल काकोडकर ने दीक्षांत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि छात्रों को केवल नौकरी लेने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनना चाहिए।

विशेष सत्र बुलाने की मांग को लेकर भाजपा ने दिया दिल्ली विधानसभा परिसर में धरना

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली, । दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता की अगुवाई में दिल्ली भाजपा के विधायकों ने आज विधानसभा प्रांगण में धरना प्रदर्शन कर विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने और कैग की सभी 14 रिपोर्ट्स को सदन पटल पर रखने की मांग की। विधायकों ने अपने हाथ में तख्तियां ली हुई थी जिन पर ह्वविधानसभा का सत्र बुलाओ, सीएजी रिपोर्ट सदन में लाओह्ल और सीएजी रिपोर्ट मत दबाओ, विधानसभा का सत्र बुलाओ, सीएजी रिपोर्ट सदन में लाओह्ल जैसे नारे लिखे हुए थे। इस प्रदर्शन में नेता प्रतिपक्ष के साथ भाजपा विधायक मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अभय वर्मा, अजय महावर, जितेंद्र महाजन और अनिल वाजपेयी भी उपस्थित थे। विजेंद्र गुप्ता ने आआपा सरकार पर अपने भ्रष्टाचार और वित्तीय कारगुजारियों को छुपाने के मकसद से जानबूझकर कैग की रिपोर्ट्स को सदन पटल में न रखने का आरोप लगाया और कहा कि सरकार अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों से भाग रही है। भाजपा विधायकों ने सरकार पर लोकतंत्र की दिनदहाड़े हत्या करने का आरोप लगाया और कहा कि सरकार अपने तानाशाही तरीके से सदन को चलाती रही है और भाजपा विधायकों को सदन में जनहित के मुद्दों पर चर्चा नहीं करने देती है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि उनकी आवाज को लगातार दबाया गया और कैग की रिपोर्ट्स को सदन में रखने की उनकी मांग को सरकार अनसुना करती रही। मजबूरन भाजपा विधायक दल को हाई कोर्ट में याचिका दायर करनी पड़ी। जिस पर सुनवाई के दौरान सरकार ने दो-तीन दिन के अंदर ही कैग की रिपोर्ट्स को सदन में रखने का आश्वासन कोर्ट के समक्ष दिया। दिल्ली के उपराज्यपाल ने भी मुख्यमंत्री आतिशी को पत्र लिखकर 19-20 दिसंबर को विशेष सत्र बुलाने और उसमें रिपोर्ट्स प्रस्तुत करने के लिए कहा, इसके बावजूद सरकार ने अभी तक सत्र बुलाने की कोई घोषणा नहीं की है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार की मनमानी और तानाशाही स्वीकार नहीं की जाएगी। विपक्ष सड़कों पर आंदोलन चलायेगा और सरकार को मजबूर कर देगा कि वह विशेष सत्र बुलाकर कैग की रिपोर्ट्स को सदन के पटल पर रखे। अगर तब भी सरकार ने ये रिपोर्ट्स प्रस्तुत नहीं की तो विपक्ष फिर से हाई कोर्ट की शरण लेगा। विधानसभा परिसर में सरकार के खिलाफ धरना प्रदर्शन कर अपना विरोध जताने के बाद भाजपा के सभी विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल से भेंट कर उन्हें ज्ञापन सौंपा और विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर उसमें सरकार को कैग की सभी 14 रिपोर्ट्स पेश करने का आदेश देने की मांग की।

मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण के पदों को जल्द भरें : कोर्ट

नई दिल्ली, । दिल्ली उच्च न्यायालय ने मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण के गैर-आधिकारिक सदस्यों के पदों को भरने में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि प्राधिकरण के गठन के बाद उसे मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम की धारा 73 और 74 के अनुसार समीक्षा बोर्डों की तुरंत स्थापना करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त न्यायालय ने कहा कि दिल्ली में चुनाव के कारण आदर्श आचार संहिता लागू होने से दिल्ली मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण और समीक्षा बोर्डों के गठन में बाधा नहीं आनी चाहिए। यदि दिल्ली मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण उचित समय सीमा के भीतर न्यायालय के निर्देशों का पालन करने में विफल रहता है, तो याचिकाकताओं को याचिका फिर से दायर करने की स्वतंत्रता दी गई है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश विभु बाखरू एवं न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 के प्रावधानों के अनुसार राज्य मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण (एसएमएचए) और जिला मानसिक स्वास्थ्य समीक्षा बोर्डों की स्थापना की मांग वाली दो याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए निर्देश जारी किए।

वेस्ट दिल्ली में पुलिस का झुग्गी में सत्यापन का अभियान

- विकासपुरी/तिलक नगर की झुग्गी बस्ती में हो रही जांच
- देखे जा रहे आधार कार्ड, पूछ रहे कौन कौन रह रहा है यहां

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी दिल्ली में उपराज्यपाल वी के सक्सेना के आदेश के बाद रोहिंग्याओ/बांग्लादेशियों की जांच को लेकर चलाए जा रहे अभियान के तहत पश्चिमी जिला पुलिस भी झुग्गी बस्ती में पहुंचकर जांच कर रही है। जिले के अलग-अलग थाना इलाके के अलग-अलग जेजे क्लस्टर में जाकर लोगों के आई कार्ड चेक कर रही है और उनके बारे में पता कर रही है। डीसीपी वेस्ट विचित्र वीर ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया की जो भी जानकारी मिलती है, पुलिस उसके आधार पर छानबीन करती है। बुधवार को विकासपुरी और तिलक नगर थाना इलाके के अलग अलग झुग्गी बस्ती में पुलिस टीम जांच करती हुई नजर आई। इंदिरा कैंप नंबर - 4 में विकासपुरी एसएचओ राजवीर सिंह

की टीम ने लोगों के घरों और दुकानों में उनसे उनका पहचान पत्र देखा। साथ ही लोगों को यह भी बताया कि कोई नए लोग जो कहीं और से आकर यदि रह रहे हों उसके बारे में पुलिस को तुरंत जानकारी दें। जो भी संदिग्ध लगे, उसके बारे में पुलिस को तुरंत बताएं। वही सुभाष नगर के पेसिफिक मॉल के पास स्थित श्याम नगर झुग्गी में तिलक नगर थाना के एसएचओ विनीत पांडे की टीम लोगों के पहचान पत्र चेक करती नजर आई। लोगों से उनके पहचान और कहां के वह मूल निवासी हैं इसके बारे में ना सिर्फ पूछताछ की गई, बल्कि उनकी सारी डिटेल रजिस्टर में मेंटेन किया गया। साथ ही जिस भी जेजे कॉलोनी और क्लस्टर में पुलिस जा रही है वहां के लोगों को जागरुक भी कर रही है कि अगर कोई भी व्यक्ति हाल फिलहाल में आकर रह रहा हो या संदिग्ध रूप से रहता हुआ दिखाई दे तो उसकी जानकारी तुरंत पुलिस टीम को करें।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण

नई दिल्ली, शुक्रवार, 20 दिसंबर, 2024

खतरे में नायब सरकार का मंत्रिमंडल?

प्रात : किरण संवाददाता

चंडीगढ़। हरियाणा की 90 सदस्यीय 15वीं विधानसभा में कुल विधायकों के 15 फीसदी से ज्यादा मंत्री बनाए जाने के खिलाफ दायर एक याचिका पर हाईकोर्ट 28 जनवरी को सुनवाई करेगा। इस मामले में हाईकोर्ट ने राज्य सरकार व केंद्र से जवाब तलब किया हुआ है। कोर्ट ने सभी पक्षों को अगली सुनवाई पर अपना पक्ष रखने का भी आदेश दिया है। आइए जानते हैं कि आखिर ये पूरा मामला क्या है।

मंत्रिमंडल के गठन में संविधान संशोधन के उल्लंघन का आरोप

याचिका में आरोप लगाया गया कि मंत्रिमंडल में अधिकतम मंत्री 13.5 हो सकते हैं, मगर हरियाणा में इस समय 14 मंत्री हैं, जो कि संविधान संशोधन का उल्लंघन है।

मामले को लेकर एडवोकेट जगमोहन सिंह भट्टी ने याचिका दायर कर बताया कि संविधान के 91वें संशोधन के तहत राज्य में कैबिनेट मंत्रियों की संख्या विधानसभा के कुल विधायकों की संख्या का 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती है।

हरियाणा विधानसभा में कुल विधायकों की संख्या 90 है। ऐसे में संविधान के संशोधन के अनुसार कैबिनेट में अधिकतम मंत्री 13.5 हो सकते हैं। लेकिन हरियाणा में इस समय 14 मंत्री हैं, जो कि संविधान के संशोधन का उल्लंघन है।

याचिका में कहा गया है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, अनिल विज, कृष्णलाल पंवार, राव नरबीर, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल, डा. अरविंद शर्मा, श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा, कृष्ण कुमार बेदी, श्रुति चौधरी, आरती राव, राजेश नागर और गौरव गौतम के अलावा केंद्र सरकार व हरियाणा विधानसभा को प्रतिवादी बनाया है।

अतिरिक्त मंत्रियों को हटाने की मांग

याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में आरोप है कि हरियाणा सरकार द्वारा जो मंत्री पद और कैबिनेट रैंक बांटी गई है, उसका सीधा असर जनता पर पड़ रहा है। विधायकों को खुश करने के लिए मंत्रियों की संख्या बढ़ाई जा रही है और उनका भुगतान जनता की गाढ़ी कमाई से किया जाता है।

याचिकाकर्ता ने हाईकोर्ट से अपील करते हुए कहा कि तय संख्या से अधिक मंत्री होने के चलते अतिरिक्त मंत्रियों को हटाया जाए। इसके साथ ही याचिका लंबित रहते उनको मिलने वाले लाभ पर रोक पर रोक लगाए जाने की भी हाईकोर्ट से मांग की गई है। एडवोकेट जगमोहन सिंह भट्टी की इस याचिका पर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में 28 जनवरी सुनवाई होने वाली है।

सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फैलाने वालों सीसीटीवी से नजर रखेगा निगम

गुरुग्राम मंडल के आयुक्त आरसी बिढ़ान की अध्यक्षता में हुई स्वीप समीक्षा बैठक में लिया गया निर्णय

- संयुक्त आयुक्तों व सहायक पुलिस आयुक्तों की टीमें अवैध कचरा व मलबा डंपिंग वाहनों को करेंगी जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम। कई स्थानों पर यह देखने में आया है कि गार्बेज ट्रॉली खड़ी होने के बावजूद भी कुछ लोग जमीन पर कचरा डाल देते हैं, जिससे सफाई व्यवस्था खराब हो रही है। ऐसे लोगों की निगरानी करने के लिए अब सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे, जिनसे कचरा फैलाने वालों की पहचान की जाएगी। यह निर्णय गुरुवार को गुरुग्राम मंडल के आयुक्त आरसी बिढ़ान की अध्यक्षता में आयोजित ठोस कचरा पर्यावरण आवश्यकता कार्यक्रम (स्वीप) की समीक्षा बैठक में लिया गया। बैठक में नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त अशोक कुमार गर्ग व अतिरिक्त निगमायुक्त डा. बलप्रीत सिंह सहित वार्ड वाईज नियुक्त एचसीएस नोडल अधिकारी व निगम की स्वच्छता शाखा के अधिकारीगण उपस्थित थे। शहर को साफ-सुथरा बनाने की दिशा में वार्ड वाईज एचसीएस अधिकारियों को निगरानी के लिए नोडल अधिकारी लगाया हुआ है। वे प्रतिदिन अपने-अपने वार्डों का दौरा करके सफाई व्यवस्था को बेहतर कराने में जुटे हुए हैं। बैठक में बताया गया कि गार्बेज वर्नेबल प्वाइंटों पर निगम द्वारा गार्बेज ट्रॉली खड़ी की गई हैं, ताकि जमीन पर कचरा ना फैले। स्वच्छता टीमें प्रतिदिन गार्बेज ट्रॉली को खाली कर रही हैं, लेकिन कई स्थानों पर यह देखा गया है कि लोग कचरे को गार्बेज ट्रॉली में डालने की बजाए जमीन पर फेंक देते हैं। इससे क्षेत्र में गंदगी फैलती है। सफाई व्यवस्था को दोबारा से दुरुस्त करने में कर्मचारियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। मंडलायुक्त ने इस प्रकार के लोगों की पहचान व उन पर कार्रवाई करने के लिए जीवीपी पर सीसीटीवी लगाने का सुझाव दिया, ताकि कचरा फैलाने वालों पर जुमार्ना व एफआईआर दर्ज करने संबंधी कार्रवाई की जा सके।

निगम व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों की टीमें करेंगी कार्रवाई

बैठक में मंडलायुक्त ने कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर मलबे व कचरे की अवैध डंपिंग को रोकने के लिए नगर निगम गुरुग्राम के संयुक्त आयुक्तों व सहायक पुलिस आयुक्तों की टीमें गठित करके कार्रवाई शुरू की जाए। ये टीमें दिल्ली से आने वाले कचरा वाहनों को पकडकर उन्हें जब्त करेंगी। साथ ही ऐसे वाहनों के खिलाफ भी कार्रवाई करेंगी, जो बल्क वेस्ट जनरेटरों के यहां से कचरा उठाकर सार्वजनिक स्थानों पर डाल देते हैं। यातायात पुलिस द्वारा भी इस प्रकार के वाहनों पर कार्रवाई की जाएगी।

संसाधन व कर्मचारियों के गैप को करें पूरा

बैठक में मंडलायुक्त ने निगम अधिकारियों से कहा कि वे सफाई कार्य के लिए सभी संसाधन व कर्मचारियों के गैप को पूरा करें। इसके तहत डोर-टू-डोर कचरा उठाने वाले वाहनों की जरूरत के अनुसार संख्या बढ़ाएं। इसके साथ ही गार्बेज ट्रॉली के पास एक-एक कर्मचारी की नियुक्ति भी सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि डोर-टू-डोर कचरा उठान कार्य की बेहतर निगरानी भी सुनिश्चित की जाए।

संक्षिप्त खबरें

डीएम ने दिए स्थानीय स्तर पर जनसमस्याओं के निस्तारण के निर्देश

अमरोहा। जिला मजिस्ट्रेट निधि गुप्ता वत्स ने स्थानीय स्तर पर जन समस्याओ के निस्तारण के लिए प्रत्येक माह के द्वितीय एवं चतुर्थ शनिवार को कोविड-19 के दृष्टिगत बचाव के सम्बनध में शासन द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निदेर्शों के अनुसार थाना स्तर पर समाधान दिवस को बेहतर तरीके से आयोजित किये जाने के निर्देश दिये है। उन्होंने उपजिलाधिकारी अमरोहा को थाना डिडौली, डिपटी कलेक्टर-द्वितीय मुख्यालय को अमरोहा नगर, तहसीलदार अमरोहा को रजबपुर, उपजिला मजिस्ट्रेट नौगावां सादात को नौगावां सादात को अमरेाहा नगर, तहसीलदार नौगावां सादात को थाना नौगावां सादात, उपजिला मजिस्टेज्ट हसनपुर को थाना सैदनगली, तहसीलदार हसनपुर को थाना रहरा, डिप्टी कलेक्टर तृतीय मुख्यालय, अमरोहा एवं नायब तहसीलदार, रहरा को थाना रजबपुर, डिप्टी कलेक्टर चतुर्थ अमरोहा एवं नायब तहसीलदार हसनपुर को थाना आदमपुर, उपजिला मजिस्ट्रेट धनौरा को बछरायुं, डिप्टी कलैक्टर प्रथम मुख्यालय को थाना धनौरा उवं तहसीलदार धनौरा को थाना गजरौला को उनको दिये कोतवाली/थानों में उपस्थित रहने का आगामी त्रैमास (जनवरी, 2025 से मार्च, 2025 तक) समाधान दिवस का रोस्टर तैयार किया गया है। समाधान दिवस को और प्रभावी बनाये जाने हेतु अपर जिला मजिस्ट्रेट एवं अपर पुलिस अधीक्षक, अमरोहा द्वारा पर्यवेक्षण किया जायेगा। उन्होने कहा कि तैनात अधिकारी समाधान दिवस पर उपस्थित रहकर शासनादेश में दी गई व्यवस्था के अनुसार प्राप्त होने वाली शिकायतो के त्वरित निस्तारण हेतु अपेक्षित कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करेगें। बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी यह भी सुनिश्चित करेगें की चकबन्दी विभाग के एक अधिकारी समाधान दिवस पर प्रत्येक कोतवाली/थाने पर उपस्थित रहकर चकबन्दी से संबंधित शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु अपेक्षित कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करेगें। जनपद के समस्त अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद/पंचायत अपने अपने क्षेत्रांतर्गत पड़ने वाले कोतवाल/थाना में समाधान दिवस पर उपस्थित रहकर संबंधित शिकायतों के निस्तारण हेतु करर्यववाही किया जाना सुनिश्चित करेगें। उन्होने कहा कि सभी अधिकारियों को यह भी निर्देश दिये गये हैं कि समाधान दिवस में उनकी उपस्थिति शत-प्रतिशत रहे अन्यथा की दशा में उनके विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी। उन्होनें कहा कि उक्त थाना दिवसों में गत थाना दिवस मे प्राप्त शिकायतों की संख्या, निस्तारित, अनिस्तारित, निस्तारित शिकायतों की फीडबैक एवं विभाग की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जाये।

गुरुग्राम: फर्जी कॉल सेंटर बना अमेरिका के लोगों से ठगी करने वाला गिरोह काबू

अकाउंटिंग कंपनी की फर्जी वेबसाईट बनाकर तकनीकी सहायता के नाम पर करते थे ठगी

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम। अमेरिका (यूएसए) के लोगों को फर्जी कॉल सेंटर से अकांउंटिंग कंपनी की फर्जी वेबसाइट बनाकर तकनीकी देने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह का पुलिस ने भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने मौके से 8 लड़कियों समेत 18 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से 17 सीपीयू भी बरामद किए गए हैं।

थाना साइबर अपराध दक्षिण पुलिस टीम को विश्वसनीय सूत्रों के माध्यम से सूचना मिली थी कि उद्योग विहार फेज-2 के प्लॉट नंबर-270 में अवैध/फर्जी तरीके से कॉल सेंटर चलाकर यूएसए के नागरिकों से ठगी की जाती है। यह ठगी कस्टमर सर्विस देने के नाम पर होती है। सहायक पुलिस आयुक्त साइबर अपराध प्रियांशु दीवान ने गुरुवार को बताया कि बताए स्थान पर छापा मारा गया। इस दौरान वहां कॉल सेंटर फर्जी/अवैध तरीके से संचालित होना पाया गया। तहकीकात में पता चला कि यहां से विदेशी नागरिकों को तकनीकी सहायता देने के नाम पर धोखाधड़ी करके ठगी की जाती है। मौके से कॉल सेंटर के मैनेजर व आठ लड़कियों सहित 18 आरोपियों को काबू किया गया।

कई राज्यों के युवा फर्जी कॉल सेंटर में करते थे काम

पुलिस टीम द्वारा कॉल सेंटर से काबू किए गए आरोपियों की पहचान गौरव बक्शी निवासी जग्गी कॉलोनी (अंबाला), देवाशीष चटर्जी निवासी उत्तम नगर (दिल्ली), अनमोल निवासी सेक्टर-15 रोहिणी (दिल्ली), कनिष्क नरूला निवासी करोल बाग (दिल्ली), अजीश मैथ्यू निवासी सेक्टर-84 (फरीदाबाद), कुणाल निवासी पटना (बिहार), देवेंद्र देवगन निवासी समता कॉलोनी भिलाई (छत्तीसगढ़), हितेश मलिक निवासी जेजे कॉलोनी उत्तम नगर (दिल्ली), रोहित सिंह निवासी सीमापुरी (दिल्ली), आर्यमन ठाकुर निवासी कांगड़ा (हिमाचल-प्रदेश), निधि निवासी उत्तम नगर (दिल्ली), सीता निवासी जेडीए कॉलोनी जयपुर (राजस्थान), मुस्कान राजपूत निवासी हेडगवार कॉलोनी जिला रायसीना (मध्य-प्रदेश), भावना निवासी सेक्टर-7 रोहिणी (दिल्ली), शिवानी निवासी लंका कॉलोनी जिला बरन (राजस्थान), लहींगनेहट हायकिप निवासी गांव सीलन बांगफाजोल चुराचंदपुर (मणिपुर), शरोन व नगमथिंगचों निवासी गांव नगीमू जिला उखरुल (मणिपुर) के रुप में हुई। पुलिस द्वारा आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत थाना साईबर अपराध दक्षिण में केस दर्ज करके गिरफ्तार किया गया। पुलिस पूछताछ में पता चला कि आरोपी गौरव बक्शी इस कॉल सेंटर का मैनेजर है। वह अपने साथियों/कर्मचारियों के साथ मिलकर अपने अन्य साथी की कहने पर इस कॉल सेंटर को चलाता है। कॉल सेंटर मैनेजर को लगभग 1.5 लाख रुपये तथा अपने अन्य कर्मचारियों को प्रतिमाह लगभग 30 हजार रुपए वेतन मिलता था।

फरवरी-2024 से कर रहे थे ठगी का यह काम

मैनेजर ने खुलासा किया कि वह फरवरी-2024 से अपने साथियों के साथ मिलकर यह काम कर रहा है। ये लोग विदेशी मूल के नागरिकों को सॉफ्टवेयर सपोर्ट, अकाउंटिंग सपोर्ट की कस्टमर केयर सर्विस प्रदान करने के नाम पर ठगी करते है। गूगल पर एक नामी कंपनी के कस्टमर केयर हेल्पलाइन नंबर से एड चलवाते थे।

वेतन मांगने पर कुत्तों से कटवाने का आरोप

मोदीनगर। निवाड़ी थानाक्षेत्र के गांव सौंदा में युवक ने वेतन मांगने पर मारपीट करने और फिर कुत्तों से कटवाने का आरोप लगाया है। पीड़ित के परिजनों ने निवाड़ी थाने में तहरीर दी है। पुलिस जांच के बाद कार्रवाई की बात कह रही। विजयनगर कॉलोनी निवासी राजकुमार नगर पालिका द्वारा संचालित कान्हा गौशाला में दो माह से मजदूरी कर रहा। आरोप है कि बुधवार को जब उसने सुपरवाइजर से वेतन मांगा तो वह भड़क उठा। सुपरवाइजर राजकुमार को निवाड़ी थानाक्षेत्र के गांव सौंदा ले गया और वहां लाठी-डंडों से पिटाई की। आरोप है कि उसने कुत्ते भी छोड़ दिए, जिस कारण वह घायल हो गया। पीड़ित किसी तरह से वहां से जान बचाकर घर पहुंचा। पीड़ित के पिता रामपाल सिंह ने थाने में तहरीर दी है। वहीं, नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी ने ऐसी किसी प्रकार की जानकारी होने से इनकार कर दिया।

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में एक गोष्ठी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी नौशाद हुसैन ने जानकारी देते हुए कहा कि 18 दिसम्बर 2024 को अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में एक गोष्ठी का आयोजन विकास भवन के सभागार मे मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया। गोष्ठी का आरम्भ जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी द्वारा किया गया। गोष्ठी में जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी द्वारा विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का विस्तार से अवगत कराते हुए मदरसों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिये जाने के सम्बधं में विचार प्रकट किये गये। आयोजित गोष्ठी मे गणमान्य व्यक्तियो द्वारा प्रतिभाग किया गया। गोष्ठी मे उपस्थित व्यक्तियों द्वारा अपने-अपने विचार प्रकट किये गये। प्रधानाचार्य जामियातुल मुन्तजर नौगावा सादात श्री कुरातुलेन मुजतबा द्वारा कहा गया कि अल्पसंख्यक अधिकार दिवस हमारा हक का दिन है, अगर कोई समस्या किसी अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों को होती है तो उसके लिये सरकार ने आयोग का गठन कर रखा है, जिसके रहते किसी अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्ति का शोषण न हो। गोष्ठी में उपस्थित महताब अमरोही द्वारा कहा गया कि सरकार द्वारा संचालित मदरसा आधुनिकीकरण योजना वर्तमान में बन्द है जिसके अन्तर्गत अध्यापकों का लगभग पाँच वर्षों का मानदेय लम्बित बताते हुए अपने विचार प्रकट किये गये। गोष्ठी मे मदरसा दारूल उलूम सैयदुल मदारिस अमरोहा के प्रधानाचार्य रजी काजिम तकी, व मदरसा दारूल उलूम इस्लामिया अरबिया चिल्ला के प्रधानाचार्य मौ० मुन्सिफ, द्वारा कहा गया कि अनुदानित मदरसो मे परिषदीय स्कूल की भांति ड्रेस, मिडे-मिल व एन०सी०ई०आर०टी० की पुस्तकें आदि की सुविधा पूर्ण तरह से दी जाये तो मदरसों में शिक्षा का स्तर उच्च कोटि का हो जायेगा जिस पर मुख्य विकास अधिकारी अमरोहा द्वारा उपरोक्त समस्याओं का निस्तारण नियमानुसार किये जाने का आश्वासन दिया गया। तदोपरान्त गोष्ठी मे उपस्थित सभी व्यक्तियों का अभार प्रकट करते हुये गोष्ठी का समापन राष्ट्रगान से हुआ। गोष्ठी मे विभाग के अधिकारी सरिता द्विवेदी, पुनीत कुमार, नौशाद हुसैन, व अलका चौधरी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे, गोष्ठी का संचालन मेहताब अमरोही द्वारा किया गया।

दबंगों ने महिला और बुजुर्ग के साथ की मारपीट, सीसीटीवी आया सामने

गाजियाबाद। गाजियाबाद के ट्रॉनिका सिटी थाना इलाके से मारपीट का एक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में कुछ दबंग एक महिला और एक बुजुर्ग के साथ मारपीट करते दिखाई दे रहे हैं। पहले इन्होंने महिला और बुजुर्ग को सड़क पर पीटा और उसके बाद उनके घर के अंदर घुसकर भी मारपीट की।

इस मामले में पीड़ित परिवार ने पुलिस से शिकायत करते हुए कार्रवाई की मांग की है। पीड़ित परिवार ने दबंगों से अपनी जान को खतरा भी बताया है। उन्होंने पुलिस को दी शिकायत में गुहार लगाई है कि आरोपियों पर कार्रवाई करके इंसाफ दिलवाएं। पीड़ित योगेंद्र सिंह नेगी पिछले कई सालों से लोनी के रामपार्क एक्सटेंशन में रहते हैं।

उन्होंने पुलिस को दी शिकायत में बताया है कि वह 25 साल से रामपार्क एक्सटेंशन में रह रहे हैं। आज तक किसी से कोई विवाद नहीं हुआ था। इनके बगल वाले घर के सामने रामकुमार मालिया नाम का एक डॉक्टर रहता है। जो अपने घर के अंदर ही अस्पताल और क्लीनिक चलाता है। दोनों घरों के बीच में 20 फुट रोड है। रामकुमार मालिया आए दिन उनके परिजनों से साफ-सफाई को लेकर बहस और गाली-गलौज करता है।

पीड़ित ने बताया कि जब उसकी पत्नी बाहर साफ-सफाई करती है तो आरोपी उन पर गंदी नजर रखता है और अपशब्दों का प्रयोग करता है। पीड़ित के मुताबिक उसने जब इसकी शिकायत पुलिस के आलाधिकारियों से की तो सीसीटीवी लगवाने और आरोपी की हरकतों को रिकॉर्ड करके सूचित करने की सलाह दी गई थी। पीड़ित ने बताया कि 15 दिसंबर को दबंगों ने उनकी पत्नी और बुजुर्ग पिता के साथ मारपीट की, जो सीसीटीवी में रिकॉर्ड हो गई। फिलहाल, पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सूटकेस में मिले बच्चे के शव के मामले में हत्या की रिपोर्ट दर्ज

मोदीनगर। गंगनहर के किनारे झाड़ियों में सूटकेस में बंद मिले छह साल के बच्चे की शिनाख्त पुलिस तीन दिन बाद भी नहीं कर पाई है। इस मामले में चौकीदार की तहरीर पर निवाड़ी थाने में अज्ञात के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस का दावा है कि जल्द मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। गंगनहर पटरी पर गंगनहर पुलिस चौकी से महज दो सौ मीटर दूरी पर सूटकेस में बंद छह साल के बच्चे का शव पड़ा मिला था। आशंका जताई जा रही है कि हत्या किसी अन्य स्थान पर करके शव को सूटकेस में रखा गया। सूटकेस को नहर में फेंकने के इरादे से फेंका गया था। लेकिन सूटकेस झाड़ियों में अटका गया। तीन दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस बच्चे के शव की शिनाख्त नहीं कर पाई है। पुलिस की पांच टीम शिनाख्त के प्रसास कर रही है। एनसीआर व मेरठ मंड़ल के आथोर्पेडिक सर्जन व हड्डी का इलाज करने वाले जर्रा ,हकीमों से बच्चे की शिनाख्त करने का प्रयास करने में लगी है। मृतक के हाथ पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था और उसे दो सप्ताह पहले ही कराया गया था। एसीपी मोदीनगर ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि गांव अबूपुर के चौकीदार तोसिफ की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। घटना के खुलासा जल्द कर दिया जाएगा।

गुरुग्राम में राज्य स्तरीय सुशासन दिवस की तैयारियां शुरू

मुख्य सचिव की बैठक में शामिल हुए उपायुक्त

गुरुग्राम। गुरुग्राम में 25 दिसंबर को आयोजित होने वाले सुशासन दिवस कार्यक्रम के लिए जिला प्रशासन की ओर से तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। इस आयोजन को लेकर वीडियो कांफ्रेंस से हरियाणा के मुख्य सचिव विवेक जोशी ने बैठक की। उन्होंने बताया कि 25 दिसंबर को गुरुग्राम में सुशासन दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहेंगे। जिला प्रशासन की ओर से कार्यक्रम की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। मुख्य सचिव विवेक जोशी ने कहा कि इस अवसर पर जिला स्तर और प्रदेश स्तर पर सुशासन पुरस्कार भी दिए जाएंगे। इसलिए इन पुरस्कारों के योग्य कर्मचारियों, अधिकारियों या उनकी टीम का चयन शीघ्र कर लिया जाए। प्रदेश स्तर पर दिए जाने वाले पुरस्कारों के लिए चंडीगढ़ में कमेटी गठित की गई है। उन्होंने बताया कि सुशासन दिवस कार्यक्रम पूरी गरिमा के साथ आयोजित किया जाए। उपायुक्त ने बताया कि शुक्रवार को सुशासन दिवस कार्यक्रम को लेकर अधिकारियों की बैठक आयोजित की जाएगी। जिसमें मुख्य सचिव के निदेर्शानुसार इस कार्यक्रम की रूपरेखा को तैयार किया जाएगा। इस अवसर पर जनवरी माह से सरकारी कार्यालयों में शुरू किए जाने वाले स्वच्छता अभियान को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया। कांफ्रेंस में उपायुक्त के साथ एडीसी हितेश कुमार मीणा, एसडीएम रविंद्र कुमार, नगराधीश कुंवर आदित्य विक्रम भी मौजूद रहे।

गुरुग्राम में वर्क फ्रॉम होम की एडवाइजरी जारी, स्कूलों के लिए भी नए निर्देश लागू

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम। गुरुग्राम में बढते प्रदूषण के चलते स्कूलों में लगाई जाने वाली क्लासों के लिए शिक्षा विभाग ने नए आदेश जारी कर दिए हैं तो वहीं गुरुग्राम जिला प्रशासन ने सभी प्राइवेट कंपनियों को वर्क फ्रॉम होम करने की एडवाइजरी जारी की है। गुरुग्राम और दिल्ली एनीसआर में प्रदूषण एक बार फिर से खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है जिसकी वजह से पूरे दिल्ली एनसीआर में ग्रैप 4 लागू कर दिया गया है। जिसके मद्देनजर ये आदेश जारी किए गए हैं।

एनसीआर क्षेत्र में प्रदूषण के बढ़ते स्तर व सीएक्यूएम द्वारा लागू ग्रैप के चौथे चरण के दृष्टिगत उच्च शिक्षा विभाग के निदेशक ने गुरूग्राम के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में 21 दिसंबर तक हाइब्रिड मोड में कक्षाएं संचालित करने के निर्देश दिए हैं। निदेशक द्वारा जारी आदेशों में जिला के सभी राज्य और निजी विश्वविद्यालयों के रजिस्ट्रार, सरकारी कॉलेजों, सरकारी सहायता प्राप्त व स्व-वित्तपोषित कॉलेजों के प्रिंसिपल को निर्देश दिए गए हैं कि वे आदेशों के अनुपालन में, सभी कक्षाएं हाइब्रिड मोड में संचालित करवाएं। जारी आदेशों में कहा गया है कि जिला में जहां भी ऑनलाइन मोड संभव हो, वहां भौतिक रूप में और साथ ही ऑनलाइन मोड में भी कक्षाएं संचालित की जाएंगी। ऑनलाइन शिक्षा मोड का उपयोग करने का विकल्प, जहां भी उपलब्ध हो, छात्रों और उनके अभिभावकों के अनुसार होगा। इ9वीं और 11वीं तक आगामी आदेशों तक हाइब्रिड मोड में संचालित की जाएं कक्षाएं हरियाणा के स्कूल शिक्षा विभाग के निदेशक ने भी इस संबंध में जिला के सभी सरकारी और निजी स्कूलों के प्रमुखों को आदेश दिए हैं कि वे आगामी आदेशों तक कक्षा 9वीं और 11वीं तक के बच्चों के लिए स्कूलों में हाइब्रिड मोड में कक्षाएं संचालित करें, यानी भौतिक और ऑनलाइन दोनों मोड में (जहां भी ऑनलाइन मोड संभव हो)। बता दें कि डीसी अजय कुमार के दिशा निर्देशन में जिला में ग्रैप 4 के तहत सभी पाबंदियों को सख्ती से लागू किया जा रहा है। जिला में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को नियंत्रित करने के उद्देश्य से सभी निजी संस्थानों में वर्क फ्रॉम होम (वर्क फ्रॉम होम) की एडवाइजरी जारी की गई है। वहीं सभी सरकारी व निकाय कार्यालयों के आफिस टाइमिंग में भी बदलाव किया गया है। इसके साथ साथ फील्ड संबंधी अन्य पाबंदियों को लागू करने के दृष्टिगत संबंधित विभागों को भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए हैं।

उप्र कांग्रेस कार्यकर्ता के अंतिम संस्कार में अफरा तफरी; अजय राय के खिलाफ नारेबाजी

प्रात : किरण संवाददाता

गोरखपुर। लखनऊ में विरोध प्रदर्शन के दौरान मारे गए 28 वर्षीय कांग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडे का बृहस्पतिवार को गोरखपुर में उसके पैतृक गांव में अंतिम संस्कार किए जाने के दौरान उस समय अफरा-तफरी फैल गई जब प्रदेश कांग्रेस प्रमुख अजय राय की मौजूदगी पर लोगों ने नाराजगी जाहिर की।

प्रत्यक्षदर्शियों ने यह जानकारी दी। स्थानीय लोगों ने अजय राय वापस जाओ, हत्यारे दल वापस जाओ और राहुल गांधी मुदार्बाद, प्रियंका गांधी मुदार्बाद जैसे नारे लगाए जिसके बाद तनाव बढ़ने पर पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा।

प्रभात के पड़ोसी निखिलेश ने बताया कि प्रभात के शव को अंतिम संस्कार से पहले उसके घर लाया गया जिससे परिवार में कोहराम मच गया। उसके शोकाकुल पिता दीपक पांडे ने कहा, यह मेरे कर्मों का फल है। मेरा इकलौता बेटा चला गया।

अंतिम संस्कार स्थल पर उसकी मां बेहोश हो गई।

निखिलेश ने बताया कि जब अजय राय ने श्रद्धांजलि देने का प्रयास किया तो स्थिति और बिगड़ गई। गुस्साए ग्रामीणों ने उन पर राजनीतिक लाभ के लिए इस त्रासदी का फायदा उठाने का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारियों ने चिल्लाते हुए कहा, यहां कोई ड्रामा नहीं और राय को चिता के पास जाने से रोक दिया।

भीड़ को शांत करने के प्रयास में राय ने अपना जनेऊ दिखाया और कहा, मैं भी ब्राह्मण हूं, सच्चा 24 कैरेट का। अन्य कांग्रेस नेताओं की लगातार अपील के बाद उन्हें अनिच्छा से श्रद्धांजलि देने की अनुमति दी गई।

बुधवार को प्रभात की मौत को लेकर उठे विवाद ने राजनीतिक तनाव को और गहरा कर दिया है। शुरूआती पोस्टमार्टम रिपोर्ट में दिल का दौरा पड़ने का हवाला दिया गया है, लेकिन प्रभात के परिवार को साजिश का संदेह है। परिवार ने प्रभात की मौत की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

उसके चाचा मनीष पांडे की शिकायत के आधार पर लखनऊ के हुसैनगंज थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या संबंधी एफआईआर दर्ज की गई है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खड़गे समेत कांग्रेस नेताओं ने इस घटना की कड़ी निंदा की है।राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, उत्तर प्रदेश में एक बार फिर लोकतंत्र और संविधान की हत्या हुई है। कांग्रेस के बहादुर शेर अपनी लड़ाई जारी रखेंगे।

अजय राय ने सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा, यह मौत नहीं, बल्कि हत्या है। प्रभात ने अपने साथियों को बताया था कि पुलिस ने उसे पीटा जिससे वह बेहोश हो गया। प्रभात, जो युवा कांग्रेस का सक्रिय सदस्य था, लखनऊ में अपने चाचा के साथ रहता था और कंप्यूटर कोर्स कर रहा था। उसके चाचा मनीष पांडे ने सवाल उठाया था, ह्यअगर प्रभात कांग्रेस कार्यालय में दो घंटे तक बेहोश रहा, तो उसे पहले अस्पताल क्यों नहीं ले जाया गया?

उत्तर प्रदेश विधानसभा के पास कांग्रेस के प्रदर्शन में शामिल पार्टी के कार्यकर्ता प्रभात की बुधवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। पार्टी ने ह्यपुलिस बर्बरताह्न के कारण कार्यकर्ता की मौत होने का दावा किया है। वहीं, इस मामले में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ हत्या् का मुकदमा दर्ज किया गया है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि गोरखपुर निवासी 28 वर्षीय प्रभात पांडे को कांग्रेस कार्यालय से अस्पताल में मृत अवस्था में लाया गया था।

विधानसभा की वोटर लिस्ट के आधार पर ही तैयार होंगी मतदाता सूचियां: धनपत सिंह

- निगम चुनाव में महिलाओं के लिए बनाए जाएं स्पेशल पिंक बूथ
- राज्य चुनाव आयुक्त धनपत सिंह ने नगर निगम चुनाव तैयारियों की समीक्षा की

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम। राज्य चुनाव आयुक्त धनपत सिंह ने कहा कि नगर निकाय चुनाव में मतदाता सूची तैयार करने और नए बूथ बनाए जाने के कार्य में पूर्ण पारदर्शिता होनी चाहिए। जिस वोटर का नाम विधानसभा सूची में होगा, उसी को नगर निगम या नगर परिषद की मतदाता सूची में शामिल किया जाएगा। राज्य चुनाव आयुक्त गुरुवार को रेस्ट हाऊस में निकाय चुनाव के लिए प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जिला के गुरुग्राम, मानेसर नगर निगम, पटौदी हेलीमंडी व फर्रुखनगर नगरपालिका के चुनाव करवाए जाने हैं। इन चारों निकाय ईकाईयों की मतदाता सूची तैयार करने के लिए बीएलओ अपना कार्य ईमानदारी से करें। उन्होंने कहा कि इस बार निकाय चुनाव में महिलाओं के लिए स्पेशल पिंक बूथ बनाए जाएं, जहां महिला कर्मचारी ही ड्यूटी पर होंगी। इसी प्रकार कहीं एससी वर्ग या किसी विशेष समाज के लोग अपने लिए स्पेशल बूथ बनाने का अनुरोध करते हैं तो उस पर भी विचार किया जाना चाहिए।

चुनाव आयुक्त ने बैठक में ईवीएम की मांग और उसके रख-रखाव के बारे में भी अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता प्रबंध होने चाहिए। इस बारे में पुलिस विभाग का सहयोग लिया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि निकाय चुनाव में उसी मतदाता को वोट डालने का अधिकार होगा, जिसका नाम क्षेत्र की विधानसभा सूची में दर्ज है। संबंधित अधिकारी दावे और आपत्तियों का निपटान समय पर करें। उन्होंने कहा कि यह प्रयास किया जाए कि सभी मतदान केंद्र सरकारी भवनों में स्थापित किए जाएं।

गुरुग्राम नगर निगम क्षेत्र में हैं 870 बूथ

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त अजय कुमार ने बताया कि गुरुग्राम नगर निगम में 870 बूथ हैं। यहां 36 वार्डों में 8 लाख 65 हजार 149 वोटर हैं। इसी प्रकार मानेसर नगर निगम में 96 हजार 241 मतदाता हैं। यहां 20 वार्डों में 95 मतदान केंद्र हैं। फर्रुखनगर नगरपालिका में 14 वार्डों में 16 हजार मतदाता तथा 16 बूथ बने हुए हैं। पटौदी हेलीमंडी नगरपालिका में 40 हजार मतदाता हैं और यहां 22 वार्डों में 45 बूथ बनाए गए हैं। उन्होंने बताया कि गुरुग्राम, मानेसर, पटौदी हेलीमंडी व फर्रुखनगर में निकाय चुनाव के लिए 23 दिसंबर तक मतदाताओं से दावे और आपत्तियां आमंत्रित किए गए हैं। पुनरीक्षण अधिकारियों द्वारा 27 दिसंबर तक इनका निपटारा किया जाएगा। इसके बाद कोई वोटर अधिकारी के निर्णय से संतुष्ट नहीं है तो वह 31 जनवरी तक उपायुक्त के समक्ष अपील कर सकता है।

सम्पादकीय

धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिताः असमानता और अन्याय को दूर करने की औषधि

धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता, जिसे समान नागरिक संहिता के रूप में भी जाना जाता है, सभी नागरिकों के लिए, चाहे उनकी धार्मिक सम्बद्धता कुछ भी हो, व्यक्तिगत मामलों-जैसे विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और संपत्ति के अधिकार-को नियंत्रित करने वाले कानूनों का एक ही सेट प्रस्तावित करती है। भारत वर्तमान में हिंदू कानून, मुस्लिम कानून (शरिया) और ईसाई कानून सहित धर्म पर आधारित कई व्यक्तिगत कानूनों के तहत काम करता है। धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता का उद्देश्य इन विविध कानूनी प्रणालियों को एक समान संहिता से बदलना है जो सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू हो। इसका लक्ष्य विभिन्न समुदायों में और उनके भीतर कानूनी एकरूपता प्राप्त करना है, जिससे पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकार और सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44 में उल्लिखित राज्य नीतियों के निर्देशक सिद्धांत में यह प्रावधान है कि ह्लराज्य पूरे भारत में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा। ह्ल हालाँकि, एक निर्देशक सिद्धांत होने के कारण, यह न्यायोचित नहीं है। समान नागरिक संहिता उदार विचारधारा से जुड़ी है और उदार-बौद्धिक सिद्धांतों के अंतर्गत आती है। अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता), 15 (भेदभाव का निषेध) और 21 (व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता के अंतर्निहित सिद्धांतों का समर्थन करते हैं... भारत में वर्तमान में पूरे देश में धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता लागू नहीं है। इसके बजाय, अलग-अलग समुदायों के लिए विवाह, तलाक, विरासत और गोद लेने जैसे मुद्दों को नियंत्रित करने वाले व्यक्तिगत कानून धर्म के अनुसार अलग-अलग होते हैं। प्रधानमंत्री ने एक धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता की वकालत की है, जो डॉ. अंबेडकर के एकीकृत कानूनी ढांचे के दृष्टिकोण को प्रतिध्वनित करती है। इस आह्वान का उद्देश्य मौजूदा कानूनों के कथित सांप्रदायिक और भेदभावपूर्ण पहलुओं को सम्बोधित करना और कानूनी प्रणाली को एकीकृत करना है। सुप्रीम कोर्ट ने देश को धार्मिक आधार पर विभाजित करने वाले कानूनों को खत्म करने के लिए एक धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता की आवश्यकता पर जोर दिया है। हिंदू कोड बिल सिखों, जैनियों और बौद्धों सहित हिंदुओं के लिए व्यक्तिगत कानूनों को संहिताबद्ध और एकीकृत करने के लिए पेश किया गया। गोवा में गोवा सिविल कोड (पुर्तगाली सिविल कोड 1867) के तहत एक समान नागरिक संहिता है, जो धर्म या जातीयता की परवाह किए बिना सभी गोवावासियों पर समान रूप से लागू होती है। उत्तराखंड ने हाल ही में उत्तराखंड समान नागरिक संहिता विधेयक 2024 पारित किया है, जो अनुसूचित जनजातियों को छोड़कर सभी निवासियों पर लागू विवाह, तलाक और विरासत जैसे मामलों के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू करता है। समान नागरिक संहिता असमानता को बनाए रखने वाले पुराने व्यक्तिगत कानूनों को हटाकर धर्मनिरपेक्षता को बनाए रखेगी। यह सभी नागरिकों के लिए समान कानूनी उपचार सुनिश्चित करता है, चाहे वे किसी भी धर्म के हों, एक एकीकृत कानूनी ढांचे को बढ़ावा देता है जो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। समान नागरिक संहिता व्यक्तिगत कानूनों में निहित भेदभावपूर्ण प्रथाओं को समाप्त करेगी, विशेष रूप से महिलाओं को प्रभावित करने वाली प्रथाओं को। नागरिक कानूनों को मानकीकृत करके, यह सभी के लिए समान अधिकारों और सुरक्षा की गारंटी देगा, सामाजिक न्याय को आगे बढ़ाएगा। यहाँ तक कि एक धर्म के भीतर भी, इसके सभी सदस्यों को नियंत्रित करने वाला एक भी सामान्य व्यक्तिगत कानून नहीं है। उदाहरण के लिए, मुसलमानों के बीच विवाह के पंजीकरण के लिए, कानून जगह-जगह अलग-अलग होते हैं। समान नागरिक संहिता विवाह, तलाक और उत्तराधिकार जैसे नागरिक मामलों पर केंद्रित है, जिसमें धार्मिक प्रथाओं को अछूता रखा गया है। यह दृष्टिकोण अन्य लोकतंत्रों में प्रथाओं के साथ संरेखित है जहाँ धार्मिक स्वतंत्रता के साथ एक समान कानूनी ढांचा मौजूद है। समान नागरिक संहिता भारत के कानूनी ढांचे को सुव्यवस्थित और आधुनिक बनाएगी, जटिल और असंगत व्यक्तिगत कानूनों को सरलीकृत प्रणाली से बदल देगी। इससे कानूनी अनिश्चितता कम होगी और कानूनी खामियों का फायदा उठाने से रोका जा सकेगा। उदाहरण के लिए, सरला मुद्गल बनाम भारत संघ के मामले ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे व्यक्ति कानूनी प्रतिबंधों को दरकिनार करने के लिए व्यक्तिगत कानूनों में अंतर का फायदा उठा सकते हैं।

तो आईआईटी तक कैसे पहुंचेंगे विद्यार्थी

पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब .... लेकिन जनाब हमारे देश में तो स्कूल बढ़ने की बजाए घट रहे हैं। ये भी दिलचस्प बात है कि केन्द्र सरकार ने उच्च शिक्षा के लिए आईआईटी, आईआईआईटी और आईआईएम जैसे नए संस्थान खोले हैं लेकिन जब तक स्कूली शिक्षा ही पूरी नहीं होगी तो विद्यार्थी यहां तक पहुंचेंगे कैसे। पिछले एक दशक में देश में जितना कर्ज बढ़ा उसके मुकाबले उतना विकास नहीं हुआ। हां, कभी गौ तस्करी तो कभी लव जेहाद या फिर मंदिर के नीचे मस्जिद ढूंढने में कतिपय लोगों की उर्जा जरूर खर्च हुई। लोग सरकार से रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी बुनियादी और जरूरी सहुलियतों की अपेक्षा करते हैं और ये सहुलियतें उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी भी है फिर चाहे सरकार किसी भी पार्टी की ही क्यों ना हो। जिस तरह से नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में बतौर मुख्यमंत्री काम किया था उससे उनके प्रति अपेक्षाएं भी ज्यादा थी और यही वजह थी कि लोगों ने देश की बागडोर उनके हाथों में सौंपी। अब, एक लंबा समय गुजर चुका है और यही वजह है कि मोदी सरकार ने किस क्षेत्र में कितना काम किया इसकी चर्चा होने लगी है। जहां तक शिक्षा का सवाल है तो मोदी सरकार में शिक्षा का बजट तो बढ़ा है लेकिन उतना नहीं जितनी उम्मीद थी। पिछले एक दशक में शिक्षा पर खर्च 30 हजार करोड़ रुपए बढ़ा है। हैरत की बात तो ये है कि देश में स्कूल बढ़ने की बजाए कम हो गए हैं। मोदी सरकार के पहले देश में 15 लाख 18 हजार स्कूल थे जो घटकर 14 लाख 89 हजार हो गए। देश में अभी भी करीब तीस प्रतिशत महिलाएं और 15 प्रतिशत पुरूष अनपढ़ है। दस में से 6 लड़कियां दसवीं से ज्यादा नहीं पढ़ पा रही हैं। वहीं दस से पांच पुरूष ऐसे हैं जो दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़ रहे हैं। स्कूली शिक्षा में भले ही सुधार नहीं हुआ हो लेकिन हायर एजुकेशन में थोड़ा सुधार हुआ है। विश्विद्यालयों की तादाद 11 सौ से ज्यादा हो गई है। इधर, जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे तब शुरूआती आठ सालों में 202 केन्द्रीय विद्यालय थे जबकि मोदी के कार्यकाल में आठ सालों में 159 केवी ही बनाए गए। अप्रैल 2022 तक कुल 1249 केन्द्रीय विद्यालय थे। 2014-15 से 2021-22 के बीच मोदी के कार्यकाल में 159 केवी बनाए गए यानि तब हर साल 20 स्कूल शुरू हुए। दूसरी तरफ, 2004-05 से 2011-12 तक मनमोहन कार्यकाल के शुरूआती आठ साल में 202 स्कूल शुरू हुए यानि हर साल 25 से ज्यादा स्कूल शुरू हुए। हालांकि, हाल ही में मोदी सरकार ने नए केवी खोलने को लेकर मंजूरी दी है। यहां ये बताना लाजमी होगा कि केन्द्रीय विद्यालय में प्रवेश के लिए केन्द्र सरकार ने सांसद कोटा खत्म कर दिया है। इस कोटे के जरिए हर सांसद केन्द्रीय विद्यालय में प्रवेश के लिए 10 नामों की सिफारिश कर सकते थे। मार्च 2022 में कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने लोकसभा में ये मसला उठाया था। उन्होंने या तो कोटा बढ़ाने या खत्म करने की बात कही थी और सरकार ने इस कोटे को खत्म करने का फैसला लिया था। भले ही स्कूली शिक्षा की ओर सरकार का ध्यान कम हो लेकिन उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पूरा जोर लगाया जा रहा है। वर्ष 2014 के बाद से उच्च शिक्षा के नए संस्थान स्थापित किए गए हैं जिनमें 7 आईआईटी, 16 आईआईआईटी, 7 आईआईएम, 15 एम्स और 390 विश्वविद्यालय शामिल हैं। अहम सवाल ये है कि जब तक गरीब और मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की स्कूली शिक्षा पूरी नहीं हो पाएगी तो विद्यार्थी इन उच्च शिक्षा संस्थानों तक कैसे पहुंच पाएंगे। जहां तक आर्थिक मोर्चे का सवाल है तो पीएम मोदी के कार्यकाल में बेरोजगारी, नोटबंदी और आधे-अधूरे तरीके से गुड्स एंड सर्विस टैक्स (जीएसटी) व्यवस्था लागू करने जैसे आरोप विपक्ष लगाता रहा है। वहीं भाजपा का कहना है कि कांग्रेस राज में टेलीकॉम और कोयला घोटाले सहित कई घोटाले सामने आ चुके हैं। इसके अलावा जब पूरी दुनिया कोविड महामारी से गुजर रही थी तब भी मोदी सरकार ने न सिर्फ दुनिया के दूसरे देशों की भी मदद की बल्कि भारत की अर्थ व्यवस्था को थामें रखा। मोदी सरकार के अब तक कार्यकाल में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का जीडीपी नीचे आया है।

कोई बताए तो सही कि क्या कमी है एक देश एक चुनाव में

इस पर हर स्तर पर खुल कर ईमानदारी से चर्चा होनी चाहिए। उसके बाद ही किसी अंतिम निर्णय पर पहुंचा जाना चाहिए। अगर इसे भाजपा या मोदी जी के किसी एंजेडे के रूप में देखा गया तो यह सही नहीं होगा। अभी तक जो विपक्षी नेता ह्यएक देश एक चुनावह्न के विचार का विरोध कर रहे हैं, उन्हें अपने दिल पर हाथ रखकर पूछना चाहिए कि क्या उन्हें बार-बार चुनावी रणभूमि में उतरना पसंद है? इससे लोकसभा, विधानसभा, नगर निकाय और पंचायत चुनाव सभी एक साथ होंगे। यह सब 100 दिनों के अंदर ही संपन्न होगा। सरकार का मानना है कि इससे देश की जीडीपी में 1-1.5 प्रतिशत की वृद्धि होगी। केंद्र सरकार इस मुद्दे पर आम सहमति बनाना चाहती है।

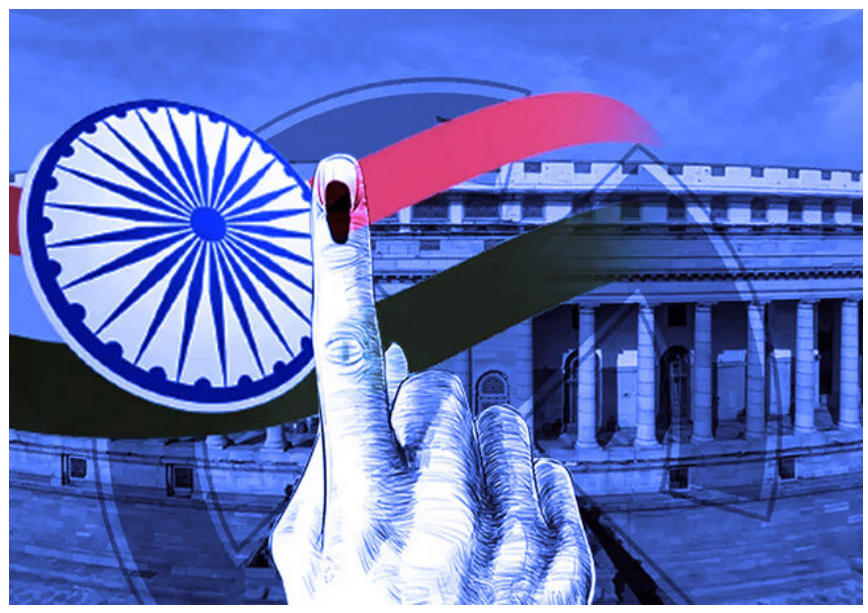

आर.के. सिन्हा
लेखक

एक देश एक चुनाव के सपने को साकार करने की तरफ देश बढ़ रहा है। बेशक,लगातार चुनाव देश की प्रगति में बाधा बन रहे हैं। भारत में ह्यएक देश-एक चुनावह्न का विचार एक ऐसा विषय है जिस पर अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राय है। कुछ लोगों का मानना है कि इससे देश को कई फायदे होंगे, वहीं कुछ लोग इसके कुछ नुकसान भी बताते हैं। पर ये सच है कि बार-बार चुनाव कराने में काफी पैसा खर्च होता है। एक साथ चुनाव कराने से इस खर्च को काफी हाद थे कम किया जा सके। चुनावों में सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षा बलों की भारी संख्या में तैनाती करनी पड़ती है। जाहिर है, बार-बार चुनाव होने से कामकाज में बाधा तो आती ही है साथ ही संसाधनों का भारी दुरुपयोग भी होता है। एक साथ चुनाव कराने से इस समस्या को दूर काफी हद तक कम किया जा सकता है। पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों के बाद सरकार एक देश- एक चुनाव की तरफ तेजी से बढ़ रही है। इससे लोकसभा, विधानसभा, नगर निकाय और पंचायत चुनाव सभी एक साथ होंगे। यह सब 100 दिनों के अंदर ही संपन्न होगा। सरकार का मानना है कि इससे देश की जीडीपी में 1-1.5 प्रतिशत की वृद्धि होगी। केंद्र सरकार इस मुद्दे पर आम सहमति बनाना चाहती है। यह मामला किसी एक दल का नहीं, बल्कि पूरे देश के हित में है। यह सबको पता है कि देश में बार-बार चुनाव होने से जनता और सरकारी अधिकारियों का समय और संसाधन बर्बाद होता है। एक साथ चुनाव कराने से यह सब नहीं होगा। एक साथ चुनाव होने से राजनीतिक स्थिरता में सुधार आएगा, क्योंकि सरकार को बार-बार चुनावों की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। इसके साथ ही एक साथ चुनाव होने से प्रशासन पर दबाव कम होगा और वे अपने काम पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाएंगे। तो आप कह सकते हैं कि ह्यएक देश, एक चुनावह्न से कई मसलों का हल हो जाएगा। चुनावों की अवधि कम हो जाने से, शासन और विकास कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकेगा। एक देश, एक चुनाव भाजपा और नरेंद्र मोदी का पुराना एजेंडा है। प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही मोदी जी इसकी वकालत करते रहे हैं। अपने दूसरे कार्यकाल में 2 सितंबर 2023 को कोविंद कमिटी बना कर उन्होंने पहला कदम बढ़ाया था। निश्चित रूप से बार-बार चुनाव होने से सरकारें नई नीतियों और योजनाओं को लागू करने में झिझकती हैं। एक साथ चुनाव होने से सरकारों को स्थिरता मिलती है और वे बेहतर ढंग से काम कर पाती हैं। एक बात और कि बार-बार चुनाव होने से राजनीतिक दल विकास के मुद्दों से भटक जाते हैं और चुनाव जीतने पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। एक साथ चुनाव होने से राजनीतिक दलों को विकास पर ध्यान केंद्रित करने का अधिक अवसर मिलता है। ह्यएक देश-एक चुनावह्न के विपक्ष में तर्क में कुछ पिलपिले तर्क आ रहे हैं। जैसे कि राष्ट्रीय चुनावों के साथ-साथ राज्यों के चुनाव होने से क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय दलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई हो सकती है। कुछ लोगों का मानना है कि एक साथ चुनाव कराने से लोकतंत्र कमजोर हो सकता है क्योंकि इससे राष्ट्रीय स्तर पर एक ही राजनीतिक दल का दबदबा हो सकता है। यह सब तर्क कमजोर हैं। दुनिया के कई देशों में अलग-अलग चुनाव व्यवस्थाएं हैं। कुछ देशों में एक साथ चुनाव होते हैं, जबकि कुछ देशों में अलग-अलग समय पर चुनाव होते हैं। स्वीडन, बेल्जियम और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में राष्ट्रीय और स्थानीय चुनाव एक साथ कराए जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में राष्ट्रीय और स्थानीय चुनाव अलग-अलग समय पर होते हैं। बहरहाल, एक देश-एक चुनाव से देश के आम जनमानस में राष्ट्र की अवधारणा सशक्त होगी। भारत में साल 1967 तक लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए चुनाव एक साथ ही होते थे। साल 1947 में आजादी के बाद भारत में नए संविधान के तहत देश में पहला आम चुनाव साल 1952 में हुआ था। उस समय राज्य विधानसभाओं के लिए भी चुनाव साथ ही कराए गए थे, क्योंकि आजादी के बाद विधानसभा के लिए भी पहली बार चुनाव हो रहे थे। उसके बाद साल 1957, 1962 और 1967 में भी लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ ही हुए थे। यह सिलसिला पहली बार उस वक़्त टूटा था जब केरल में साल 1957 के चुनाव में ईएमएस नंबूदरीबाद की वामपंथी सरकार बनी। साल 1967 के बाद कुछ राज्यों की विधानसभा जल्दी भंग हो गई और वहां राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया, इसके अलावा साल 1972 में होनेवाले लोकसभा चुनाव भी समय से पहले कराए गए थे। साल 1967 के चुनावों में कांग्रेस को कई राज्यों में विधानसभा चुनावों में हार का सामना करना पड़ा था। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे कई राज्यों में विरोधी दलों या गठबंधन की सरकार बनी थी। इनमें से कई सरकारें अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाईं और विधानसभा समय से पहले भंग हो गई थी। यह भी माना जा रहा है कि एक साथ चुनाव होने से मतदाता भागीदारी में वृद्धि हो सकती है क्योंकि लोगों को बार-बार मतदान करने की आवश्यकता नहीं होगी। कुल मिलाकर बात यह है कि ह्यएक देश एक चुनावह्न को दलगत आधार पर नहीं देखा जाना चाहिए।

अंबेडकर और अमित शाह का सेल्फ गोल!

यह सब बातें अपना असर कर ही रहीं थीं कि अमित शाह का यह बयान आ गया। सीधा अंबेडकर के खिलाफ। भाजपा के लिए यह बड़ी मुसीबत बन गई। कांग्रेस ने बुधवार को ही देशव्यापी प्रदर्शन किए। दलित राजनीतिक रूप से देश में सबसे जागरूक समुदाय है। उसमें एक बार यह बात पहुंच जाएगी कि भाजपा बाबा साहब का अपमान कर रही है तो फिर कांग्रेस और इंडिया गठबंधन को कुछ करने की जरूरत नहीं है। वह भाजपा से अपना हिसाब खुद कर लेगी। और आरक्षण का विरोध। राहुल ने लोकसभा में एक हाथ में संविधान और दूसरे में मनुस्मृति लेकर साफ कहा कि हम संविधान वाले हैं और बीजेपी मनुस्मृति वाली।

शकील अख़्तर
लेखक

वन नेशन वन इलेक्शन का हेडलाईन मैनेजमेंट एक दिन भी नहीं चल सका। भाजपा राहुल की पिच पर फंस गई। मंगलवार की सुबह सारे चुनाव एक साथ का बिल लोकसभा में पेश हुआ और उसी दिन शाम को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में यह कहकर कि एक नया फैशन चला है अंबेडकर अंबेडकर अंबेडकर . ..! अगर इतना नाम भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता। राहुल गांधी ने लपक कर इस बात को सही साबित कर दिया कि भाजपा के मन में डा. आंबेडकर और संविधान के लिए कोई सम्मान नहीं है। अमित शाह की टिप्पणी के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने, जिन्होंने एक दिन पहले संविधान पर बोलते हुए ही कहा था कि आरएसएस और भाजपा तिरंगे, अशोक चक्र और संविधान से नफरत करती है एक कदम और आगे बढ़ाते हुए कहा कि आंबेडकर से भी नफरत करती है। बुधवार को विपक्ष के सासंदों ने संसद परिसर में अमित शाह माफी मांगों के नारों के साथ प्रदर्शन किया। और उसके बाद अंदर जाकर दोनों सदनों में इस मांग को जोरदार तरीके से उठाया। मोदी सरकार के लिए यह बड़ी मुश्किल आ गई। अभी संविधान पर चर्चा के दौरान उनका सारा फोकस इस बात पर था कि कांग्रेस ने अंबेडकर को पर्याप्त सम्मान नहीं दिया। मगर अब उसके उपर ही बाबा साहब अंबेडकर के अपमान का सीधा आरोप आ गया है। अंबेडकर देश के 20 प्रतिशत दलितों के लिए वाकई भगवान का दर्जा रखते हैं। वह उनका संविधान ही है जिसने आरक्षण के जरिए उनके बड़े वर्ग को पीढ़ीगत काम से निकालकर शहरी मध्यम वर्ग बनाया। शिक्षा में वजीफा, उनके लिए अलग बनाए गए होस्टल, उच्च शिक्षा में आरक्षित सीटें और फिर नौकरी में आरक्षण ने 75 सालों में वह कर दिखाया जो पहले कोई सोच भी नहीं सकता था। इसके साथ लोकसभा, विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव में आरक्षण ने उन्हें राजनीतिक रुप से मजबूत बनाया। नौकरी के आरक्षण ने आर्थिक ताकत के साथ सामाजिक हैसियत और चुनाव प्रणाली में आरक्षण से सत्ता में भागीदारी दी। पांच हजार साल तक अछूत बने रहने वाले सारे मानवीय अधिकारों से वंचित देश के इस समुदाय के लिए बाबा साहब आंबेडकर भगवान नहीं तो और क्या हैं? कांग्रेस और समूचे विपक्ष को यह एक बहुत बड़ा मुद्दा मिल गया है। खरगे का सवाल है कि क्या अंबेडकर का नाम लेना गुनाह है? खुद दलित समुदाय से आने वाले खरगे ने कहा कि अमित शाह का राज्यसभा में संविधान पर बोलते हुए सवाल था कि क्या अंबेडकर बहुत बड़े आदमी थे? जो अंबेडकर, अंबेडकर करते हो! कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि उनके इस बयान से देश में आग लग जाएगी। उन्हें तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। और देश से माफी मांगना चाहिए। अंबेडकर दलितों आदिवासियों के भगवान हैं। कांग्रेस महासचिव और खुद दलित समाज से आने वाली कुमारी सैलजा ने कहा कि संविधान हमारा सबसे बड़ी किताब है और बाबा साहब अंबेडकर हमारे भगवान। दलितों की तरह आदिवासी भी डा. आंबेडकर को अपना उद्धारक मानते हैं। और अन्य पिछड़ा समुदाय ओबीसी जिसकी आबादी 50 प्रतिशत के करीब है भी डा अंबेडकर के सामाजिक न्याय के सिद्धांत का बड़ा लाभार्थी समूह है। दलित 20 प्रतिशत, आदिवासी 9 प्रतिशत और लगभग 50 प्रतिशत के आसपास ओबीसी इतना बड़ा समूह देश का अंबेडकर के विचारों और उनके बनाए संविधान से लाभान्वित हुआ है। इसलिए खरगे ने कहा कि उनका अपमान देश में आग लगा देगा। अंबेडकर कितनी बड़ी चीज हैं वह इससे समझिए कि कांग्रेस और भाजपा दोनों समान भाव से उनका नाम लेते हैं। अभी चार दिन संविधान पर चर्चा में उनका ही नाम गुंजता रहा। मायावती, रामविलास पासवान ने उनका नाम लेकर ही अपनी पार्टियां चलाईं। दलितों में उनका नाम ही वोट ही गारंटी है। जब ये दोनों नेता इनकी पार्टी नहीं थीं तो कांग्रेस ही उनकी विरासत संभालती थी। और लंबे समय तक दलित वोटों की एक मात्र प्राप्तकर्ता थी। मगर बाद में कांशीराम और मायावती ने इसे कांग्रेस से छीना और उत्तर प्रदेश में चार बार मुख्यमंत्री पद प्राप्त किया। और फिर भाजपा की धर्म की राजनीति ने दलित वोट को मायवती से भी छीन लिया। लेकिन सरकारी नौकरियां नहीं निकलने और इससे उन्हें आरक्षण का फायदा नहीं मिलने, तेजी से किए जा रहे नीजिकरण जहां दलितों के लिए नौकरी नहीं थी और डायरेक्ट भर्ती लेटरल एंट्री जिसमें आरक्षण नहीं था के बाद 2014 के लोकसभा चुनाव में यह समुदाय बीजेपी से भी छिटका और कांग्रेस एवं इन्डिया गठबंधन के साथ आया। यूपी में भाजपा को इसने बहुत बड़ा झटका दिया। लोकसभा में भाजपा दूसरे नंबर की पार्टी बन गई। समाजवादी पार्टी को 37 सीटें मिलीं और भाजपा 33 पर रह गई। कांग्रेस को 6 मिलीं। और बसपा जीरो। जबकि पिछले चुनाव 2019 में भाजपा को 61 सीटें मिली थीं। मायावती से मोहभंग के बाद बीजेपी धर्म के नाम पर दलितों को अपने साथ लाई। और भावनात्मक रूप से उनसे संबंध बनाने के लिए वह डा. अम्बेडकर का नाम भी लेने लगी। दलितों का अंबेडकर से बहुत गहरा लगाव है। उनका जीवन अंबेडकर ने बदला। वे उनके लिए मसीहा हैं। अमित शाह का यह कहना कि क्या अंबेडकर अंबेडकर करते हो भाजपा को बहुत मंहगा पड़ेगा। कांग्रेस और सभी विपक्षी दल इस मुद्दे को छोड़ेंगे नहीं। इंडिया गठबंधन वापस एकजुट होने लगेगा। अभी ईवीएम के मुद्दे पर उमर अब्दुल्ला और टीएमसी कांग्रेस पर हमलावर हो रहे थे। लग रहा था कि बीजेपी की कोशिशें सफल हो रही हैं। इंडिया गठबंधन में फूट पड़ रही है। मगर अमित शाह ने अंबेडकर का मुद्दा ऐसा दिया कि अब सब विपक्षी दल वापस एकजुट होने लगे हैं। बुधवार को संसद में अमित शाह के खिलाफ प्रदर्शन में सब शामिल हुए। राहुल के जाति गणना मुद्दे को भी इससे बल मिलेगा। जाति गणना का सबसे बड़ा फायदा ओबीसी को मिलने वाला है। दलित की आदिवासी की संख्या तो सबको मालूम है। हर दस साल बाद होने वाली जनगणना जो इस बार अभी तक नहीं हुई में इसकी गिनती होती है। आंकड़े आते हैं। लास्ट 2011 में हुई थी। उसके अनुसार देश में 29 प्रतिशत दलित और आदिवासी हैं। ये अंबेडकर के कट्टर समर्थक हैं। आरक्षण जिसे अंबेडकर की ही देन कहा जाता है के सबसे बड़े लाभार्थी यही हैं। भाजपा और आरएसएस कभी अंबेडकर के साथ एडजस्ट नहीं कर पाए। उनके बनाए संविधान का भी बहुत विरोध किया। अभी राज्यसभा में ही खरगे ने बताया कि जब संविधान बना तो संघ वालों ने दिल्ली के रामलीला मैदान में अंबेडकर का पुतला जलाया था। उन्होंने सदन में ह्यबंच आफ थाट्स किताबह्न दिखा कर कहा कि दूसरे सर संघ चालक गुरु गोलवलकर ने इसमें वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन किया है।

बोलने से नहीं, आत्मनिर्भर होने से भारत बनेगा विश्व गुरु

सनत जैन

वर्तमान सत्तारुण दल भारत को अक्सर विश्व गुरु कहकर संबोधित करता है। वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। किसी भी देश को विश्व गुरु बनने की प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए विज्ञान, तकनीक और अनुसंधान पर आत्मनिर्भर होना आवश्यक होता है। चीन और भारत की तुलना में, चीन हर क्षेत्र में भारत से बहुत तेजी के साथ आगे निकल गया है। शिक्षा, अनुसंधान, नवीन तकनीकों के विकास से चीन तीन दशक के अंदर सारी दुनिया के देशों को पछाड़कर महाशक्ति बन गया है। चीन आर्थिक निवेश, निर्यात व्यापार और तकनीकी ज्ञान से दुनिया के देशों में सुपर पावर बना है। सारी दुनिया के देशों में चीन के बिना सब सून की स्थिति बन गई है। दुनिया के सभी देशों में चीन के सस्ते माल का कोई विकल्प नहीं है। चीन हर देश के लिए अलग-अलग तरीके से समान बनाता है। भारत की होली, दिवाली, 15 अगस्त, 26 जनवरी, शादी-विवाह, बच्चों के खेल, खिलौने से लेकर हर चीज चीन में तैयार होती है। भारत के देवी-देवता और भगवान की मूर्तियां भी चीन में तैयार हो रही हैं। भारत में जो विकास कार्य चल रहे हैं उसमें चीन की मशीने लगी हुई हैं। चीन अपनी जीडीपी का 2। 4फीसदी शोध और विकास कार्यों पर खर्च करता है। जबकि भारत मात्र 0.7फीसदी खर्च करता है। चीन में 550 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष शोध पर खर्च कर रहा है। भारत में यह आंकड़ा मात्र 2 बिलियन डॉलर का है। इतना ही नहीं, दुनिया की टॉप 100 यूनिवर्सिटीज में चीन का 13 वां स्थान है। जबकि भारत का कोई भी विश्वविद्यालय इस 100 की सूची में शामिल नहीं है। भारत ने अपनी शिक्षा और स्वास्थ्य का बजट घटा दिया है। तकनीक के क्षेत्र में चीन का प्रभुत्व सारी दुनिया के देश मान रहे है। बहुमूल्य माईनिंग उत्पाद के उपकरण, ईवी बैटरी, सेमीकंडक्टर चिप्स, और सोलर एनर्जी जैसे क्षेत्रों में चीन का दबदबा सारी दुनिया में बना हुआ है। वहीं, भारत की इन क्षेत्रों में कोई उपलब्धि नहीं है। भारत का खनिज कच्चा माल चीन जाता हैं और वहां से उत्पाद बनकर भारत में आता है। भारत आयात के ऊपर निर्भर है। भारत के पास विकास शोध और शिक्षा को लेकर कोई ठोस योजना नहीं है। चीन के उत्पाद वैश्विक बाजारों पर इस कदर छाए हुए हैं। सारी दुनिया के देशों में चीन के उत्पाद का कोई विकल्प नहीं है। चीन दुनिया के देशों के लिए कम कीमत में विविध उत्पाद उपलब्ध कराने वाला सबसे बड़ा बाजार बन गया है। जबकि भारत के मेड इन इंडिया उत्पाद, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कम ही दिखते हैं। भारत का आयात, निर्यात की तुलना में ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। भारत की अर्थव्यवस्था में आयात-निर्यात व्यापार में भारत काफी घाटे में है। भारत में शिक्षा और शोध को लेकर सरकार और समाज दोनों की प्राथमिकताएं चिंताजनक हैं। पिछले 10 वर्षों से शिक्षा और शोध का बजट केंद्र सरकार घटाती चली जा रही है। भारत के छात्र विदेशों में पढ़ने के लिए जा रहे हैं। शिक्षा और शोध के मामले में भारत शून्य पर पहुंच गया है। जिसके कारण चीन की तुलना में भारत बहुत पीछे हो गया है। वैसे जहां तक विश्व गुरु की बात हे तो भारत अपने दर्शन को लेकर शुरू से ही दुनिया के देशों का नेतृत्व करता रहा है। अब जरुर भारत मंदिर-मस्जिद और धार्मिक बहसों में पिछले तीन दशक से उलझा हुआ है। पिछले 10 वर्षों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक शिक्षा और शोध को बढ़ावा देने से भारत बहुत दूर हो गया है। चीन का मीडिया तकनीक और इनोवेशन पर चर्चा करता है। वहीं भारतीय मीडिया धार्मिक मुद्दों में उलझा रहता है। भारतीय मेन स्ट्रीम का मीडिया सरकार का भोंपू बनकर रह गया है। भारतीय मीडिया को अब सुपारी मीडिया या गोदी मीडिया के नाम से भी भारत और दुनिया के देशों में जाना जाता है। भारत को सच में विश्व गुरु बनना है, तो शिक्षा, शोध, और तकनीकी विकास में भारी निवेश करना होगा। नई पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रौद्योगिकी में दक्षता प्रदान करने वाले संस्थान खोलने होंगे। जो संस्थान है उनकी गुणवत्ता पर ध्यान रखना होगा। इसके लिए केवल बजट का आवंटन नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और समय के अनुसार बदलाव और व्यावसायिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

सीएम योगी के नेतृत्व में तेजी से हो रहा ग्रामीणों की समस्यायों का निराकरण

प्रात: किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व व निर्देशन में प्रदेश की पंचायतों की भूमिका अब पहले से अधिक महत्वपूर्ण और जवाबदेही भरी हो गई है। सीएम योगी द्वारा पंचायतों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए गए हैं। रोजगार मेले, किसान विकास योजनाएं और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गांवों में समग्र विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। डिजिटल तकनीक के समावेश ने पंचायतों की कार्यप्रणाली को पारदर्शी और प्रभावी बना दिया है।

सीएम योगी ने पंचायत निधि के बेहतर और सार्थक उपयोग पर जोर देते हुए निर्देश दिया है कि इसका लाभ सीधे वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। उन्होंने पंचायतों से रेन वाटर हार्वेस्टिंग जैसी योजनाओं को प्राथमिकता देने और नए ऐसे काम करने की अपील की है, जो पंचायतों को विशिष्ट पहचान दें।

सीएम योगी की ग्राम पंचायतों को रोल मॉडल बनाने की पहल

सीएम योगी ने ग्राम पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह की पहल की है। सीएम योगी ने पंचायतों को नए और नवाचारी प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उनके क्षेत्र को अलग पहचान दें। पंचायतों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे सामुदायिक शौचालयों और सार्वजनिक स्थानों की सफाई को प्राथमिकता दें। सीएम योगी ने गांवों में कम्युनिटी सेंटर बनाकर उसका आर्थिक रूप से उपयोग करने की बात कही है। इससे न केवल पंचायतों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगा। सीएम योगी की मंशानुरूप पंचायतों में आदर्श गांव, विकसित गांव और आत्मनिर्भर गांव बनाने की दिशा में बड़े पैमाने पर कार्य किए जा रहे हैं।

गांव की समस्या का गांव में ही हो रहा समाधान

ग्राम चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों तक पहुंच रही योगी सरकार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व और निर्देशन में ग्राम चौपाल की पहल ने यह सुनिश्चित किया है कि सरकार खुद चलकर ग्रामीणों और गरीबों के पास जाए। यह पहल शासन और जनता के बीच विश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ समस्याओं के समाधान को सरल और सुलभ बना रही है। प्रदेश के प्रत्येक विकास खंड की दो ग्राम पंचायतों में प्रत्येक शुक्रवार को ग्राम चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। ह्गांव की समस्या - गांव में समाधानह्व के मूलमंत्र के साथ आयोजित इन चौपालों ने ग्रामीणों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया है। ग्राम चौपालों में न केवल व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान हो रहा है, बल्कि सार्वजनिक मुद्दों पर भी कार्रवाई की जा रही है। इन चौपालों से गांवों में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जमीनी हकीकत का पता चलता है और सामाजिक योजनाओं के क्रियान्वयन में भी तेजी आई है। चौपालों से पहले सफाई और प्रचार पर दिया जा रहा विशेष ध्यान

ग्राम चौपालों की सफलता के लिए गांवों में सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। चौपालों से पहले व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोग इनसे जुड़ सकें। यह पहल यह भी सुनिश्चित करती है कि सरकारी योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ हर जरूरतमंद तक पहुंचे। ग्राम्य विकास आयुक्त जी.एस. प्रियदर्शी के अनुसार, जनवरी 2023 से अब तक 01 लाख 13 हजार से अधिक ग्राम चौपालों का आयोजन किया जा चुका है। इन चौपालों में 79 लाख से अधिक ग्रामीणों ने भाग लिया और 04 लाख 42 हजार से अधिक समस्याओं का निस्तारण किया गया।

गांवों में विकास की नई गाथा लिख रही है योगी सरकार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की पंचायतें विकास की नई परिभाषा गढ़ रही हैं। डिजिटल तकनीक, स्वच्छता, और आत्मनिर्भरता को अपनाकर पंचायतें ग्रामी ण भारत का भविष्य लिखने की दिशा में अग्रसर हैं। ग्राम चौपाल जैसी योजनाओं के माध्यम से सरकार ने यह साबित किया है कि गांव की समस्याओं का समाधान गांव में ही किया जा सकता है।

योगी सरकार की यह पहल न केवल गांवों को सशक्त बना रही है बल्कि आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की ओर भी अग्रसर है। ग्रामीण विकास के इस मॉडल ने पंचायतों को नए अवसरों और जिम्मेदारियों के साथ मजबूती प्रदान की है, जिससे उत्तर प्रदेश देशभर में एक मिसाल बनता जा रहा है।

उत्तर प्रदेश: कार और ट्रक की टक्कर में छह लोगों की मौत

प्रात: किरण संवाददाता

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर जिले में कार और ट्रक की टक्कर में छह लोगों की मौत हो गई और चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना पर शोक व्यक्त किया है। पुलिस ने बताया कि हादसा बुधवार रात करीब 10 बजे बरेली-इटावा मार्ग पर बरखेड़ा जयपाल चौराहे के पास हुआ जब जिले के कांट कस्बे के निवासी रियाजुल अली अपने परिवार के साथ कार से दिल्ली जा रहे थे तभी सामने से आ रहे ट्रक से टक्कर हो गई।

पुलिस अधीक्षक राजेश एस ने बताया कि सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने कार सवारों को बाहर निकाला और उन्हें मदनापुर के सरकारी अस्पताल ले गई जहां चिकित्सकों ने पांच लोगों को मृत घोषित कर दिया तथा पांच अन्य घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद राजकीय मेडिकल कॉलेज शाहजहांपुर रेफर कर दिया।

उन्होंने बताया कि मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान एक अन्य घायल ने दम तोड़ दिया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मृतकों की पहचान रियाजुल (45), आमना (42), गुड़िया (नौ), तमन्ना (32), नूर (छह) और गुलफ्सा (25) के रूप में हुई है।

राजकीय मेडिकल कॉलेज के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नेपाल सिंह ने कहा, मदनापुर के हादसे में घायल पांच लोगों को यहां लाया गया था जिनमें से एक की इलाज के दौरान मौत हो गई। एक गंभीर मरीज को बरेली रेफर किया गया है। यहां भर्ती तीन घायलों में से दो की हालत गंभीर बनी हुई है। जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह तथा पुलिस अधीक्षक समेत अन्य अधिकारी रात में मेडिकल कॉलेज पहुंचे और घायलों के बेहतर इलाज की व्यवस्था कराई।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि ट्रक को कब्जे में लेकर उसके चालक को हिरासत में ले लिया है। मृतक रियाजुल के चाचा शमशेर अली ने बताया कि रियाजुल दिल्ली में रहकर ही कपड़ों का कारोबार करता था और दो दिन पहले एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए परिवार के साथ यहां आया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की। मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार के उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

संक्षिप्त खबरें

प्रतापगढ़ में पुलिस मुठभेड़ के बाद दो बदमाश गिरफ्तार

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ में पुलिस ने मुठभेड़ के बाद एक इनामी बदमाश सहित दो बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से असलहे बरामद किए। पुलिस ने यह जानकारी दी।

अपर पुलिस अधीक्षक (पश्चिमी) संजय राय ने बताया कि थाना लालगंज के प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव और विशेष टीम के प्रभारी निरीक्षक जयचंद्र पुलिस बल के साथ बुधवार रात वाहनों की जांच कर रहे थे। राय ने बताया कि इस दौरान सराय रायजू लोनी नदी के निकट मोटरसाइकिल से आ रहे बदमाशों को रोकने का प्रयास किया गया तो उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी जिस पर पुलिस बल ने भी जवाबी कार्रवाई की और इसमें एक गोली इनामी बदमाश शशिकांत विश्वकर्मा उर्फ शशिप्रकाश के पैर में लगी। उस पर 25 हजार रूपए का इनाम घोषित किया गया था। राय ने बताया कि पुलिस ने शशिकांत के साथ ही उसके साथी बबलू गौतम को मौके से गिरफ्तार कर लिया और इनके कब्जे से एक अवैध तमंचा, चोरी की एक बंदूक, 25 कारतूस, 50,000 रुपये नकद और चोरी के गहने बरामद किए। उन्होंने बताया कि आरोपी शशिकांत के विरुद्ध दो दर्जन से अधिक मामले दर्ज हैं। उसे इलाज के लिए मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गया है।

देवरिया में कार के ट्रैक्टर ट्रॉली से टकराने से एक की मौत

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में सलेमपुर के पास शराब की तस्करी के लिए इस्तेमाल की जा रही एक कार के ट्रैक्टर-ट्रॉली से टकराने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और अवैध शराब की बोतलें सड़क पर बिखर गईं। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि दुर्घटना बृहस्पतिवार तड़के करीब चार बजे उस वक्त हुई जब पुलिस से बचने के लिए तेज गति से जा रही कार ट्रैक्टर-ट्रॉली से जा टकराई और पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

कार चालक की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि यातायात सुचारू करने के लिए क्षतिग्रस्त कार को सड़क से हटाया गया। अधिकारी के अनुसार कार चालक शराब की खेप लेकर बिहार जा रहा था।

अधिकारी ने बताया कि सलेमपुर पुलिस मृतक की शिनाख्त में जुटी है और मामले की जांच कर रही है।

पांच साल के बच्चे की धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या

सुलतानपुर। जिले के थाना गोसाईंगंज क्षेत्र में एक पांच वर्षीय बच्चे की धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या कर दी गई जिसका शव बृहस्पतिवार को घर से 100 मीटर दूर एक खंडहरनुमा मकाल में मिला है। बच्चा बुधवार दोपहर से लापता था। पुलिस ने शव को कब्जे में लिया है। घटना गोसाईंगंज थाना क्षेत्र के सोनवातारा गांव की है। पुलिस द्वारा उपलब्ध करायी गयी जानकारी के अनुसार गोसाईंगंज के सोनवातारा निवासी अरविंद का पांच वर्षीय पुत्र अखिल बुधवार दोपहर 12 बजे घर लापता हो गया। कुछ देर तक जब बच्चा नजर नहीं आया तो परिजनों ने तलाश शुरू की लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला। पुलिस ने बताया कि बृहस्पतिवार सुबह घर से सौ मीटर की दूरी पर स्थित श्याम लाल के खंडहरनुमा मकान में उसका शव पाया गया। बच्चे के गले पर धारदार हथियार के निशान मिले हैं। ग्रामीणों की सूचना पर गोसाईंगंज पुलिस, फॉरेंसिक टीम और खोजी श्वान दस्ते की टीम घटनास्थल पर पहुंचकर जांच कर रही है। थानाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही जांच शुरू कर दी गई है। उन्होंने बताया कि परिजनों से तहरीर मिलते ही कार्रवाई की जाएगी। मृत बच्चे के दादा पूर्णवासी की तहरीर पर पुलिस ने पहले गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज की थी।

द मदरलैंड का आपातकाल का ऐतिहासिक अंक संघ के प्रचार प्रमुख को सौंपा गया

प्रात: किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

नई दिल्ली। 18 दिसम्बर 2024 का दिन ऐतिहासिक इस लिए रहा की दिल्ली स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नए मुख्यालय में द मदरलैंड इंग्लिश समाचार पत्र की ऐतिहासिक प्रति 26 जून 1975 के फ्रेम युक्त अंक को अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील अंबेकर को तब के सीनियर करेस्पोंडेंट 92 वर्षीय केदार नाथ गुप्ता के द्वारा सौंपा गया। इस प्रति की महत्ता यह है कि आपातकाल की विभीषिका को इस संस्करण में प्रकाशित किया गया था। तब के संपादक के आर मलकानी को अरेस्ट करना भी इस की प्रमुख खबरों में थीं। के.एन गुप्ता का कहना है की यह पहला समाचार पत्र था जिसमें यह खबर प्रमुखता से छपी थी। जबकि बाकी सभी समाचार पत्रों ने तो छापी हीं नहीं थी। आपातकाल की घोषणा की खबरों ने तो पूरे देश में आतंक का वातावरण बना दिया था। इस अवसर पर गुप्ता ने कहा कि सिर्फ.मदरलैंड ने ही आपातकाल की खबरों को छापा और तब की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा लगाया गया आपातकाल जिसमें लोकतांत्रिक संवेदनाओं का हनन हुआ था और प्रेस की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित कर दिया गया था। उन्होंने अफसोस जताते हुआ कहा कि यह दुर्भाग्य है कि जब संसद में आपातकाल की चर्चा होती है तो मदरलैंड और मलकानी जी के योगदान को नहीं बताया जाता है। ज्ञातव्य है कि अगर मदरलैंड ने आपातकाल के खबरों का स्पेशल एडिशन नहीं निकाला होता तो ना जाने आपात काल की कई सारी घटनाएँ सामने आती ही नहीं। इसका असर ये हुआ कि मलकानी जी को महीनों तक जेल में रखा गया और यातनाएँ दीं गई। गुप्ता ने यह भी बताया की जब मलकानी जी को गिरफ़्तार कर लिया गया तो उन्होंने डी एन सिंह और मुझे ये सूचना भेजवाई की कल का एडिसन का सकुर्लेशन और पब्लिकेशन जरूर होना चाहिए। उनका स्पष्ट कहना था की जय प्रकाश नारायण, मोरारजी देशाई,एल के आडवाणी, चरण सिंह, चंद्रशेखर, कृष्ण कांत और कितने सारे वरिष्ठ पत्रकार सहित आर एस एस के कार्यकताओं को जेल भेजा गया। श्री गुप्ता ने बताया कि जब हम झंडेवाला स्थित दीन दयाल भवन पहुंचे तो सभी स्टाफ को देखकर खुश हुए और इस तरह से उस दिन के अंक का प्रकाशन संभव हो पाया। लेकिन उन्होंने कहा कि पिछले दिनों संविधान पर हो रहे चर्चा को देखकर बड़ा दुख हुआ कि मदरलैंड के सारे स्टाफ ने इतना रिस्क लेकर इस अंक को निकाला लेकिन संविधान पर पार्लियामेंट के बहस में किसी ने भी मदरलैंड और उसके स्टाफ की कोई चर्चा नहीं हुई। जबकि एक मात्र अखबार था जिसने इतना रिस्क लेकर इस अंक को निकाला था। प्रचार प्रमुख अंबेकर जी ने गुप्ता के इन भावनाओं का सम्मान करते हुए कहा कि वे इस अंक के फ्रेम किया हुआ कॉपी कार्यालय में लगवाएँगे और इन सभी विषयों पर चर्चा करेंगे। इस अवसर पर दैनिक वरिष्ठ पत्रकार और के एन गुप्ता की पुत्री मनोरंजना, मदरलैंड वॉइस के संपादक संजय उपाध्याय, युग संस्कृति न्यास के अध्यक्ष आचार्य धर्मवीर, वरिष्ठ पत्रकार अशोक रजनी और अन्य पत्रकार गण भी उपस्थित रहे।

बिजली विभाग ने संभल में समाजवादी पार्टी के सांसद के आवास का निरीक्षण किया

प्रात: किरण संवाददाता

संभल। संभल के दीपा सराय इलाके में बिजली विभाग ने बृहस्पतिवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद जियाउर रहमान बर्क के आवास की जांच की। इस दौरान इलाके में भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई।

पत्रकारों से अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) शिरीष चंद्र ने कहा, बिजली विभाग ने दीपा सराय इलाके में सुरक्षित और सुचारू निरीक्षण के लिए पुलिस सहायता मांगी है। फिलहाल निरीक्षण जारी है।

निरीक्षण किए जा रहे स्थान के बारे में विशेष रूप से पूछे जाने पर एएसपी ने कहा, यह सांसद का आधिकारिक आवास है, जहां बिजली विभाग जांच कर रहा है। बिजली विभाग के उपमंडल अधिकारी संतोष कुमार त्रिपाठी ने कहा कि सांसद के आवास पर 2-2 किलोवाट के दो कनेक्शन और 10 किलोवाट का सोलर पैनल है। उन्होंने कहा,हालांकि, उपयोग और उपकरणों के आधार पर आवश्यकता आठ से 10 किलोवाट के बीच होनी चाहिए। सांसद का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील कासिम जमाल ने अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा, निवास में चार किलोवाट के दो कनेक्शन, 10 किलोवाट का सोलर पैनल और पांच किलोवाट का जनरेटर है। सेटअप में दो एयर कंडीशनर, 6-7 सीलिंग फैन (छत वाले पंखे), एक रेफ्रिजरेटर और लाइट शामिल हैं। बिल बहुत कम है क्योंकि यहां परिवार के केवल चार सदस्य रहते हैं।सांसद, उनकी पत्नी, उनकी मां और उनके पिता। विद्युत विभाग का निरीक्षण जारी है क्योंकि अधिकारी अनुमानित खपत

के मुकाबले मौजूदा कनेक्शन का मूल्यांकन कर रहे हैं।

इलाके में पुलिस, पीएसी और रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों की भारी तैनाती पर, अधिवक्ता ने कहा कि यह परिवार की छवि को धूमिल करने का प्रयास है। समाजवादी पार्टी के सांसद उन लोगों में शामिल हैं जिन पर पुलिस ने 24 नवंबर को हुई हिंसा के सिलसिले में मामला दर्ज किया है। न्यायालय के आदेश पर शहर के कोट गर्वी इलाके में मुगलकालीन शाही जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का विरोध करने पर सुरक्षाकर्मियों के साथ झड़प में चार स्थानीय लोगों की मौत हो गई थी।

बर्क ने अपनी गिरफ्तारी पर रोक लगाने और अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी रद्द करने की मांग करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की है। बर्क पर 24 नवंबर को लोगों को भड़काने का आरोप है। पुलिस ने आरोप लगाया है कि सर्वेक्षण के दौरान हिंसा के पीछे उनका भड़काऊ भाषण ही कारण था।

रिट याचिका में सांसद ने खुद को निर्दोष बताते हुए कहा है कि उन्हें इस मामले में गलत तरीके से फंसाया गया है। उनके वकील के अनुसार, वह घटना स्थल पर मौजूद नहीं थे, फिर भी उन्हें प्राथमिकी में आरोपी बनाया गया है।

टिफिन में मांसाहार लेकर स्कूल आने वाले बच्चों को उच्च न्यायालय से मिली राहत

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने केजी, पहली और तीसरी कक्षा में पढ़ रहे उन बच्चों को राहत दी है, जिन्हें अपने टिफिन में कथित तौर पर मांसाहार लाने के लिए अमरोहा जिले के स्कूल से निकाल दिया गया था। न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और न्यायमूर्ति एससी शर्मा की खंडपीठ ने अमरोहा जिले की साबरा और उनके तीन बच्चों द्वारा दायर रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए जिला मजिस्ट्रेट को दो सप्ताह के भीतर इन बच्चों का दाखिला केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से संबद्ध किसी दूसरे स्कूल में करवाने और एक अनुपालन हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया। याचिका में कहा गया है कि इन नाबालिग बच्चों के टिफिन में मांसाहार दिये जाने को लेकर स्कूल के प्रधानाचार्य द्वारा आपत्ति की गई और इन बच्चों को स्कूल से बाहर निकाल दिया गया। याचिकाकर्ता के वकील ने दलील दी कि ये बच्चे केजी, पहली और तीसरी कक्षा में पढ़ रहे नाबालिग बच्चे हैं और स्कूल के इस निर्णय से उनकी शिक्षा का अधिकार प्रभावित हुआ है। अदालत ने 17 दिसंबर को दिए अपने निर्णय में इस मामले में छह जनवरी, 2025 को नए सिरे से सुनवाई करने का निर्देश देते हुए कहा कि यदि जिला मजिस्ट्रेट, अमरोहा द्वारा कोई हलफनामा दाखिल नहीं किया जाता है तो उन्हें अगली तारीख पर व्यक्तिगत तौर पर पेश होना होगा।

संभल से सपा के सांसद के खिलाफ बिजली चोरी के आरोप में प्राथमिकी दर्ज

संभल। उत्तर प्रदेश पुलिस ने संभल से समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद जियाउर रहमान बर्क के खिलाफ बृहस्पतिवार को यहां दीपा सराय इलाके में उनके आवास पर बिजली चोरी के आरोप में मामला दर्ज किया है। सांसद के खिलाफ बिजली अधिनियम, 2003 की धारा 135 (बिजली की चोरी या बिजली का अनधिकृत उपयोग) के तहत मामला दर्ज किया गया।बिजली विभाग के एक अधिकारी की शिकायत पर दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है, ह्यविद्युत परीक्षण प्रयोगशाला से प्राप्त उपभोक्ता के मीटर की जांच करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि मीटर से छेड़छाड़ करके बिजली चोरी की गई है।

बिजली विभाग ने इलाके में सुरक्षा बलों की तैनाती के बीच बृहस्पतिवार सुबह बर्क के आवास पर निरीक्षण शुरू किया था। बर्क उन लोगों में शामिल हैं, जिनके खिलाफ पुलिस ने 24 नवंबर को हुई हिंसा के सिलसिले में मामला दर्ज किया है। शहर के कोट गर्वी इलाके में अदालत के आदेश पर मुगलकालीन शाही जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का विरोध करने पर सुरक्षाकर्मियों के साथ हुई झड़प में चार स्थानीय लोगों की मौत हो गई थी। बर्क ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर कर अपनी गिरफ्तारी पर रोक लगाने और अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी रद्द करने की भी मांग की है। बर्क पर 24 नवंबर को लोगों को भड़काने का आरोप है। पुलिस ने आरोप लगाया है कि सर्वेक्षण के दौरान हुई हिंसा का कारण उनका भड़काऊ भाषण था। रिट याचिका में सांसद ने खुद को निर्दोष बताते हुए कहा है कि उन्हें इस मामले में फंसाया गया है। उनके वकील के अनुसार, वह घटना स्थल पर मौजूद नहीं थे, फिर भी उन्हें प्राथमिकी में आरोपी बनाया गया है।

कांग्रेस कार्यकताओं ने कैंडल जलाकर प्रभात पांडे की दी भावभीनी श्रंद्धाजलि

कांग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडेय की मौत के लिए जिम्मेदार है योगी सरकार: ओमकार कटारिया

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी अमरोहा के पदाधिकारीयो द्वारा बीती राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने कैंडल जलाकर एवं कैंडल मार्च निकालकर वं उनके चित्र पर पुष्प माला चढ़ाकर कांग्रेस कार्यकर्ता द्वारा प्रभात पांडेय को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनकी आत्मा शांति के लिए 2 मिनट का मौन धारण किया गया। 18 दिसंबर को लखनऊ में उत्तर प्रदेश कांग्रेस द्वारा भाजपा की योगी सरकार के कुशासन के विरुद्ध किए गए विधानसभा घेराव में पुलिस की लाठी चार्ज व लगाए गए नुकीले वेरी गेट बल प्रयोग में लगी गंभीर चोटों के कारण गोरखपुर के यूथ कांग्रेस के प्रदेश महासचिव प्रभात पांडेय की मृत्यु हो गई। यह हृदयविदारक घटना भाजपा सरकार की दमनकारी मानसिकता का नतीजा है शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक विरोध को पुलिस बर्बरता के जरिए दबाना बेहद शर्मनाक और लोकतंत्र में पूरी तरह अस्वीकार्य है

भाजपा सरकार की क्रूरता की कोई सीमा नहीं है असहमति की आवाज को कुचलने के लिए हिंसा का सहारा लेना इस शासन की लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति घोर उपेक्षा को दशार्ता है। अमरोहा कांग्रेस परिवार दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है ओर प्रभात पांडे जी के परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएँ प्रकट करता है यह बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा हम उनके लिए न्याय की लड़ाई लड़ते रहेंगे। हम इस घटना की स्वतंत्र जांच और दोषी अधिकारियों पर तुरंत कार्रवाई की मांग करते हैं। इस अवसर पर कार्यवाहक जिला अध्यक्ष ओमकार सिंह कटारिया, कार्यवाहक शहर अध्यक्ष फैज आलम राईनी, निवर्तमान प्रदेश सचिव चौधरी सुखराज सिंह, जिला उपाध्यक्ष अब्दुल सत्तार सैफी, पार्टी के वरिष्ठ नेता हाजी खुर्शीद अनवर, जिला महासचिव शाहिद सिद्दीकी खेड़ी, चौधरी नरेंद्र सिंह, राजकुमार अरुण, मयंक कुमार गुर्जर, मोहम्मद फैजान सैफी, अकरम अली, मलिक जाहिद सैफी, विक्रम सिंह गुर्जर, जिला सचिव डॉक्टर मुशर्रफ खान, रियाज हादी, नवीन शबाब, आबिद खान, मुदस्सर खान, मासूम अली सैफी, प्रदेश महासचिव जिला सचिव सिंह हर स्वरूप सिंह इशरत अली आदि कार्यकर्ता मुख्य रूप से मौजूद रहे।

राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन कर रही जोर-शोर से कार्यक्रम की तैयारी

नए साल पर विकलांगों को देंगे सौगात -एम.आर.पाशा

प्रात: किरण संवाददाता

बिजनौर ।राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एमआर पाशा नए साल पर विकलांगों व गरीबों को राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के माध्यम से लाखों की सौगात बांटेंगे। इस कार्यक्रम के लिए जोर-शोर से तैयारियां चल रही है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एमआर पाशा हर साल सैकड़ों विकलांगों व गरीबों को सौगात बांटते है। विकलांगों को जरूरी उपकरण व ट्राईसाइकिलें बांटी जाती हैं। गरीबों को कंबल व अन्य सामान बांटा जाता है। उनके द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रम का कई सौ परिवार फायदा उठाते हैं। इसी तरह अब नए साल में भी कड़ाके की ठण्ड के बीच एम.आर. पाशा के द्वारा विकलांगों व गरीबों को सौगात बांटी जाएगी। इसके लिए उनके द्वारा जरूरतमंदों का पंजीकरण भी कराया गया था। जिसमें सैकड़ों जरूरतमंदों का पंजीकरण हुआ था। उन्होंने बताया कि मुरादाबाद परिक्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक एवं अन्य अधिकारियों की भी इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में शिरकत की जाएगी।

गौरतलब है कि एम.आर.पाशा अपनी जिंदगी में गरीबों,बेसहाराओं, विकलांगो की राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के माध्यम से बहुत मदद कर रहे हैं । वह विकलांगों के अधिकारों की लड़ाई भी मजबूती के साथ पिछले कई सालों से लड़ रहे हैं ।उन्होंने इस वर्ग की भलाई के लिए हमेशा मजबूती से आवाज उठाई है।

कांग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडे का अंतिम संस्कार

प्रात: किरण संवाददाता

गोरखपुर। लखनऊ में विरोध प्रदर्शन के दौरान मारे गए 28 वर्षीय कांग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडे का बृहस्पतिवार को गोरखपुर में उनके पैतृक गांव में अंतिम संस्कार किए जाने के दौरान उस समय अफरा-तफरी फैल गई जब प्रदेश कांग्रेस प्रमुख अजय राय की मौजूदगी पर लोगों ने नाराजगी जाहिर की। स्थानीय लोगों ने अजय राय वापस जाओ, हत्यारे दल वापस जाओ और राहुल गांधी मुदार्बाद, प्रियंका गांधी मुदार्बाद जैसे नारे लगाए जिसके बाद तनाव बढ़ने पर पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा।

प्रभात के शव को अंतिम संस्कार से पहले उसके घर लाया गया जिससे परिवार में कोहराम मच गया। उसके शोकाकुल पिता दीपक पांडे ने कहा, यह मेरे कर्मों का फल है। मेरा इकलौता बेटा चला गया।

अंतिम संस्कार स्थल पर उसकी मां बेहोश हो गई। जब अजय राय ने श्रद्धांजलि देने का प्रयास किया तो स्थिति और बिगड़ गई। गुस्साए ग्रामीणों ने उन पर राजनीतिक लाभ के लिए इस त्रासदी का फायदा उठाने का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारियों ने चिल्लाते हुए कहा, यहां कोई ड्रामा नहीं और राय को चिता के पास जाने से रोक दिया।

भीड़ को शांत करने के प्रयास में राय ने अपना जनेऊ दिखाया और कहा, मैं भी ब्राह्मण हूं, सच्चा 24 कैरेट का। अन्य कांग्रेस नेताओं की लगातार अपील के बाद उन्हें अनिच्छा से श्रद्धांजलि देने की अनुमति दी गई।

बुधवार को प्रभात की मौत को लेकर उठे विवाद ने राजनीतिक तनाव को और गहरा कर दिया है। शुरूआती पोस्टमार्टम रिपोर्ट में दिल का दौरा पड़ने का हवाला दिया गया है, लेकिन प्रभात के परिवार को साजिश का संदेह है। उसके चाचा मनीष पांडे की शिकायत के आधार पर लखनऊ के हुसैनगंज थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या की एफआईआर दर्ज की गई है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खड़गे समेत कांग्रेस नेताओं ने इस घटना की कड़ी निंदा की है।

राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, उत्तर प्रदेश में एक बार फिर लोकतंत्र और संविधान की हत्या हुई है। कांग्रेस के बहादुर शेर अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। अजय राय ने सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा, यह मौत नहीं, बल्कि हत्या है। प्रभात ने अपने साथियों को बताया था कि पुलिस ने उसे पीटा और फिर बेहोश हो गया।

प्रभात, जो युवा कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे, लखनऊ में अपने चाचा के साथ रहते थे और कंप्यूटर कोर्स कर रहे थे। उनके दादा, जो सेवानिवृत्त डाक कर्मचारी हैं, सदमे में हैं। परिवार ने उनकी मौत की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

उनके चाचा मनीष पांडे ने सवाल उठाया था, ह्यअगर प्रभात कांग्रेस कार्यालय में दो घंटे तक बेहोश रहा, तो उसे पहले अस्पताल क्यों नहीं ले जाया गया? उत्तर प्रदेश विधानसभा के पास कांग्रेस के प्रदर्शन में शामिल पार्टी के कार्यकर्ता प्रभात की बुधवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पार्टी ने ह्यपुलिस बर्बरताह्ल के कारण कार्यकर्ता की मौत होने का दावा किया है। वहीं, इस मामले में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ हत्याक का मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि गोरखपुर निवासी 28 वर्षीय प्रभात पांडे को कांग्रेस कार्यालय से अस्पताल में मृत अवस्था में लाया गया था।

जिनका मन विद्वेष से भरा है वो देश क्या चलाएंगे: अखिलेश ने भाजपा पर साधा निशाना

प्रात: किरण संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए कहा कि जिनका मन विद्वेष से भरा है वो देश क्या चलाएंगे।

यादव ने एक्स पर कहा, जिनका मन विद्वेष से भरा है वो देश क्या चलाएंगे। आज जो हुआ वो सिर्फ. बाबासाहेब का ही नहीं, उनके दिये संविधान का भी अपमान है। ये भाजपा की नकारात्मक मानसिकता का एक और चरम बिंदु है। यादव ने अपने पोस्ट में कहा, देश ने आज जान लिया है कि भाजपा के लोगों के मन में बाबासाहेब को लेकर कितनी कटुता भरी है। वे बाबासाहेब के बनाये संविधान को अपना सबसे बड़ा विरोधी मानते हैं क्योंकि उनको लगता है कि वे जिस प्रकार गरीब, वंचित, दमित का शोषण करके, उनके ऊपर अपना प्रभुत्व कायम करना चाहते हैं, उनकी इस मंशा के आगे संविधान ढाल बनकर खड़ा है।

उत्तर प्रदेश के गोंडा में सड़क दुर्घटना में दो सगे भाइयों की मौत

गोंडा ।गोंडा में एक मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर 10 फुट गहरे गड्ढे में गिरने और फिर पेड़ से टकराने के कारण दो भाइयों की मौत हो गई। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। ह्लहादसा बुधवार को इटियाथोक-खरगूपुर मार्ग पर बेंदुली मोड़ पर हुआ। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (पूर्व) मनोज कुमार रावत ने कहा, ह्यहादसे में परशराम पुर गांव के रहने वाले अजय (35) और दिलीप (27) की मौत हो गई। पंजाब के बठिंडा में काम करने वाला अजय ट्रेन से गोंडा जंक्शन पर पहुंचा था। दिलीप उसे बुलेट मोटरसाइकिल पर लेने गया था। दुर्घटना उस समय हुई जब वे घर लौट रहे थे। थाना प्रभारी (एसएचओ) शेषमणि पांडे ने कहा कि दोनों पीड़ितों ने हेलमेट नहीं पहन रखा था और उन्हें सिर व शरीर के दूसरे हिस्सों पर चोट लगीं। उन्होंने कहा, ह्यअत्यधिक रक्तस्राव के कारण उनकी मौत हुई। बेन्दुली मोड़ पर कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। एसएचओ पांडे ने कहा, पिछले दो वर्ष में इस स्थान पर सड़क दुर्घटनाओं में 10 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। चार अक्टूबर को भी इसी तरह की घटना में एसयूवी कार में यात्रा कर रहे चार युवकों की मौत हो गई थी।

दो बार राष्ट्रपति से सम्मानित ग्राम प्रधान गार्गी चौधरी सम्मानित

गजरौला। क्षेत्र के गांव खेड़की भूड़ में मानव विकास सुरक्षा संघ ने ग्राम प्रधान गार्गी चौधरी को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा दो बार सम्मानित होने पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी शूरवीर सिंह के आवास पर सम्मानित किया गया। देश की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने उत्कृष्ट कार्य करने पर मिल्क अमावती की ग्राम प्रधान गार्गी चौधरी को सम्मानित किया पर क्षेत्र के गांव खेड़की भूड़ निवासी मानव विकास सुरक्षा संघ के अध्यक्ष चौधरी शूरवीर सिंह के आवास पर श्रीमति चौधरी को सम्मानित किया गया। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि दृढ़ संकल्प से ही यह सब हो पाया है। कहा कि गांव का विकास, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं, साफ सफाई आदि का उन्होंने समय उन्होंने कार्य कराए हैं। वही चौधरी शूरवीर ने कहा कि सभी को गार्गी चौधरी से प्रेरणा लेनी चाहिए।

संक्षिप्त खबरें

गैंगस्टर एक्ट के मामले चार लोगों को पांच-पांच वर्ष की कारावास

नोएडा, । गौतम बुद्ध नगर जनपद की एक अदालत ने गैंगस्टर एक्ट के मामले में चार बदमाशों को पांच-पांच वर्ष के कारावास की सजा सुनायी है और उनपर पांच-पांच हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। एक पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि बिसरख थाने में 2019 मे पंजीकृत गैंगस्टर एक्ट के एक मामले में एक अदालत ने 18 दिसंबर को राजकुमार, संदीप, करण, राजू उर्फ राज बहादुर को दोषी पाते हुई उन्हें पांच वर्ष चार माह 15 दिन के कारावास की सजा सुनाई है। प्रवक्ता के अनुसार सभी अभियुक्तों पर पांच-पांच हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया गया। अर्थ दंड जमा न करने पर उन्हें 15-15 दिन की अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

मुख्यमंत्री से समस्याओं के निदान की मांग

नोएडा, । दादरी क्षेत्र की समस्याओं को लेकर भाजपा विधायक तेजपाल नागर ने लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने मुख्यमंत्री के सामने हैबतपुर और कुलेसरा क्षेत्र की बिजली की समस्या को रखा। इन इलाकों में बिजली के मीटर लगाकर बिजली कनेक्शन देने की मांग की। इसके अलावा शाहबेरी इलाके में जल निकासी की समस्या का स्थायी समाधान करने के लिए प्रयास किए जाएं। सिकंदराबाद औद्योगिक क्षेत्र में सड़कों का चौड़ीकरण किया जाए, जिससे वहां पर औद्योगिक इकाइयों का संचालन कर रहे लोगों को राहत मिल सके। उन्होंने जिले में आंदोलनरत किसानों की समस्याओं को भी मुख्यमंत्री के सामने रखते हुए उनके निदान की मांग की। विधायक का दावा है कि मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया है कि समस्याओं का समाधान कराया जाएगा।

एक देश एक चुनाव बिल का समर्थन

नोएडा, । उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने एक देश, एक चुनाव का समर्थन किया। प्रतिनिधि के जिलाध्यक्ष नरेश कुच्छल ने कहा कि एक देश एक चुनाव के बिल को लागू करने की देश में काफी जरूरत है। इससे मतदान प्रतिशत में भी बढ़ोतरी होगी। साथ ही नागरिकों को हर साल मतदान केंद्रों पर नहीं जाना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि देश में सिर्फ एक बार चुनाव होने से सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षाबलों को राहत मिलेगी। इससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और देश विश्व की आर्थिक महाशक्तियों में शामिल हो जाएगा। इसके लिए सभी राजनीतिक पार्टियों को इस बिल के समर्थन में आगे आना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि देश में ह्यएक देश एक करह्व यानी जीएसटी लागू हो सकता है तो एक देश एक चुनाव क्यों नहीं हो सकता? अब समय आ गया है कि सभी राजनीतिक दल खुले मन से इस मुद्दे पर बहस करें, ताकि इसे अमलीजामा पहनाया जा सके।

विक्रांत तोंगड़ को जल प्रहरी का पुरस्कार मिला

ग्रेटर नोएडा, । पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाले जिले के खेड़ी भनौता गांव के विक्रांत तोंगड़ को जल प्रहरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली के न्यू महाराष्ट्र भवन में बुधवार को आयोजित सम्मान समारोह के दौरान उन्हें यह पुरस्कार केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पटेल और केंद्रीय जल राज्य मंत्री राजभूषण चौधरी ने प्रदान किया। विक्रांत तोंगड़ वर्ष- 2010 से जल और पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर काम कर रहे हैं। जल प्रहरी पुरस्कार हर साल सरकार के साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण का काम करने वाली टेल संस्था द्वारा प्रदान किया जाता है। इस साल उत्तर प्रदेश से 6 व्यक्तियों को यह सम्मान मिला है। समारोह में केंद्रीय जल राज्य मंत्री राजभूषण चौधरी, सांसद बालयोगी उमेशकांत, सांसद पीसी सरंगी, टेल संस्था के सीईओ अमेय साते आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

छात्रों ने फिट इंडिया वॉक में हिस्सा लिया

नोएडा, । एमिटी विश्वविद्यालय में स्वस्थ रहने के गुरुवार को छात्रों ने फिट इंडिया वॉक किया। छात्रों ने बैनर पोस्टर सहित ह्यफिटनेस का डोज आधा घंटा रोज का नारा लगाया। एमिटी विश्वविद्यालय की वाइस चांसलर डॉ. बलविंदर शुक्ला ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री और युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा संचालित फिट इंडिया पहल के अंतर्गत एमिटी में फिट इंडिया सप्ताह का संचालन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत इस वॉक का आयोजन किया गया। इस दौरान एडिशनल प्रो वाइस चांसलर डा. संजीव बंसल, डॉ चंद्रदीप टंडन, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन की डीन डॉ. कल्पना शर्मा, एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन के निदेशक डा. संजय सिंह सहित हजारों की संख्या में छात्रों ने फिट इंडिया वॉक किया।

भारतीय राजनीति के अजातशत्रु थे अटलः योगी

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के अजातशत्रु थे। उन्हें सुशासन का प्रतीक माना जाता है। उन्होंने कहा राजनीतिक अस्थिरता को स्थिरता में बदलना, सुशासन के लक्ष्यों को प्राप्त करना, देश के अंदर अंत्योदय की योजना, हर गरीब-वंचित को अधिकार मिले, अंत्योदय कार्ड-राशन उपलब्ध कराने की कार्रवाई हो, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, अनुसूचित जाति-जनजाति या पिछड़े वर्ग को उनका अधिकार दिलाने के साथ ही स्वर्णिम चतुर्भुज, विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर व हाईवे अटल जी की देन है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को संगीत नाटक अकादमी में सुशासन सप्ताह का शुभारंभ किया। उन्होंने श्री वाजपेयी के व्यक्तित्व, कृतित्व पर लगाई गई प्रदर्शनी का शुभारंभ व अवलोकन किया। श्री वाजपेयी के जन्मदिवस की 100वीं वर्षगांठ पर 25 दिसंबर तक सुशासन सप्ताह मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत मां के महान सपूत, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज से पूरे देश-प्रदेश में सुशासन सप्ताह का शुभारंभ हो रहा है। अटल जी की पैतृक जन्मभूमि उत्तर प्रदेश है। उन्होंने अपनी कर्मभूमि के रूप में भी उत्तर प्रदेश को ही चुना। बलरामपुर व लखनऊ से कई बार उन्होंने संसद में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। विदेश मंत्री, प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने देश को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। अटल जी कवि, पत्रकार, साहित्यकार व राजनेता थे। वे समन्वय के साथ सबको लेकर चलने का सामर्थ्य रखते थे। वे भारतीय राजनीति के अजातशत्रु कहे जाते थे। अटल जी का छह दशक का सार्वजनिक जीवन बिना किसी कलंक के रहा। श्री योगी ने कहा कि आज से हर जनपद में कार्यक्रम प्रारंभ हुए है, जो सप्ताह भर (25 दिसंबर) चलेंगे। स्कूली बच्चों के लिए सुशासन पर निबंध लेखन, उच्च शिक्षा स्तर पर भाषण, पेंटिंग प्रतियोगिता, ग्रामीण क्षेत्र में संगोष्ठी के आयोजन हो रहे हैं। इसके साथ ही पूरे वर्ष भर भी आयोजन होंगे। विजेताओं को 25 दिसंबर को सम्मानित किया जाएगा। इस दिन शाम को अटल जी की कविताओं पर आधारित काव्य संध्या भी हर जनपद, स्कूलों-कॉलेजों में होगी। इसमें नवोदित कवियों को मंच प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि अटल जी की सेवाएं व कृतित्व देशवासियों के लिए प्रेरणा है। सुशासन सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश के हर स्कूल-कॉलेज, संस्थान में इससे संबंधित कार्यक्रम होंगे। श्रद्धेय अटल जी के आदर्शों से प्रेरणा हम सभी का मार्गदर्शन होगा। अटल जी ने सुशासन के जिन लक्ष्यों को देखा और सोचा था, पीएम मोदी के नेतृत्व में देश इसे प्रभावी ढंग से लागू भी कर रहा है। यह लक्ष्य प्रदेश भी प्राप्त करेगा। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, संस्कृति व पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

सीएम योगी के नेतृत्व में तेजी से हो रहा ग्रामीणों की समस्याओं का निराकरण

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व व निर्देशन में प्रदेश की पंचायतों की भूमिका अब पहले से अधिक महत्वपूर्ण और जवाबदेही भरी हो गई है। सीएम योगी द्वारा पंचायतों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए गए हैं। रोजगार मेले, किसान विकास योजनाएं और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गांवों में समग्र विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। डिजिटल तकनीक के समावेश ने पंचायतों की कार्यप्रणाली को पारदर्शी और प्रभावी बना दिया है। सीएम योगी ने पंचायत निधि के बेहतर और सार्थक उपयोग पर जोर देते हुए निर्देश दिया है कि इसका लाभ सीधे वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। उन्होंने पंचायतों से रेन वाटर हार्वेस्टिंग जैसी योजनाओं को प्राथमिकता देने और ऐसे काम करने की अपील की है, जो पंचायतों को विशिष्ट पहचान दें। उन्होंने ग्राम पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह की पहल की है। सीएम योगी ने पंचायतों को नए और नवाचारी प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उनके क्षेत्र को अलग पहचान दें। पंचायतों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे सामुदायिक शौचालयों और सार्वजनिक स्थानों की सफाई को प्राथमिकता दें। सीएम योगी ने गांवों में कम्युनिटी सेंटर बनाकर उसका आर्थिक रूप से उपयोग करने की बात कही है। यह न केवल पंचायतों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगा। सीएम योगी की मंशानुरूप पंचायतों में आदर्श गांव, विकसित गांव और आत्मनिर्भर गांव बनाने की दिशा में बड़े पैमाने पर कार्य किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व और निर्देशन में ग्राम चौपाल की पहल ने यह सुनिश्चित किया है कि सरकार खुद चलकर ग्रामीणों और गरीबों के पास जाए। यह पहल शासन और जनता के बीच विश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ समस्याओं के समाधान को सरल और सुलभ बना रही है। प्रदेश के प्रत्येक विकास खंड की दो ग्राम पंचायतों में प्रत्येक शुक्रवार को ग्राम चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। गांव की समस्या गांव में समाधान के मूल मंत्र के साथ आयोजित इन चौपालों ने ग्रामीणों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया है। ग्राम चौपालों में न केवल व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान हो रहा है, बल्कि सार्वजनिक मुद्दों पर भी कार्रवाई की जा रही है। इन चौपालों से गांवों में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जमीनी हकीकत का पता चलता है और सामाजिक योजनाओं के क्रियान्वयन में भी तेजी आई है। ग्राम चौपालों की सफलता के लिए गांवों में सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। चौपालों से पहले व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोग इनसे जुड़ सकें। यह पहल ये भी सुनिश्चित करती है कि सरकारी योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ हर जरूरतमंद तक पहुंचे। ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी के अनुसार, जनवरी 2023 से अब तक 01 लाख 13 हजार से अधिक ग्राम चौपालों का आयोजन किया जा चुका है। इन चौपालों में 79 लाख से अधिक ग्रामीणों ने भाग लिया और 04 लाख 42 हजार से अधिक समस्याओं का निस्तारण किया गया। सीएम योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की पंचायतें विकास की नई परिभाषा गढ़ रही हैं। डिजिटल तकनीक, स्वच्छता, और आत्मनिर्भरता को अपनाकर पंचायतें ग्रामीण भारत का भविष्य लिखने की दिशा में अग्रसर हैं। ग्राम चौपाल जैसी योजनाओं के माध्यम से सरकार ने यह साबित किया है कि गांव की समस्याओं का समाधान गांव में ही किया जा सकता है। योगी सरकार की यह पहल न केवल गांवों को सशक्त बना रही है बल्कि आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की ओर भी अग्रसर है। ग्रामीण विकास के इस मॉडल ने पंचायतों को नए अवसरों और जिम्मेदारियों के साथ मजबूती प्रदान की है, जिससे उत्तर प्रदेश देशभर में एक मिसाल बनता जा रहा है।

ड्रेन का निर्माण शुरू

ग्रेटर नोएडा, । गांवों में आबादी के बीच स्थित तालाब के ओवरफ्लो होने की समस्या के स्थाई समाधान के लिए ड्रेन या नाली का निर्माण कर बड़े नाले से जोड़ने की योजना है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने घोड़ी बछेड़ा और तिलपता गांव से इसकी शुरूआत कर दी है। ड्रेन का निर्माण कर नाले से जोड़ने का काम चल रहा है। घोड़ी बछेड़ा गांव के अंदर स्थित तालाब से लेकर गांव के बाहर स्थित नाले तक 1100 मीटर लंबी ड्रेन का निर्माण किया जा रहा है। ड्रेन को बड़े नाले से जोड़ा जाएगा। इससे गांव में जल निकासी सुनिश्चित हो जाएगी। प्राधिकरण अधिकारी के मुताबिक सूरजपुर, दादूपुर, तिलपता सहित अन्य गांवों में स्थित तालाब के ओवरफ्लो होने की समस्या को दूर करने के लिए ड्रेन का निर्माण किया जाना है। प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष कुमार द्विवेदी ने बताया कि तालाबों के ओवरफ्लो होने की समस्या को स्थाई रूप से दूर करने के लिए ड्रेन के निर्माण की योजना बनाई गई है। घोड़ी बछेड़ा गांव में ड्रेन का निर्माण चल रहा है। तालाब के अतिरिक्त पानी को ड्रेन के माध्यम से नाले तक पहुंचाया जाएगा। जल निकासी की बेहतर व्यवस्था हो,यह सुनिश्चित किया जा रहा है।

डिलीवरी ब्वॉय से मोबाइल लूटा

ग्रेटर नोएडा, । संवाददाता सूरजपुर कोतवाली क्षेत्र में एक डिलीवरी ब्वॉय से मोबाइल लूट का मामला सामने आया है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने घटना के डेढ़ महीने बाद लूट का मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस का कहना है कि लुटेरों को गिरफ्तार का घटना का खुलासा किया जाएगा। मूलरूप से जालौन का रहने वाला अंकुश सिंह सेक्टर म्यू दो स्थित शिव शक्ति अपार्टमेंट में किराए के फ्लैट में रहता है। वह जोमैटो में डिलीवरी ब्वॉय का काम करता है। पीड़ित के मुताबिक करीब डेढ़ महीने पहले मेट्रो डिपो गोल चक्कर के समीप बाइक सवार तीन बदमाशों ने उसका मोबाइल लूट लिया था। इस घटना की शिकायत पीड़ित ने पुलिस से की थी। पुलिस ने अब इस मामले में मुकदमा दर्ज किया है। कोतवाली प्रभारी का कहना है कि पीड़ित की तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है। लुटेरों को गिरफ्तार कर लूटा गया मोबाइल बरामद किया जाएगा।

घरेलू सहायक पांच लाख रुपये लेकर भागा

ग्रेटर नोएडा, । सेक्टर जीटा-1 की सोसाइटी में रहने वाले सीनियर सिटीजन ने अपने घरेलू सहायक पर पांच लाख रुपये लेकर भागने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने पुलिस से इसकी शिकायत की है। सूरजपुर पुलिस ने आरोपी नौकर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। सूरजपुर पुलिस के मुताबिक सेक्टर जीटा-1 स्थित सोसाइटी में सीनियर सिटीजन अजय सिरोही परिवार के साथ रहते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि उन्होंने अपनी देखरेख और घर के कामकाज के लिए घरेलू सहायक रखा हुआ था। एक सप्ताह पहले वह घर से पांच लाख रुपये लेकर भाग गया। सूरजपुर कोतवाली प्रभारी का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपी रिपू सुदन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है। आरोपी को गिरफ्तार कर रुपये बरामद किए जाएंगे।

कार में अ श्लील हरकत कर रहे महिला-पुरुष गिरफ्तार

नोएडा, । पुलिस ने बुधवार रात सेक्टर-50 स्थित मेट्रो स्टेशन के निकट सड़क किनारे कार में अश्लील हरकत कर रहे महिला-पुरुष को गिरफ्तार किया। पुलिस ने एमवी ऐक्ट की धारा में उनकी कार को भी सीज कर दिया। पुलिस को बुधवार रात करीब 11 सूचना मिली कि सेक्टर-50 मेट्रो स्टेशन के निकट सड़क किनारे झाड़ियों में एक कार खड़ी है। उसमें एक महिला और एक पुरुष अश्लील हरकतें कर रहे हैं। इससे वहां से गुजरने वाली महिलाओं को असहजता का सामना करना पड़ रहा है। पुलिस मौके पहुंची और महिला और पुरुष को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान दोनों ने पुलिस को बताया कि दोनों एक दूसरे को काफी दिन से जानते हैं। दोनों ने पुलिस से अपनी गलती स्वीकार करते हुए माफी मांगी। आरोपी पुरुष की पहचान बरौला गांव निवासी के रूप में हुई, जबकि 31 वर्षीय महिला मूलरूप से बिहार के सीतामढ़ी की रहने वाली है। वह वर्तमान में ग्रेटर नोएडा के एक गांव में रहती है। एडीसीपी मनीष कुमार मिश्र ने बताया कि पुलिस ने बीएनएस की धारा 296 के तहत दोनों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज किया।

सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में 25 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा जिला स्तरीय कार्यक्रमः डीसी

फरीदाबाद, । डीसी विक्रम सिंह ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती को प्रत्येक वर्ष प्रदेश सरकार द्वारा सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक जिला में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों सुशासन पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय व जिला स्तरीय कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर डीसी विक्रम सिंह के निदेर्शानुसार सीईओ जिला परिषद सतबीर मान ने संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में राज्य स्तरीय कार्यक्रम गुरुग्राम में आयोजित किया जाएगा, जिसमें मुख्यमंत्री नायब सैनी बतौर मुख्यातिथि शिरकत करते हुए सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित करेंगे। इसके अलावा जिला स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगे।

फरीदाबाद में आंगनबाड़ी वर्करों का प्रदर्शन, वेतन बढ़ाने की मांग

फरीदाबाद, । फरीदाबाद में गुरुवार को आंगनबाड़ी वर्कर्स एवं हेल्पर हरियाणा यूनियन की महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने सेक्टर 12 डीसी ऑफिस में पहुंचकर अपनी मांगो को लेकर नारेबाजी की। इस दौरान वर्करों ने महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रुति चौधरी के नाम फरीदाबाद एसडीएम शिखा आंतिल को ज्ञापन सौंपा। आंगनवाड़ी वर्कर एवं हेल्पर यूनियन की जिला अध्यक्ष मालवती ने बताया कि लंबे समय से हमारी मांग और समस्याओं का समाधान नहीं किया जा रहा। इसलिए आज सभी वर्करों के साथ अपनी सभी मांगो को लेकर सेक्टर 12 डीसी ऑफिस में ज्ञापन देने के लिए पहुंचे। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा पोषण ऐप शुरू किया गया है, जिस पर काम करने में कठिनाई होती है। उन्होंने कहा कि जब हम टेक होम राशन भरते हैं तो बेनिफिशियरी की फोटो मांगा जाता है। जब एक महीने बाद टीएचआर लेकर उस व्यक्ति के पास भरने के लिए जाते है तो फिर से उसकी फोटो सबमिट करनी होती है। जब एक बार उसके व्यक्ति की फोटो सबमिट कर दी है, तो दोबारा मांगने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। अगर कोई दूसरा साथ लाभार्थी का सबमिट करेगा तो वह टीएचआर सबमिट नहीं होगी। मालवती ने कहा कि इस ऐप को बंद कर देना चाहिए।

यूपी विधानसभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित, हंगामे के बीच पास हुआ अनुपूरक बजट

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश विधानमंडल सत्र की कार्यवाही गुरुवार को शुरू होते ही समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने गृहमंत्री अमित शाह के संविधान निमार्ता डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर पर दिए गए बयान पर जमकर हंगामा किया और नारेबाजी की। सपा सदस्य विधानसभा में डॉ. अंबेडकर की फोटो लेकर पहुंचे थे। सदन की कार्यवाही के दौरान जमकर हंगामा होता रहा। हंगामे के बीच ही अनुपूरक बजट पास कर दिया गया और इसके बाद सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। दरअसल, सपा सांसदों से विधानसभा अध्यक्ष ने कई बार शांत रहकर चर्चा में शामिल होने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं माने। इसके बाद सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि यह लोग मन बनाकर आए हैं कि आज सदन नहीं चलने देंगे। सदन में चर्चा नहीं करेंगे। हंगामा करेंगे। वित्त मंत्री ने अनुपूरक बजट मंजूर करने का प्रस्ताव पेश किया। हंगामे के बीच ही अनुपूरक बजट बिना चर्चा के पारित हुआ और विधानसभा अध्यक्ष ने सर्व सम्मति के बजट पारित करने की घोषणा की। विधानसभा अध्यक्ष ने सपा विधायकों के हंगामे के बीच कहा कि कुंभ विपक्ष का एजेंडा नहीं है। इसलिए वह चर्चा नहीं करना चाहता है। लेकिन अनुपूरक बजट पर चर्चा करें। मेरा काम है कि अनुपूरक बजट पर चर्चा हो। सुरेश खन्ना ने कहा की कुंभ पर चर्चा से भागना संस्कृति और सनातनी लोगों का अपमान है। विपक्ष ने कहा था कि कुंभ पर चर्चा कराई जाए। कुंभ में 40 करोड़ लोग आएंगे। ऐसा आयोजन पूरी दुनिया में कहीं नहीं होता है। उधर, विधानसभा अध्यक्ष महाना से बहस के बाद निष्कासित किए गए सपा विधायक अतुल प्रधान हजरतगंज में बाबा साहब की प्रतिमा के नीचे धरने पर बैठ गए हैं। अतुल प्रधान को बुधवार को विधानसभा के पूरे सत्र से निष्कासित कर दिया था। इसके पहले वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि बाबा साहेब का सम्मान भाजपा ने सबसे ज्यादा किया। विपक्ष ने बाबा साहेब के बनाए संविधान की प्रस्तावना को भी बदल दिया। बाबा साहेब को विपक्ष ने कभी सम्मान नहीं दिया। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि सदन में किसानों के मुद्दे पर चर्चा करनी है। बाबा साहब का सम्मान सभी करते हैं। पूरा प्रदेश देख रहा है। मै आपसे प्रार्थना करता हूं कि अपनी सीट पर जाएं। विपक्ष ने बाबा साहेब को कभी सम्मान नहीं दिया। बाबा साहब की फोटो का सम्मान कीजिए, उसे गले से लगाइए।

यूपी के शाहजहांपुर में ट्रक ने कार को मारी टक्कर, पांच की मौत

प्रात: किरण, संवाददाता

शाहजहांपुर, । उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में बीती रात ट्रक ने कार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि कार में सवार पांच लोगों की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। जबकि पांच लोग घायल हो गए। पुलिस ने सभी को एंबुलेंस से राजकीय मेडिकल कालेज में भर्ती कराया है। हादसे की जानकारी मिलते ही परिजन अस्पताल पहुंच गए। एक परिवार के तीन लोगों की मौत से कोहराम मच गया। इसी परिवार के तीन लोग घायल भी है। जानकारी मिलने के बाद डीएम, एसपी, एसपी सिटी पुलिस बल के साथ राजकीय मेडिकल कालेज पहुंचे। उन्होंने घायलों का हालचाल जाना। डीएम ने बेहतर इलाज करने के निर्देश दिए हैं। यह घटना थाना मदनापुर क्षेत्र में हुआ है। थाना कांट क्षेत्र के नवादा जिले के रहने वाले 40 साल के रियासत अली, 38 साल की पत्नी आमना बेगम, 7 साल की बेटी गुड़िया, खुशी, सुबहान और अरमान के साथ अपनी कार से दिल्ली जाने के लिए देर रात नौ बजे निकले थे। अर्टिगा कार में उनकी जान पहचान का एक और परिवार बैठा था। घर से निकलते ही जैसे ही कार मदनापुर के बरखेड़ा के पास पहुंची। तभी तेज रफ्तार ट्रक ने कार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि कार के परखच्चे उड़ गए। कार चला रहे रियासत उनकी पत्नी आमना बेगम और उनकी छह साल की बेटी गुड़िया की मौके पर मौत हो गई। जबकि रियासत की बेटी खुशी, बेटे आरमान और सुबहान घायल हो गए। हादसे में कार में ही बैठी सात साल की नूर की मौत हो गई और उसकी मां गुलफशा घायल है। वहीं इसी कार में बैठी अन्नू की भी मौत हो गई। जबकि कार में बैठा उनका बेटा अंश घायल हो गया। सूचना के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सभी घायलों को राजकीय मेडिकल कॉलेज भेजा। जहां डाक्टर ने मृत घोषित कर शवों को मारचरी में रखवा दिया है। जबकि घायलों का इलाज किया जा रहा है। हादसे की जानकारी मिलते ही राजकीय मेडिकल कालेज के तीन डाक्टरों की टीम और पूरे स्टाफ को अलर्ट कर दिया गया। घायलों का इलाज कर उनको वार्ड में शिफ्ट किया गया। उसके बाद डीएम धर्मेंद्र प्रताप सिंह, एसपी राजेश एस और एसपी सिटी संजय कुमार भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। डीएम और एसपी ने घायलो से बातचीत कर उनको हरसंभव मदद का भरोसा दिया। उसके बाद डीएम ने डाक्टर से बातचीत कर बेहतर इलाज करने के निर्देश दिए।

कांग्रेस कार्यकर्ता की मौत मामला, लखनऊ पुलिस ने दर्ज की एफआईआर

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । कांग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडेय की मौत मामले में लखनऊ पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बुधवार को कांग्रेस ने विधानसभा का घेराव किया था। प्रदर्शन के दौरान ही कांग्रेस कार्यकर्ता की मौत हो गई थी। मृतक कार्यकर्ता की पहचान प्रभात पांडेय के रूप में हुई थी। इसी मामले में मृतक के चाचा मनीष कुमार पांडेय ने हुसैनगंज थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। डीसीपी रवीना त्यागी का कहना है,18 दिसंबर 2024 को प्रभात कुमार पांडे के चाचा मनीष कुमार पांडे की शिकायत के आधार पर हुसैन गंज पुलिस स्टेशन में हत्या की प्राथमिकी दर्ज की गई है। लखनऊ में उत्तर प्रदेश कांग्रेस पार्टी कार्यालय में हुई घटना के संबंध में आरोप लगाया गया कि मृतक दो घंटे से पार्टी कार्यालय में बेहोश था, उसे इनोवा कार में सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया। उन्होंने आगे कहा, एफआईआर दर्ज होने के बाद जांच शुरू कर दी गई है। फील्ड यूनिट घटनास्थल पर पहुंच गई है और सावधानीपूर्वक साक्ष्य एकत्र कर रही है। स्थान से सीसीटीवी फुटेज प्राप्त किए जाएंगे और विरोध के आयोजन के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही जिन लोगों ने इसमें भाग लिया, उनसे पूछताछ की जाएगी और उनके बयानों का दस्तावेजीकरण किया जाएगा।ह्व इससे पहले पुलिस को दी तहरीर में मनीष कुमार पांडेय ने बताया था कि मेरा भतीजा प्रभात कुमार पांडेय (31) गोमतीनगर में एक पीजी में रहकर एग्जाम की तैयारी कर रहा था। इसी बीच, 18 दिसंबर की शाम को उन्हें कांग्रेस कार्यालय से फोन आया कि उनका भतीजा बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ है। मृतक के चाचा मनीष कुमार पांडेय ने बताया कि कांग्रेस कार्यालय में जब मेरे परिचित ने दबाव बनाया, तो उन्होंने कार से प्रभात को अस्पताल पहुंचाया। इसके बाद प्रभात को अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया। उन्होंने बताया कि मेरे भतीजे को कोई भी बीमारी नहीं थी। उसके साथ जरूर कोई अनहोनी हुई है। मनीष ने इसे हत्या बताया है।

नामी कंपनी के नाम पर बनाए जा रहे थे नकली पाइप, फैक्टरी मालिक गिरफ्तार

नोएडा, । नोएडा के सूरजपुर थाना क्षेत्र में एक नामी कंपनी के नाम से नकली प्लास्टिक पाइप बनाने के आरोप में बृहस्पतिवार को एक फैक्टरी के मालिक को गिरफ्तार किया गया है। थाना सूरजपुर के प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार ने बताया कि बीती रात को सुप्रीम पाइप, आशीर्वाद पाइप नामक कंपनी के प्रबंधक मनीष जिंदल ने पुलिस को सूचना दी कि थाना सूरजपुर क्षेत्र के साइड सी में स्थित औद्योगिक क्षेत्र में एक फैक्टरी में उनकी कंपनी के नाम से नकली सीपीवीसी पाइप बनाए जा रहे हैं। कुमार ने बताया कि जिंदल से सूचना मिलने के बाद पुलिस की एक टीम ने वहां छापा मारा, तो वहां कंपनी का मालिक अनिल मौर्य मिला। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि कंपनी परिसर में जब जांच की गई तो भारी संख्या में सुप्रीम पाइप, आशीर्वाद के नाम से बने हुए पाइप मिले। उन्होंने कहा कि इन पाइप पर नकली मोहर लगाने वाली मशीन तथा पाइप बनाने में इस्तेमाल होने वाली मशीन व सामग्री बरामद की गई है। कुमार ने बताया कि पूछताछ के दौरान पुलिस को पता चला है कि आरोपी मौर्य काफी दिन से यहां पर नकली पाइप बनाकर बाजार में बेच रहा था। उन्होंने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और न्यायालय में पेश किया जा रहा है।

गृहमंत्री के बयान के विरोध में सपा सदस्य अंबेडकर की फोटो लेकर पहुंचे विधानसभा, किया हंगामा

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश विधानमंडल सत्र की गुरुवार को कार्यवाही शुरू होते ही समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने गृहमंत्री अमित शाह के संविधान निमार्ता डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर पर दिए गए बयान पर जमकर हंगामा किया और नारेबाजी की। सपा सदस्य विधानसभा में डॉ. अंबेडकर की फोटो लेकर पहुंचे थे। हंगामे को देखते हुए विधानसभा अध्यक्ष ने अन्य सदस्यों से प्रश्न पूछने की अपील की लेकिन किसी ने भी सवाल नहीं पूछा। इस दौरान सदन की कार्यवाही हंगामे के बीच होती रही। इस दौरान सपा सदस्य जय भीम और ह्यबाबा साहेब का यह अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान के नारे लगा रहे हैं। तख्तियां लेकर नारेबाजी की। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने पहले सपा विधायकों से शांत रहने की अपील की और बाद में नाराजगी भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब की फोटो आप लोग उल्टी-तिरछी पकड़े हुए हैं। आप क्या सम्मान करेंगे। पहले फोटो तो सीधी पकड़ें। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि बाबा साहेब का सम्मान भाजपा ने सबसे ज्यादा किया। विपक्ष ने बाबा साहेब के बनाए संविधान की प्रस्तावना भी बदल दी। बाबा साहेब का विपक्ष ने कभी सम्मान नहीं किया। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि सदन में किसानों के मुद्दे पर चर्चा करनी है। बाबा साहेब का सम्मान सभी करते हैं। पूरा प्रदेश देख रहा है। मै आपसे प्रार्थना करता हूं कि अपनी सीट पर जाएं। विपक्ष ने बाबा साहेब को कभी सम्मान नहीं दिया। बाबा साहब की फोटो का सम्मान कीजिए, उसे गले से लगाइए। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब की फोटो लगाकर राजनीति न करें। बाबा साहेब ने कहा था कि सदन में जनता के कल्याण की बात होगी। किसान के हित में बात करें। अपनी बात सीट पर बैठकर कहें, सरकार जवाब देगी। कांग्रेस ने सपा का समर्थन किया। कांग्रेस की विधायक आराधना मिश्रा ने सपा का समर्थन किया। वहीं, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा, गृह मंत्री अमित शाह बाबा साहेब अंबेडकर के प्रति श्रद्धा रखते हैं और उनके अनुयायियों की भावनाओं के अनुरूप काम करते हैं। कांग्रेस की राजनीतिक जमीन खिसक चुकी है इसलिए वो फर्जी मुद्दे उछाल रही है, जो कि तथ्य विहीन हैं। इधर, अखिलेश ने सपा कार्यालय में सुबह विधायकों के साथ मीटिंग की।

फिर विवादों में घिरे दिलजीत दोसांझ, चंड़ीगढ़ कॉन्सर्ट में किया नियमों का उल्लंघन, लगा जुर्माना

पंजाबी गायक दिलजीत दोसांझ तमाम विवादों के बाद भी दिल-लुमिनाती टूर को लेकर काफी व्यस्त हैं और अपने कॉन्सर्ट से फैंस का दिल जीत रहे हैं। पिछले दिन दिलजीत से चंडीगढ़ में अपना कॉन्सर्ट किया था, जिसके लेकर अब खबर सामने आ रही है कि गायक के कॉन्सर्ट के बाद फैंस ने उस जगह को काफी गंदा कर दिया था और आयोजकों को इसके लिए 25 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया गया। आइए जानते हैं कि पूरा मामला क्या है।

दिलजीत के कॉन्सर्ट में हुआ नियमों का उल्लंघन

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो दिलजीत के कॉन्सर्ट के बाद नगर निगम ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2018 के उल्लंघन का हवाला देते हुए आयोजकों को चालान जारी किया गया है। कॉन्सर्ट में कूड़ा और गंदगी फैलाने की शिकायतों के कारण नगर आयुक्त ने जुर्माना लगाया है। यही नहीं, खबर है कि सिंगर के फैंस ने मैदान में इतनी गंदगी की है कि लोगों का आना जाना भी अभी बंद कर दिया गया है।

गंदगी फैलाने का लगा आरोप

आयोजकों पर गंदगी का आरोप लगाते हुए पार्षद प्रेम लता का कहना है कि 14 के बाद 15 या 16 दिसंबर के लिए किसी को कोई भी अनुमति नहीं दी गई थी। इसके बावजूद मैदान में काफी गंदगी की गई है। जगह-जगह कूड़े और कचरे का ढेर देखने को मिल रहा है। ट्रकों और टेंट की भरमार थी। कार्यक्रम के तुरंत बाद मैदान की दुर्दशा हो गई है और स्थानीय लोगों का आना-जाना भी बंद है।

शोर के लेवल में हुई थी बढ़ोतरी

बता दें कि दिलजीत के कार्यक्रम से पहले हाई कोर्ट ने निर्देश दिए थे कि कॉन्सर्ट की नॉइस का लेवल 75 डेसिबल से ज्यादा नहीं होना चाहिए और इसका उल्लंघन करने पर उचित कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई थी। वही, एक और रिपोर्ट की मानें तो दिलजीत के संगीत कार्यक्रम के दौरान नॉइस 70 से 82 डेसिबल के बीच था। इस तरह दिलजीत के कॉन्सर्ट ने एक और नियम का उल्लंघन किया था।

लोगों को हुई थी परेशानी

यही नहीं, खबरों की मानें तो सिंगर के कॉन्सर्ट से वहां के रहने वालों और दुकानदारों को भी काफी परेशानी हुई है। मामले की अगली सुनवाई जनवरी के पहले सप्ताह तक के लिए स्थगित कर दिया गया है।

अनन्या ने दीपिका पादुकोण से सीखा जिंदगी का गहरा सबक

अनन्या पांडे अकसर ही अपनी बातों को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रोल हो जाती हैं। पहले उन्हें इस बात का बुरा लगता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। हाल ही में अनन्या ने बताया कि एक नामी बॉलीवुड एक्ट्रेस ने उन्हें खुद के लिए बोलने, खड़े होने की हिम्मत दी है। हाल ही में प्राइम वीडियो के 'ओ वुमनिया' शो में अनन्या पांडे ने बताया कि जब वह इंडस्ट्री में आई थी तो महज 18 साल की थी, तब उन्हें नहीं पता था कि बॉलीवुड में कैसे काम होता है। वह बस लोगों की बताई बातों को फॉलो करती थी। किसी बात पर अपना थॉट यानी विचार रखने से झिझकती थी। ऐसे में एक फिल्म में उनकी को-एक्ट्रेस ने उन्हें खुद के लिए खड़ा होना, खुद के लिए बोलना सिखाया। कौन है, वो एक्ट्रेस, जिससे अनन्या को जिंदगी और करियर के लिए एक गहरा सबक सीखा दिया। वो बहुत अच्छे से अपनी बात रखती हैं अनन्या ने बताया कि वह जब फिल्म 'गहराइयां (2022)' की शूटिंग कर रही थी, तो उनकी फिल्म में को-एक्टर दीपिका पादुकोण थीं। तब अनन्या ने देखा कि दीपिका कैसे अपनी बात को सेट पर सबके सामने रखती हैं, वह दूसरों के लिए भी खड़ी होती हैं, दूसरों को सपोर्ट करती हैं। अनन्या ने 'ओ वुमनिया' शो में कहा, 'जब कोई लड़की बोलती है तो उसे बॉसी कह दिया जाता है, जिसके साथ काम करना मुश्किल होता है। लेकिन दीपिका अपनी जरूरतों को सेट पर बहुत ही पोलाइट होकर बता देती थीं। तब मुझे फील हुआ कि ऐसे भी अपनी बातों को, जरूरतों को सेट पर रखा जा सकता है।'

कॉन्फिडेंट बनने में मदद मिली

अनन्या पांडे यह भी कहती हैं कि दीपिका पादुकोण की वजह से ही उनमें एक कॉन्फिडेंस आया। अब वह अपनी प्रॉब्लम को एक्सप्रेस करने की इंपॉर्टेंस को अच्छे से समझती हैं। ऐसा होने पर अनन्या को अपनी फिल्में चुनने में भी मदद मिल रही है।

अनन्या की आने वाली फिल्में

पिछले दिनों अनन्या एक फिल्म 'कंट्रोल' में नजर आई थी। इस फिल्म की कहानी सोशल मीडिया, एआई के हमारी जिंदगी पर बुरे असर के बारे में थी। जल्द ही अनन्या एक फिल्म अक्षय कुमार के साथ भी करेंगी। वह धर्मा प्रोडक्शन की एक फिल्म 'चांद मेरा दिल' भी कर रही हैं।

प्रभास की द राजा साब में स्पेशल डांस नंबर करेंगी नयनतारा

प्रभास इस समय फिल्मों के व्यस्त शेड्यूल में व्यस्त हैं। कल्कि 2898 ई. की अपार सफलता के बाद उनकी आगामी फिल्मों को लेकर दर्शकों को काफी उम्मीदें हैं। वहीं, अब प्रभास निर्देशक मारुति द्वारा निर्देशित द राजा साब की शूटिंग में व्यस्त हैं। इस फिल्म से जुड़ी जानकारियों ने पहले ही दर्शकों को उत्साहित कर दिया है। वहीं, अब द राजा साब पर नया अपडेट आया है, जो इसके स्पेशल सॉन्ग से जुड़ा हुआ है। स्पेशल सॉन्ग करेंगी नयनतारा हाल ही में आई खबरों से पता चला है कि इस हॉरर-कॉमेडी फिल्म के लिए एक विशेष गाने की योजना बनाई जा रही है। रिपोर्ट्स का दावा है कि इस गाने के लिए एक प्रमुख तमिल अभिनेत्री को चुना गया है। यह कोई और नहीं बल्कि साउथ की लेडी सुपरस्टार नयनतारा हैं। नयनतारा को फिल्म में एक खास गाना गाने के लिए चुना गया है। निर्माता इस स्पेशल सॉन्ग के लिए नयनतारा से संपर्क कर चुके हैं।

दूसरी बार साथ काम करेंगे नयनतारा-प्रभास

नयनतारा ने कथित तौर पर गाने के लिए हरी झंडी दे दी है और इसकी शूटिंग अगले महीने शुरू होने की उम्मीद है। हालांकि, इस बारे में आधिकारिक जानकारी आनी अभी बाकी है। यदि इन खबरों पर मुहर लगती है तो यह दूसरी बार होगा, जब नयनतारा और प्रभास साथ काम करेंगे। इससे पहले दोनों 2007 में आई फिल्म योगी में साथ काम कर चुके हैं। फिल्म में भरपूर कॉमेडी होने का वादा किया गया है, क्योंकि मारुति अपनी मनोरंजक फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। इसके अलावा फिल्म का पहला सिंगल संक्रांति 2025 के दौरान रिलीज होने की उम्मीद है। इसके बाद ट्रेलर मार्च में लॉन्च किया जाएगा। यह फिल्म 10 अप्रैल, 2025 को गर्मियों में सिनेमाघरों में आएगी।

मां बनने के कारण किया मुश्किलों का सामना, बोली-हर चीज को लेकर नजरिया बदल दिया

हाल ही में राधिका आप्टे ने एक फोटोशूट करवाया, जो उनके मदरहुड फेज को दिखाता है। राधिका आप्टे ने एक इंटरव्यू भी दिया, जिसमें अपनी बेटी के जन्म की खुशी को दोबारा साझा किया। साथ ही राधिका ने बताया कि प्रेग्नेंसी के दौरान और बाद में उनको कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। तमाम तरह की दिक्कत हुई राधिका हालिया दिए गए एक इंटरव्यू में बताती हैं कि पति बेनेडिक्ट टेलर (संगीतकार) और वह बच्ची के जन्म से काफी खुश हैं। साथ ही वह बताती हैं कैसे प्रेग्नेंसी के दौरान उनकी नींद पर असर हुआ। साथ ही उनकी बॉडी भी सूज गई थी। इसके अलावा शरीर में कई तरह के बदलाव भी आए थे। राधिका आप्टे ने कहा, 'सच तो यह है कि मुझे प्रेग्नेंसी के दौरान और बाद में खुद को स्वीकार करने के लिए काफी स्ट्रगल करना पड़ा।'

बढ़ गया था वजन

राधिका आप्टे आगे कहती हैं, 'मैंने कभी खुद का इतना वजन बढ़ते नहीं देखा था। मेरा शरीर सूज गया था, मेरे पेट में और निचले हिस्से में तेज दर्द होता था। इन सब चीजों के कारण मेरा हर चीज को लेकर नजरिया बदल गया था।'

राधिका ने यह भी बताया कि बेटी के जन्म के दो हफ्ते बाद भी उनके शरीर में कई तरह के बदलाव आते रहे।

शादी को हो चुका है लंबा समय

राधिका आप्टे नवंबर माह में ही मां बनी हैं। लेकिन उनकी शादी को लगभग 12 साल हो चुके हैं। राधिका ने संगीतकार बेनेडिक्ट टेलर से साल 2012 में शादी की थी। दोनों ही अपने-अपने कामों में काफी व्यस्त रहते हैं। अब इनकी जिंदगी में एक नन्ही परी आई तो दोनों काफी खुश हैं। राधिका आप्टे अगले साल एक फिल्म 'लास्ट डेज' में नजर आएंगी, यह एक इंग्लिश फिल्म होगी। इस साल वह फिल्म 'सिस्टर मिडनाइट' में नजर आई थीं।

इंडस्ट्री में मेरा कोई मुकाबला नहीं है, बादशाह पर किया तंज?

बॉलीवुड के दिग्गज रैपर हनी सिंह अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर काफी सुर्खियों में रहते हैं। अपने बयानों से सुर्खियां बटोरने वाले हनी सिंह का पिछले काफी समय से बादशाह से साथ विवाद गहराता ही जा रहा है। वही, आए दिन रैपर भी खुद को ट्रोल करने वालों पर बरसते हुए दिखाई देते हैं। आइए जानते हैं कि पूरा मामला क्या है। हाल ही में, एक साक्षात्कार में इंडस्ट्री में कॉम्पिटिशन के बारे में बात की और कहा, मैं कुछ लिखता हूं और गाता हूं। मुझे लगता है कि मुझसे बेहतर काम करने वाले बहुत ही कम हैं। इसलिए मुझे कॉम्पिटिशन से ज्यादा डर नहीं लगता है। क्योंकि मुझे नहीं लगता है कि कोई मुझे कॉम्पिटिशन दे रहा है। देखिए मेरे हेटर्स से नफरत मत कीजिए। वह मुझे आगे बढ़ने में काफी मदद करते हैं। इसलिए मैं उनकी बातों को ज्यादा तवज्जो नहीं देता हूं। हनी सिंह का यह बयान देखकर लगता है कि वह यह बात बादशाह के लिए कह रहे हैं। बता दें कि पहले हसल शो बादशाह जज करते थे, लेकिन अब इसे रैपर इक्का और रफ्तार जज कर रहे हैं।

हीरामंडी 2 को लेकर संजीदा शेख का खुलासा

संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज हीरामंडी- द डायमंड बाजार के पहले सीजन ने प्रशंसकों का खूब मनोरंजन किया। इस सीरीज का दूसरा सीजन भी आएगा। अब, सीरीज में वहीदा का किरदार निभाने वाली संजीदा शेख ने दूसरे सीजन पर एक बड़ा अपडेट शेयर किया है, जिसे सुनकर हीरामंडी के प्रशंसक बेहद खुश हो जाएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान संजीदा शेख ने संजय लीला भंसाली की हीरामंडी 2 पर अपडेट दिया है। संजीदा ने कहा कि हीरामंडी का आने वाला सीजन बड़ा और बेहतर होगा, लेकिन उन्होंने कहा कि शूटिंग की समय सीमा अभी भी तय नहीं हुई है, लेकिन सीरीज के दूसरे भाग के लिए सभी अभिनेता तैयार हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, संजीदा ने यह भी बताया कि हीरामंडी की रिलीज के बाद से उनकी जिंदगी कैसे बदल गई है। संजीदा ने कहा, निर्माता उनके अभिनय की प्रशंसा करते हैं, जिसे वह अविश्वसनीय रूप से खुद को पुरस्कृत पाती हैं। संजीदा ने कहा कि उनका हमेशा से मानना रहा है कि उनका काम खुद बोलना चाहिए और उन्हें खुशी है कि हीरामंडी के बाद अब उन्हें लोगों को अपने हुनर और अभिनय से परिचित कराने की जरूरत नहीं है। हीरामंडी वेब सरीज़ी गूगल ट्रेंड्स पर 2024 में सबसे अधिक खोजे जाने वाले शो और फिल्मों में से एक बन गया है। संजीदा ने इसपर अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि अभिनेता अपने अभिनय, चरित्र और शो के लिए पहचान चाहते हैं और सबसे ज्यादा खोजे जाने वाले शो का हिस्सा बनना वास्तव में खुशी की बात है।

एटली की सभी फिल्में क्यों हो रही हैं हिट? निर्देशक ने खुद खोला राज

एटली साउथ सिनेमा की हिट मशीन के नाम से भी जाने जाते हैं। इस समय निर्देशक बेबी जॉन के प्रमोशन में काफी व्यस्त हैं। एटली की पिछली फिल्म जवान भी बॉक्स ऑफिस पर काफी हिट रही थी और दुनियाभर में जमकर कमाई भी की थी। इसके बाद से एटली की लोकप्रियता में और इजाफा हुआ और अब हिंदी पट्टी में भी उनकी काफी अच्छी फैन फॉलोइंग देखने को मिल रही हैं।

इस वजह से सफल हो रही हैं एटली की फिल्में

अब हाल ही में, एक साक्षात्कार में एटली ने उस कारण के बारे में बताया है, जिसकी वजह से उनकी सभी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सफल हो रही हैं और पैसा कमा रही हैं। पिंकविला के साथ एक साक्षात्कार में एटली ने बताया, जब मैं शाहरुख खान के साथ जवान बनाई तो मैंने उनसे कहा कि सर आप देखिए कि विक्रम राठौर का कैरेक्टर कैसे दर्शकों के बीच लोकप्रिय होने जा रहा है। अभिनेता इस बात से राजी नहीं थे। इसलिए मैंने उनसे शर्त लगा ली थी। बाद में उन्होंने मुझसे खुद कहा कि मैं सही था।

मास शब्द का बताया अर्थ

इसके साथ ही एटली ने मास शब्द का अर्थ भी समझाया और कहा, मेरे हिसाब से मास वो भावना होती है, जो एक मां की होती है। यह सबसे परिचित होती है। जब कभी आप किसी लड़की के लिए रोते हैं या फिर अपने बच्चे के लिए रोते हैं, तो अपने आप मास हो जाता है। यही नहीं, जब आपको सही कारण से गुस्सा आता है तो आप मास हो जाते हैं। इसके अलावा जिसे लोग मास कहते हैं, वह असली मास नहीं होता है।

यह है एटली का मंत्र

एटली ने यह भी कहा, मुझे लगता है कि मेरी सभी फिल्में अच्छा कर रही हैं। वे हर क्षेत्र में काम कर रही हैं, और मेरी फिल्में बॉक्स ऑफ़स पर पैसा कमा रही हैं। यही मेरा मंत्र है।

इस दिन सिनेमाघरों में रिलीज होगी फिल्म

बता दें कि वरुण धवन की फिल्म बेबी जॉन 25 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इसके बाद एटली विजय सेतुपति के साथ एक तमिल फिल्म में भी काम करने वाले हैं।

धमाका करने को तैयार शहनाज, नई फिल्म का किया एलान

अभिनेत्री शहनाज गिल ने अपनी नई पंजाबी फिल्म का एलान किया है। फिल्म का नाम है इक कुड़ी फिल्म का पोस्टर साझा करते हुए शहनाज ने रिलीज डेट भी बताई। फिल्म अगले साल रिलीज होगी। शहनाज ने लिखा है, बहुत खुशी के साथ हम अपनी नई फिल्म इक कुड़ी का एलान कर रहे हैं। यह फिल्म 13 जून 2025 को दुनियाभर में रिलीज होगी। शहनाज गिल पंजाबी सिनेमा की लोकप्रिय अदाकारा है, वहां उन्हें पंजाब की कैटरीना के तौर पर जाना जाता है।

संक्षिप्त खबरें

सोने और चांदी की कीमतें गिरीं

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों के नीचे आने से घरेलू बाजारों में भी गुरुवार को सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट आई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में सोने की कीमतें 0.93 फीसदी नीचे आकर 75,938 रुपए प्रति 10 ग्राम जबकि चांदी 2.50 फीसदी फिसलकर 88,116 रुपए प्रति किलोग्राम रही गयीं। गत बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी के सरार्फा बाजार में सोने की कीमत 200 रुपए टूटकर 79,100 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गई। पिछले सत्र में 99.9 फीसदी शुद्धता वाले सोने की कीमत 79,300 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। तीन दिन की गिरावट के बाद बुधवार को चांदी 500 रुपए उछलकर 92,000 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। वहीं मंगलवार को यह 91,500 रुपए प्रति किलोग्राम पर थी। पिछले तीन सत्रों में चांदी 5,500 रुपए प्रति किलोग्राम गिरी है।

इस साल भारत के लगभग आधे अंतरराष्ट्रीय यात्रियों ने अंतिम समय में उड़ान बुकिंग की: रिपोर्ट

नई दिल्ली। इस साल यानी 2024 में भारत के अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के बीच स्वैच्छिक यात्रा में वृद्धि देखी गई। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इनमें से लगभग आधे लोगों ने अपने प्रस्थान से बमुश्किल एक सप्ताह पहले ही अंतिम क्षण में योजना बनाते हैं।यात्रा-बैंकिंग वित्तीय प्रौद्योगिकी मंच नियो द्वारा तैयार यात्रा रिपोर्ट भारतीय यात्रियों की बदलती मानसिकता पर प्रकाश डालती है, जो लचीलेपन को अपना रहे हैं, अनुभवों को प्राथमिकता दे रहे हैं, तथा सुव्यवस्थित यात्रा प्रक्रियाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इस साल भारतीयों द्वारा की गई 48 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की बुकिंग यात्रा से सिर्फ.सात दिन के अंदर की गई। इस प्रवृत्ति को आसान यात्रा पहुंच से समर्थन मिला, जहां 58 देशों ने भारतीय पासपोर्ट धारकों को वीजा-मुक्त या आगमन पर वीजा के विकल्प प्रदान किए। रिपोर्ट कहती है, हालांकि कई यात्रियों ने अल्प सूचना पर ही अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बुक कर ली थीं, लेकिन 30 प्रतिशत वीजा आवेदन यात्रा से 16-30 दिन पहले दिए गए थे, जो कि एक निश्चित स्तर की तैयारी का संकेत है। रिपोर्ट के अनुसार, अबतक भारतीय यात्रियों के लिए सबसे पसंदीदा गंतव्य दुबई ने अपनी शानदार खरीदारी और मनोरंजन के साथ 45 प्रतिशत छुट्टियां मनाने वालों को आकर्षित किया। सूची में दूसरे स्थान पर वियतनाम था, जो अपनी संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, जिसने 15 प्रतिशत यात्रियों को आकर्षित किया। कम संख्या में यात्रियों ने ओमान और जापान (एक-एक प्रतिशत) को चुना। पॉप संस्कृति ने भी इस वर्ष भारतीयों की यात्रा पसंद पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

माइक्रोमैक्स, फिसन ने भारत में स्टोरेज चिपसेट के डिजाइन विनिर्माण के लिए मिलाया हाथ

नई दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी माइक्रोमैक्स और ताइवान की स्टोरेज चिप कंपनी फिसन ने स्थानीय स्तर पर कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित ह्यस्टोरेज चिपसेट मॉड्यूल के डिजाइन व विनिर्माण के लिए एक संयुक्त उद्यम एमआईपीएचआई की स्थापना की है। माइक्रोमैक्स इंफॉर्मेटिक्स के सह-संस्थापक राहुल शर्मा ने बताया कि कंपनी ने अपने नोएडा संयंत्र में उत्पादन शुरू कर दिया है। शर्मा ने कहा, फिसन एनएएनडी कंट्रोलर और एनएएनडी स्टोरेज प्रौद्योगिकियों में अग्रणी है। हमने भारत में एक संयुक्त उद्यम स्थापित करने के लिए उनके साथ साझेदारी की है, जिसमें माइक्रोमैक्स की 55 प्रतिशत और फिसन की 45 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी। उन्होंने कहा कि कंपनी सर्वर के लिए स्टोरेज चिपसेट डिजाइन करने पर ध्यान केंद्रित करेगी, जो सुरक्षा तथा रणनीतिक दोनों दृष्टिकोणों से किसी भी देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

अदाणी समूह ने हम करके दिखाते हैं अभियान का नया संस्करण किया पेश

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। उद्योगपति गौतम अदाणी के समूह ने बृहस्पतिवार को अपने अभियान हम करके दिखाते हैं। का नया संस्करण पेश किया। इस अभियान को अदाणी समूह पर अमेरिकी अधिकारियों द्वारा लगाए गए रिश्वत के आरोपों तथा कठोर अभियोग से उबरने की कोशिश माना जा रहा है। समूह ने बयान में कहा, अपने पिछले संस्करण की सफलता को आगे बढ़ाते हुए यह मल्टी-मीडिया, मल्टी-प्लेटफॉर्म अभियान सांख्यिकी तथा आंकड़ों पर जोर देने की पारंपरिक कॉर्पोरेट रणनीति से आगे बढ़कर मानव-हित की प्रेरक कहानियों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये कहानियां लाखों भारतीयों के जीवन पर अदाणी की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के व्यापक व सकारात्मक प्रभाव को बयां करती हैं। अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड के निदेशक प्रणव अदाणी ने कहा, यह अभियान वास्तव में अदाणी समूह के सार को दशार्ता है। हमें हमारे आकार, गति तथा पैमाने के लिए जाना जाता है। इस पहल की खासियत यह है कि यह दिलों को छूने की शक्ति रखती है। यह सार्थक बदलाव के उत्प्रेरक के रूप में बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दशार्ती है। हमारे व्यवसायों के पीछे मानवीय कहानियों पर जोर देकर, हमारा मकसद गहरे भावनात्मक संबंध स्थापित करना और लाखों भारतीयों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हमारे समर्पण को रेखांकित करना है। गौरतलब है कि अमेरिका के न्याय मंत्रालय और अमेरिकी प्रतिभूति एवं विनिमय आयोग (एसईसी) ने 20 नवंबर 2024 को न्यूयॉर्क के पूर्वी जिले में अमेरिकी जिला न्यायालय में समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी, उनके भतीजे सागर अदाणी और प्रमुख कार्यकारी विनीत जैन के खिलाफ क्रमशः अभियोग तथा एक दीवानी शिकायत दाखिल की थी।ये आरोप प्रतिभूति धोखाधड़ी, वायर धोखाधड़ी और एसईसी दिशानिर्देशों के उल्लंघन से संबंधित हैं। आरोप है कि एजीईएल के बॉण्ड पेशकश दस्तावेजों में रिश्वत-रोधी और भ्रष्टाचार-रोधी नीतियों के संबंध में झूठे तथा भ्रामक बयान दिए गए। अदाणी समूह ने इन सभी दावों को खारिज किया है।

9 शेयर सालभर में देंगे डबल डिजिट रिटर्न

नई दिल्ली, एजेंसी। नया साल शुरू होने में अब कुछ ही दिन बचे हैं। कई लोगों साल की शुरुआत से ही अच्छे निवेश विकल्प की तलाश में जुट जाते हैं। यह उन्हें साल के अंत में अपने निवेश का मूल्यांकन करने में मदद करता है। क्या आपको भी 2025 में निवेश के लिए अच्छे शेयरों की तलाश है अगर हां तो आपकी यह मुश्किल कम हो सकती है। ईटी वेल्थ ने 2025 के लिए 9 बेहतरीन शेयर चुने हैं। ये कंपनियां अच्छी क्वालिटी की हैं। इनका वैल्यूएशन भी सही है। विश्लेषकों ने इन कंपनियों के 2024-25 और 2025-26 के मुनाफे के अनुमान बढ़ाए हैं। दिसंबर 2025 तक इन शेयरों में डबल डिजिट रिटर्न मिलने की उम्मीद है।

हालांकि, यह सलाह सिर्फ जानकारी के लिए है। निवेश से पहले किसी विशेषज्ञ से जरूर राय लें। इस शेयर का भविष्य 2025 में काफी अच्छा दिख रहा है। कंपनी गुरुग्राम, नोएडा, मुंबई, पुणे और हैदराबाद में कई नए प्रोजेक्ट लॉन्च करने वाली है। यह 2024-25 के दूसरे हिस्से में होगा। अभी शेयर की कीमत 3000.75 है। इसमें लगभग 26 प्रतिशत की बढ़त की उम्मीद है। ब्रांड की मजबूत पहचान और बाजार की मांग के चलते कंपनी अपने लक्ष्यों को पार कर सकती है। कंपनी किफायती प्रोजेक्ट्स पर ध्यान दे रही है। इससे अच्छी बिक्री हो रही है। कैश फ्लो भी अच्छा है। इस साल भी यह अच्छा कैश फ्लो बना रहेगा।

एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस

कंपनी के साथ कई फायदे हैं। इसका प्रोडक्ट पोर्टफोलियो अच्छा है। चैनल ऑपरेशंस दुरुस्त हैं। डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क मजबूत है। नए प्रोडक्ट्स पर काम होता रहता है। फ्रैंचाइजी के जरिए एजेंसी नेटवर्क पर जोर दिया जा रहा है। अलग-अलग सेगमेंट में पर्सिस्टेंसी बेहतर हुई है। अभी शेयर की कीमत 624 रुपये है। इसमें करीब 27 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस

इस कंपनी के दूसरी तिमाही के नतीजों के बाद आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज ने एक रिपोर्ट जारी की। इसमें कंपनी के कई फायदों का जिक्र है। कंपनी अब प्रॉफिटेबल रिटेल पोर्टफोलियो पर ध्यान दे रही है। एसेट परफॉर्मेंस की कड़ी निगरानी हो रही है। कॉरपोरेट ह्लक्क को कम करने पर जोर है। रिटर्न ऑन एसेट्स अच्छा है। लायबिलिटी मैनेजमेंट बेहतर हुआ है। अभी शेयर की कीमत 874 रुपये है। इसमें करीब 24 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

मैक्स फाइनेंशियल सर्विसेज

कंपनी के सितंबर तिमाही के नतीजों के बाद एलारा सिक्योरिटीज ने एक रिपोर्ट जारी की। इसमें कहा गया है कि कंपनी की ग्रोथ इंडस्ट्री और प्राइवेट सेक्टर दोनों से ज्यादा रहेगी। एजेंसी नेटवर्क के जरिए डिस्ट्रीब्यूशन बेहतर हुआ है। रिब्रांडिंग के बाद एक्सिस चैनल में अच्छी बढ़ोतरी हुई है। प्रोडक्ट पोर्टफोलियो भी मजबूत है। अभी शेयर की कीमत 1,141 रुपये है। इसमें करीब 22 प्रतिशत बढ़त की संभावना है।

आइनॉक्स विंड- नुवामा का मानना है कि कंपनी की ग्रोथ अच्छी रहेगी। इसके कई कारण हैं। जैसे कि 12-14तङ्ख ञ्जरू का इंडस्ट्री टेलविंड, एडवांस्ड टेक्नोलॉजी, मुनाफे वाला मेनटिनेंस सर्विस बिजनेस और मजबूत वित्तीय स्थिति। अभी शेयर की कीमत 190 रुपये है। इसमें करीब 18 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

प्रेस्टीज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स

कंपनी के सितंबर तिमाही के नतीजों के बाद एंटीक स्टॉक ब्रोकिंग की रिपोर्ट आई। इसमें कहा गया है कि कंपनी के डायवर्सिफिकेशन से उसे हाउसिंग ग्रोथ का फायदा मिलेगा।

पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन

कंपनी के सितंबर तिमाही के नतीजों के बाद मोतीलाल ओसवाल की रिपोर्ट आई। इसमें कंपनी के प्रदर्शन के कई अच्छे पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। लोन में बढ़ोतरी की अच्छी संभावनाएं हैं। कमाई अच्छी रहेगी। स्ट्रेस्ड एसेट्स का मैनेजमेंट अच्छा है। रिटर्न भी बढ़िया है। अभी शेयर की कीमत 487 रुपये है। इसमें 16 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स

एचएएल का प्रदर्शन बहुत अच्छा है। रिटर्न बढ़िया है। अंतरराष्ट्रीय बिक्री की संभावना है। कीमतें अनुकूल हैं। भारत की एयर डिफेंस जरूरतें बढ़ रही हैं। यह सब कंपनी के लिए फायदेमंद है। सरकार ने हाल ही में एचएएल को महारत्न पीएसयू का दर्जा दिया है। इससे कंपनी को वित्तीय और कामकाज से जुड़े फैसलों में ज्यादा स्वतंत्रता मिलेगी। अभी शेयर की कीमत 4483 है। इसमें करीब 15 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

एम्बर एंटरप्राइजेज इंडिया

कंपनी के सितंबर तिमाही के नतीजों के बाद आनंद राठी ने एक रिपोर्ट जारी की। इसमें कंपनी की ग्रोथ अच्छी रहने का अनुमान है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2023-24 में रेवेन्यू 25.6 प्रतिशत से बढ़कर 2026-27 में 37 प्रतिशत हो जाएगा। इसी दौरान ॠष्टश्व 8.3 प्रतिशत से बढ़कर 20.6 प्रतिशत होने की उम्मीद है। इसकी मुख्य वजह इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबिलिटी सेक्टर में तेजी है। अभी शेयर की कीमत 5993 रुपये है। इसमें करीब 17 प्रतिशत बढ़त की उम्मीद है।

स्टैण्डर्ड कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड ने जारी किए 5 बिलियन के गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर

मुंबई, एजेंसी। स्टैण्डर्ड कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड एक अग्रणी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी ने अपनी पूंजी संरचना को मजबूत करने और विकास की पहलों का समर्थन करने के लिए 5 बिलियन के गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर के सफल निर्गमन की घोषणा की है। कुल राशि में से 1.3 बिलियन कंपनी के ऑपरेशन को बेहतर बनाने और विस्तार करने के लिए सफलतापूर्वक जुटाए गए और रणनीतिक रूप से अलॉट किए गए हैं। यह निवेश ऑपरेशन दक्षता को बढ़ाने, क्षमता बढ़ाने और कंपनी के निरंतर विकास को गति देने के उद्देश्य से है। इस इश्यूएंस पर टिप्पणी करते हुए, स्टैण्डर्ड कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड के प्रबंधन ने कहा, इन एनसीडीस का सफल निर्गमन हमारे व्यावसायिक मॉडल और विकास की संभावनाओं में मजबूत निवेशक विश्वास का प्रमाण है। ऑपरेशन के लिए 1.3 बिलियन का उपयोग ऑपरेशन उत्कृष्टता को बढ़ाने और अपनी बाजार स्थिति को मजबूत करने के लिए हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का हिस्सा है। हम अपने शेयरधारकों और ग्राहकों के लिए दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करने पर केंद्रित हैं। कंपनी इस इश्यूएंस से प्राप्त शेष राशि का उपयोग विभिन्न रणनीतिक उद्देश्यों के लिए करेगी, जिसमें आगे विस्तार, कार्यशील पूंजी की आवश्यकताएं और मौजूदा देनदारियों में कमी शामिल है। स्टैण्डर्ड कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड को विश्वास है कि यह धन कंपनी को निरंतर विकास, नवाचार और बेहतर शेयरधारक मूल्य के लिए तैयार करेगा। इससे पहले, कंपनी ने इंटरैक्टिव फ्लैट पैनल प्राप्त करने के लिए स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों के लिए एक शून्य-लागत ईएमआई योजना की घोषणा की थी।

अब कंपनियां नहीं कर पाएंगी आपके पैसे का गलत इस्तेमाल

सेबी ने कर दिया पक्का इंतजाम

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीओ में निवेश करने वालों के लिए अच्छी खबर है। मार्केट रेगुलेटर सेबी के बोर्ड ने छोटी एवं मझोली कंपनियों के आईपीओ लाने से संबंधित प्रक्रिया को सशक्त करने के लिए बुधवार को एक सख्त नियामकीय रूपरेखा को मंजूरी दी। इसके अलावा, सेबी ने बिक्री पेशकश को सीमित करने का फैसला किया है और प्रमोटर्स के लिए चरणबद्ध 'लॉक-इन' पेश किया है। सेबी के बोर्ड की बैठक में यह फैसला किया गया। मार्केट रेगुलेटर ने एक बयान में इस बैठक में लिए गए फैसलों की जानकारी दी।

बयान के मुताबिक, सेबी के बोर्ड ने डिबेंचर ट्रस्टी, ईएसजी रेटिंग प्रदाताओं, इनविट्स, रीट्स और एसएम रीट्स के लिए कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देने के लिए सुधारों को भी मंजूरी दी। इसके अलावा अनुमोदित सुधारों का उद्देश्य एसएमई को एक अच्छा ट्रैक रिकॉर्ड प्रदान करना और निवेशकों के हितों की रक्षा करते हुए जनता से धन जुटाने का अवसर प्रदान करना है। इस संबंध में, बोर्ड ने सेबी विनियम, 2018 और सेबी विनियम, 2015 में संशोधन को मंजूरी दे दी।

जरूरी है मुनाफा

यह कदम एसएमई के निर्गम बढ़ने के बाद उठाया गया है, जिसने महत्वपूर्ण निवेशक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। लाभप्रदता मानदंड के संबंध में, एसएमई इकाइयों की तरफ से लाए जाने वाले आईपीओ के संबंध में सेबी ने कहा कि निर्गम लाने की योजना बनाने वाली छोटी एवं मझोली कंपनियों को अपना मसौदा दस्तावेज दाखिल करते समय पिछले तीन में से दो वित्त वर्षों में कम से कम एक करोड़ रुपये का परिचालन लाभ (ब्याज, मूल्यह्रास और कर से पहले की कमाई यानी एबिटा) दिखाना होगा।

नहीं होगा मिसयूज

एसएमई आईपीओ में गैर-संस्थागत निवेशकों के लिए आवंटन पद्धति को मुख्य बोर्ड आईपीओ में अपनाई गई पद्धति के अनुरूप बनाया जाएगा, ताकि एकरूपता सुनिश्चित की जा सके। एसएमई आईपीओ में सामान्य कॉरपोरेट उद्देश्य के लिए आवंटित राशि को कुल निर्गम आकार का 15 प्रतिशत या 10 करोड़ रुपये, जो भी कम हो, तक सीमित कर दिया गया है। एसएमई निर्गमों को आईपीओ से मिली राशि का उपयोग प्रमोटर्स, प्रमोटर ग्रुप या संबंधित पक्षों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लिए गए कर्ज चुकाने में करने की अनुमति नहीं होगी। एसएमई आईपीओ के लिए डीआरएचपी को 21 दिनों के लिए सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए उपलब्ध कराया जाना चाहिए। जारीकर्ताओं को समाचार पत्रों में घोषणाएं प्रकाशित करने और डीआरएचपी तक आसान पहुंच के लिए एक क्यूआर कोड शामिल करने की आवश्यकता होगी। एसएमई कंपनियों को मुख्य बोर्ड में स्थानांतरित हुए बिना ही आगे के निर्गमों के माध्यम से धन जुटाने की अनुमति होगी, बशर्ते वे मुख्य बोर्ड-सूचीबद्ध संस्थाओं पर लागू सेबी नियमों का अनुपालन करें।

डायरेक्ट टैक्स के मोर्चे पर अच्छी खबर, 16 लाख करोड़ के करीब पहुंचा कलेक्शन

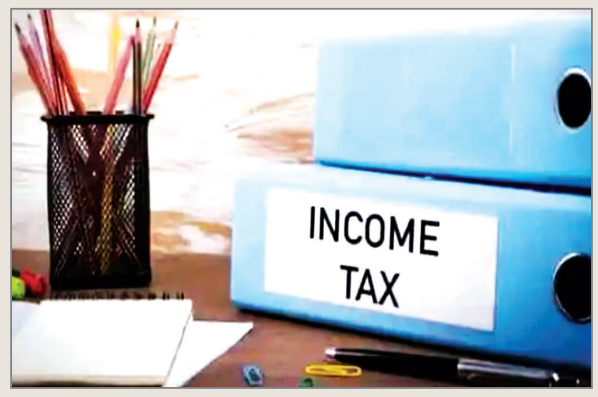

नई दिल्ली, एजेंसी। चालू वित्त वर्ष में अबतक यानी 17 दिसंबर तक नेट डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन सालाना आधार पर 16.45 प्रतिशत बढ़कर 15.82 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 2024-25 में अप्रैल से लेकर 17 दिसंबर तक डायरेक्ट टैक्स का कुल कलेक्शन 15.82 लाख करोड़ रुपये रहा है। इस दौरान एडवांस टैक्स कलेक्शन में सालाना आधार पर 21 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गई और यह 7.56 लाख करोड़ रुपये हो गया। कुल टैक्स कलेक्शन में 7.42 लाख करोड़ रुपये से अधिक का कॉरपोरेट टैक्स और 7.97 लाख करोड़ रुपये का नॉन-कॉरपोरेट टैक्स कलेक्शन भी शामिल है। इस अवधि में 40,114 करोड़ रुपये का प्रतिभूति लेनदेन कर (एसटीटी) भी एकत्र किया गया।

3.39 लाख करोड़ रुपये के टैक्स रिफंड

इस अवधि के दौरान 3.39 लाख करोड़ रुपये के टैक्स रिफंड जारी किए गए, जो सालाना आधार पर 42.49 प्रतिशत अधिक है। ग्रॉस डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन 19.21 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा जो एक साल पहले की समान अवधि के कलेक्शन की तुलना में 20.32 प्रतिशत अधिक है। बता दें कि डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन में कॉरपोरेट टैक्स, इंडिविजुल इनकम टैक्स और एसटीटी शामिल होते हैं।

पोस्ट

2024 में 10.7 लाख करोड़ रुपए रेमिटेंस के रूप में स्वादेश भेजे

विदेशों से पैसा भेजने वालों में भारत दुनिया में नंबर वन पर

पिछले वित्त0 वर्ष 2023-24 में 8.95 लाख करोड़ रुपए रेमिटेंस के रूप में स्वादेश भेजे गए थे। विश्व बैंक की एक ब्लॉदग पोस्ट के मुताबिक रेमिटेंस पाने में भारत के बाद मैक्सिको, चीन, फिलीपींस और पाकिस्तान का नंबर आता है।

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। विदेश से अपने देश पैसे भेजने वालों में भारतीय दुनियाभर में अव्विल हैं लगातार तीसरे साल भी यह सिलसिला बरकरार है। भारतीयों ने 2024 में 129 बिलियन डॉलर यानी करीब 10.7 लाख करोड़ रुपए भारत भेजे हैं। पिछले वित्त0 वर्ष 2023-24 में 8.95 लाख करोड़ रुपए रेमिटेंस के रूप में स्वादेश भेजे गए थे। विश्व बैंक की एक ब्लॉदग पोस्ट के मुताबिक रेमिटेंस पाने में भारत के बाद मैक्सिको, चीन, फिलीपींस और पाकिस्तान का नंबर आता है। रेमिटेंस विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक जरिया है। भारत में खाड़ी देशों के अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे विकसित देशों से रेमिटेंस आता है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक इस साल रेमिटेंस की वृद्धि दर 5.8 फीसदी रही, जो 2023 के मुकाबले 1.2 फीसदी ज्यादा है। महामारी के बाद

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के सदस्य देशों में नौकरी बाजार की रिकवरी को इस वृद्धि का मुख्य कारण बताया है। रिपोर्ट में यह भी बताया कि पिछले दशक में रेमिटेंस में 57 फीसदी की वृद्धि हुई है, जबकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में 41 फीसदी की गिरावट आई है। विश्व बैंक ने कहा कि निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रेमिटेंस प्रवाह 2024 में 685 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। रिपोर्ट में यह भी कहा कि प्रेषण अन्य बाहरी वित्तीय प्रवाहों की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है और इसमें भविष्य में और बढ़ोतरी की संभावना है। दक्षिण एशिया में रेमिटेंस प्रवाह 2024 में 11.8 फीसदी की वृद्धि के साथ सबसे ज्यादा बढ़ने का अनुमान है। इस क्षेत्र में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश प्रमुख योगदानकर्ता रहे। बता दें 2022 में प्रवासी भारतीयों ने 111.22 बिलियन डॉलर यानी करीब 9.28 लाख करोड़ रुपए भारत भेजे थे। इस कारण भारत 100 बिलियन डॉलर यानी 8.34 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा रेमिटेंस पाने वाला पहला देश बन गया था। विश्वब बैंक विशेषज्ञों का कहना है कि रेमिटेंस का इस्तेमाल गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य और शिक्षा के वित्तपोषण, और परिवारों की वित्तीय समावेशन में किया जाना चाहिए।

स्विट्जरलैंड के भारत का एमएफएन का दर्जा वापस लेने का हम पर कोई असर नहीं : नेस्ले इंडिया

प्रात: किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। रोजमर्रा के उपभोग का सामान (एफएमसीजी) बनाने वाली कंपनी नेस्ले इंडिया ने बृहस्पतिवार को कहा कि स्विट्जरलैंड द्वारा भारत को दिए गए एमएफएन (सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र) के दर्जे को निलंबित करने का कंपनी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।एफएमसीजी कंपनी ने बयान में कहा, दोहरे कराधान बचाव समझौते (डीटीएए) के तहत एमएफएन दर्जे का निलंबन भारत और स्विट्जरलैंड सरकार के बीच एक नीतिगत मुद्दा है। इसका सीधे तौर पर नेस्ले से कोई नाता नहीं है। नेस्ले इंडिया के पास मैगी, नेस्कैफे और किटकैट जैसे लोकप्रिय ब्रांड का स्वामित्व है। कंपनी पहले से ही सीमापार भुगतान पर 10 प्रतिशत विदहोल्डिंग कर की कटौती कर रही है।स्विट्जरलैंड ने 11 दिसंबर को दोहरे कराधान से बचाव के लिए भारत के साथ हुए समझौते में सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र (एमएफएन) के प्रावधान को निलंबित कर दिया था।स्विट्जरलैंड के वित्त मंत्रालय ने 11 दिसंबर को बयान में एमएफएन दर्जा वापस लेने की जानकारी देते हुए कहा था कि यह कदम भारत के उच्चतम न्यायालय के पिछले साल आए एक फैसले के संदर्भ में उठाया गया है। उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में कहा था कि अगर किसी देश के ह्यआर्थिक सहयोग एवं विकास संगठनह्ल (ओईसीडी) में शामिल होने से पहले भारत सरकार ने उस देश के साथ कर संधि पर हस्ताक्षर किए हैं तो एमएफएन प्रावधान अपने-आप लागू नहीं होता है।

संक्षिप्त खबरें

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में कैसे पहुंच सकता है भारत

नई दिल्ली। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच ब्रिसबेन में तीसरा टेस्ट ड्रॉ होने का मतलब है कि यहां से भारत को बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बचे अपने दोनों मैच क्वारलिफाई करने के लिए जीतने होंगे, अगर वह दूसरे परिणामों पर निर्भर नहीं रहना चाहते हैं। भारत की दो जीत का मतलब है कि उनका जीत का प्रतिशत 60.53 हो जाएगा, जबकि ऑस्ट्रे लिया, श्रीलंका से 2-0 से सीरीज जीतने के बाद भी 57.02 प्रतिशत अंक ही ला पाएगा। दूसरी ओर अगर भारत एक टेस्टन जीतता है और एक ड्रॉ करता है तो उनके 57.02 प्रतिशत अंक होंगे और ऑस्ट्रेभलिया तभी उनसे आगे निकल सकता है जब वे श्रीलंका को 2-0 से हराए, तब ऑस्ट्रेटलिया के 58.77 प्रतिशत अंक हो जाएंगे।अगर भारत 2-1 से सीरीज जीत जाता है तो ऑस्ट्रे लिया को श्रीलंका को 1-0 से अधिक के अंतर से हराना होगा या दक्षिण अफ़्रीका पाकिस्ताजन से कम से कम 0-1 से हार जाए। अगर सीरीज 2-2 से ड्रॉ हो : तब भारत 55.26 प्रतिशत पर अंत करेगा और तब ऑस्ट्रेभलिया को श्रीलंका से कम से कम 1-0 से हार झेलनी होगी या दक्षिण अफ़्रीका को पाकिस्तापन से 2-0 से हारना होगा।अगर सीरीज 1-1 से ड्रॉ पर रहे : तब भारत 53.51 जीत प्रतिशत पर समाप्त करेगा, दक्षिण अफ़्रीका को तब दोनों टेस्ट हारने होंगे या ऑस्ट्रे लिया को श्रीलंका से सीरीज 1-0 से हारनी होगी या 0-0 से ड्रा करनी होगी। अगर दोनों सीरीज ड्रॉ होती हैं तो ऑस्त्रे लिया और भारत के 53.51 प्रतिशत अंक रह जाएंगे, लेकिन भारत इस चक्र में अधिक सीरीज जीतने की वजह से आगे बढ़ जाएगा, लेकिन श्रीलंका 2-0 से जीतता है तो वे भारत से आगे बढ़ जाएंगे।

हैदराबाद एफसी ने मुख्य कोच थांगबोई सिंगतो को बर्खास्त किया

हैदराबाद। हैदराबाद एफसी ने इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के वर्तमान सत्र में अभी तक टीम के निराशाजनक प्रदर्शन को देखते हुए मुख्य कोच थांगबोई सिंगतो को तत्काल प्रभाव से बर्खास्त कर दिया है। हैदराबाद एफसी अभी 11 मैचों में दो जीत और एक ड्रॉ के साथ अंक तालिका में 12वें स्थान पर है।सिंगतो 2020 में सहायक कोच और तकनीकी निदेशक (युवा) के रूप में क्लब से जुड़े थे। उन्हें जुलाई 2023 में मुख्य कोच नियुक्त किया गया था।क्लब ने बयान में कहा, हैदराबाद एफसी सिंगतो का उनके समर्पण, पेशेवरपन और क्लब में योगदान के लिए आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता है। इस पद पर अगली नियुक्ति तक सहायक कोच शमील चेम्बकथ अंतरिम मुख्य कोच की भूमिका निभाएंगे।

सिमोना हालेप को ऑस्ट्रेलियाई ओपन क्वालीफाइंग के लिए वाइल्ड कार्ड

मेलबर्न। डोपिंग के कारण निलंबन झेलने के बाद वापसी की कवायद में लगी दो बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सिमोना हालेप और पूर्व टेनिस दिग्गज लेटिन हेविट के 16 वर्षीय बेटे क्रूज उन खिलाड़ियों में शामिल हैं जिन्हें अगले महीने शुरू होने वाले ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूनार्मेंट के क्वालीफाइंग के लिए वाइल्ड कार्ड दिया गया है।रोमानिया की 33 वर्षीय हालेप ने 2018 में फ्रेंच ओपन और 2019 में विंबलडन खिताब जीते थे। वह एक समय विश्व की नंबर एक खिलाड़ी थी लेकिन अभी 877वें स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलियाई ओपन में 2018 में उपविजेता रही हालेप ने 2022 के बाद किसी ग्रैंड स्लैम टूनार्मेंट में हिस्सा नहीं लिया है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन के छह से नौ जनवरी तक होने वाले क्वालीफाइंग मुकाबलों के लिए जिन अन्य खिलाड़ियों को वाइल्ड कार्ड दिया गया है उनमें पुरुष वर्ग में 2023 में विंबलडन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले क्रिस यूबैंक, डैन इवांस और बर्नार्ड टॉमिच, जबकि महिला वर्ग में पेरिस ओलंपिक की युगल स्वर्ण पदक विजेता सारा इरानी, पेट्रा मार्टिच और एना कोन्जुह शामिल हैं।

बीसीसीआई ने सहयोगी स्टाफ के साथ अश्विन के मस्ती भरे पलों को याद किया

नई दिल्ली, 19 दिसंबर (वेब वार्ता)। मैदान पर बेहद दृढ़ और कड़क नजर आने वाले रविचंद्रन अश्विन ड्रेसिंग रूम में पूरी तरह बदले हुए नजर आते हैं जहां उन्हें अपने साथियों और सहयोगी स्टाफ के साथ मस्ती करने के लिए जाना जाता है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने अश्विन के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के एक दिन बाद कुछ फुटेज जारी किए हैं जिसमें इस ऑफ स्पिनर को इनडोर नेट सुविधा में सहयोगी स्टाफ से गेंदबाजी का सबक लेते हुए दिखाया गया है। बीसीसीआई ने एक्स पर पोस्ट किया, मैदान पर कई मुकाबले यादगार रहे। लेकिन ये कुछ ऐसे पल भी हैं जो अश्विन को अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की याद दिलाएंगे। अश्विन ने बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ब्रिस्बेन में बारिश से प्रभावित तीसरा टेस्ट मैच ड्रॉ छूटने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के घोषणा करके सभी को चौंका दिया था।वीडियो फुटेज में अश्विन को फील्डिंग कोच टी दिलीप, ट्रेनर सोहम देसाई, विश्लेषक हरि प्रसाद मोहन और मालिशिए अरुण कनाडे के साथ मस्ती करते हुए दिखाया गया है।

अश्विन हमारे लिए हमेशा परेशानी का सबब रहे : मिशेल स्टार्क

ब्रिस्बेन, 19 दिसंबर (वेब वार्ता)। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले रविचंद्रन अश्विन की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि भारत के खिलाफ कुछ यादगार मुकाबलों में इस ऑफ स्पिनर ने उनकी टीम के सामने कड़ी चुनौती पेश की। अश्विन ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला के तीसरे मैच के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा करके सभी को चौंका दिया था। अश्विन ने 2011 से 2024 के बीच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 23 टेस्ट मैच में 115 विकेट लिए। इस बीच उन्होंने एक बार मैच में 10 या इससे अधिक विकेट तथा सात बार पारी में पांच या इससे अधिक विकेट लेने का कारनामा किया। स्टार्क ने तीसरा मैच ड्रॉ रहने के बाद एसईएन रेडियो से कहा, वह (अश्विन) भारत में हमेशा हमारी टीम के लिए परेशानी का सबब रहे हैं और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में भी श्रृंखला में अहम भूमिका निभाई।

भारत-पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में नहीं खेलेंगी

● आईसीसी मीटिंग में फैसला ● चैंपियंस ट्रॉफी में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे

दुबई (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में जाकर क्रिकेट नहीं खेलेंगी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे। पाकिस्तानी टीम भी 2027 तक किसी भी टूर्नामेंट के लिए भारत नहीं आएगी। उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे। आईसीसी की इस फैसले की जानकारी गुरुवार को सामने आई। मीटिंग में यह फैसला पहले ले लिया गया था। भारत में 2025 विमेंस वनडे वर्ल्ड कप, 2026 में टी-20 वर्ल्ड कप भारत और श्रीलंका में होना है। इससे पहले जब आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को हाइब्रिड मॉडल में कराने की बात पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को बताई थी। तब पीसीबी ने आईसीसी के सामने भारत में टीम न भेजने की मांग रखी थीं, जिसे अब आईसीसी ने मान लिया है।

2028 विमेंस वर्ल्ड कप पाकिस्तान में

आईसीसी बोर्ड ने कन्फर्म किया कि विमेंस वर्ल्ड कप 2028 पाकिस्तान में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट में भी भारतीय और पाकिस्तान महिला टीम के मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे।

सभी 15 मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए माने

आईसीसी के नए चेयरमैन जय शाह की मौजूदगी में 5 दिसंबर को सभी बोर्ड मेंबर्स की मीटिंग हुई थी। शाह इसी महीने दुबई स्थित हेडक्वार्टर भी पहुंचे थे। मीटिंग में सभी 15 बोर्ड मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए मान गए। पाकिस्तान ने भी मीटिंग में फैसले का विरोध नहीं किया।

पीसीबी की मांगें

- पीसीबी ने भारत के साथ ट्राई सीरीज कराने की मांग की पीसीबी ने भविष्य में भारत के साथ किसी न्यूट्रल वेन्यू पर ट्राई सीरीज कराने की मांग की, लेकिन बीसीसीआई और आईसीसी दोनों ने इस पर हामी नहीं भरी। भारत और पाकिस्तान के बीच 2012 से कोई सीरीज नहीं हुई है, दोनों टीमें आईसीसी और एसीसी टूर्नामेंट में ही भिड़ीं हैं।
- भारत में कोई टूर्नामेंट हो तो उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर हों पाकिस्तान की यह मांग आईसीसी ने मान ली है। अब भारत

में कोई टूर्नामेंट होगा तो पाकिस्तानी टीम के मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे। हालांकि, बीसीसीआई ने पहले कहा था कि भारत में सिक्योरिटी को लेकर कोई परेशानी नहीं है, इसलिए पाकिस्तान के मैच न्यूट्रल वेन्यू पर न हो। चैंपियंस ट्रॉफी के 5 मैच पाकिस्तान से छीने गए, पीसीबी ने इसके लिए कॉम्पनसेशन भी मांगा, इस डिमांड को आईसीसी ने पहले ही मान लिया था।

- भारत के ग्रुप में नहीं रहना चाहता पाकिस्तान पीसीबी ने यह भी डिमांड रखी कि अगर भारत न्यूट्रल वेन्यू पर ही खेलना चाहता है तो पाकिस्तान को उसके ग्रुप से अलग कर दिया जाए। ताकि पाकिस्तान अपने सभी ग्रुप मैच होम ग्राउंड पर ही खेले, लेकिन आईसीसी और बीसीसीआई के साथ ब्रॉडकास्टर्स ने भी उनकी इस मांग का विरोध कर दिया, क्योंकि किसी भी टूर्नामेंट में भारत-पाकिस्तान मैच ब्लॉकबस्टर इवेंट की तरह रहता है। चैंपियंस ट्रॉफी में दोनों टीमें 1 मार्च को दुबई में भिड़ सकती हैं।
- फाइनेंशियल ईयर का रेवेन्यू बढ़ाया जाए पीसीबी चाहता है कि उसके फाइनेंशियल ईयर का रेवेन्यू 5.75 परसेंट से बढ़ाया जाए। साथ ही 2031 तक भारत में होने वाले सभी बड़े इवेंट हाइब्रिड मॉडल में ही हों।

फैसले में देरी क्यों हुई

शुरुआत में भारत ने इस टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम पाकिस्तान भेजने से इनकार कर दिया था। पाकिस्तान पहले तो इस बात पर अड़ा रहा कि भारत को पाकिस्तान आना ही होगा, लेकिन भारत के सख्त रुख के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड आखिरकार हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार हो गया है।

संन्यास पर पिता रविचंद्रन ने लगाए गंभीर आरोप

अश्विन को बेइज्जत किया गया, कब तक अपमान सहता...

चेन्नई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया में जारी सीरीज के बीच रविचंद्रन अश्विन का अचानक संन्यास लेना कई लोगों को पच नहीं रहा है। महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर भी संन्यास की टाइमिंग पर सवाल उठा चुके हैं। रिटायरमेंट लेते ही आनन-फानन में अश्विन का भारत लौट आना भी चर्चा में बना हुआ है। इस बीच अश्विन के पिता रविचंद्रन ने आरोप लगाया कि उनके बेटे को टीम में लगातार अपमानित किया जा रहा था। एक मीडिया चैनल से खास बातचीत में ये गंभीर आरोप लगाए।

अपमानित किया जाता हो,रविचंद्रन ने सीएनएन न्यूज18 से कहा, मुझे भी आखिरी मिनट में पता चला। मैं उसके लिए खुश हूं, लेकिन जिस तरह से उन्होंने संन्यास लिया, उससे नाखुश हूं। संन्यास लेना उनकी इच्छा है, मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता, लेकिन अचानक उठाए फैसले के कई कारण हो सकते हैं। केवल अश्विन ही जानते हैं, शायद उन्हें अपमान किया जाता हो।

मां रोने लगी तो पिता ने चूमा गाल, गले लगाया... अश्विन का घर पहुंचने पर हुआ स्वागत – ऑस्ट्रेलिया से भारत लौटने पर रविचंद्रन अश्विन का शानदार अंदाज में हुआ स्वागत। घर पर पिता ने गाल चूमा तो गले लगाकर नेशनल ड्यूट से रिटायर हुए बेटे का किया वेलकम। मां की आंखों में आंसू थे और अश्विन के लिए बैंड बजा रहे थे फैंस। बता दें कि एक दिन पहले ही अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कहा।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बीच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने के एक दिन बाद भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन गुरुवार को बिना किसी शोरशराबे के स्वदेश लौट आए। चेन्नई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के स्थानीय अधिकारी अश्विन को बाहर लेकर आए। इस बीच प्रशंसकों ने उनकी तस्वीरें लीं और उन्होंने एक बाइट दी। इसके बाद वह काली कार में बैठकर वाइफ और बच्चों संग अपने घर चले गए। जब अश्विन घर पहुंचे तो वहां पूरी तैयारी थी। कार से उतरते ही उनका गाजे-बाजे के साथ स्वागत किया गया।

नेशनल ड्यूटी से रिटायर हुए अश्विन जब घर पहुंचे तो उनके पिता बिल्कुल देसी अंदाज में उनके स्वागत में खड़े थे। उन्होंने बेटे के गाल को चूमा और गले लगाया। साथ में अश्विन की मां भी थीं। वह भावुक नजर आ रही थीं। उनकी आंखों में आंसू थे। दूसरी ओर, भीड़ ने अपने हीरो का माला पहनाकर स्वागत किया। अश्विन से लोगों ने ऑटोग्राफ भी लिए। बता दें कि अश्विन ने बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ब्रिस्बेन में बारिश से प्रभावित तीसरा टेस्ट मैच ड्रॉ छूटने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के घोषणा करके सभी को चौंका दिया था।

अश्विन हालांकि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सहित क्लब क्रिकेट में खेलते रहेंगे। आईपीएल के अगले सत्र में वह चेन्नई सुपर किंग्स का प्रतिनिधित्व करेंगे। वह अनिल कुंबले के बाद भारत की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर हैं। उन्होंने 106 मैच में 537 विकेट लिए। कुंबले ने टेस्ट क्रिकेट में 619 विकेट लिए हैं। अश्विन ने भारत के लिए 116 एकदिवसीय मैच खेले, जिसमें उन्होंने 156 विकेट लिए, जबकि 65 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में उन्होंने 72 विकेट हासिल किए। अश्विन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने करियर की शुरुआत 2010 में एक दिवसीय प्रारूप से की थी। इसके एक साल बाद उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था।

'किसी तरह का कोई खेद नहीं' – अश्विन ने संनयास के बाद स्वदेश लौटने पर दिया पहला बयान – ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बीच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने के एक दिन बाद रविचंद्रन अश्विन गुरुवार को जब स्वदेश लौटे तो यहां फूलों की पंखुड़ियों और बैंड बाजे के साथ उनका स्वागत किया गया जिसके बाद इस ऑफ स्पिनर ने कहा कि उन्हें अपने फैसले को लेकर किसी तरह का खेद नहीं है।

लेहमैन की आलोचना पर कमिंस ने मुख्य चयनकर्ता बेली का बचाव किया

लेहमैन ने उन पर टेस्ट टीम के बहुत करीब होने का आरोप लगाया था, ताकि वे कठिन फैसले न ले सकें। ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष क्रम के निराशाजनक प्रदर्शन की तीखी आलोचना हुई है।

प्रात: किरण/ एजेंसी

नईदिल्ली, ।ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट कप्तान पैट कमिंस ने मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली का बचाव किया है, जिसकी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कोच डैरेन लेहमैन ने तीखी आलोचना की थी। लेहमैन ने उन पर टेस्ट टीम के बहुत करीब होने का आरोप लगाया था, ताकि वे कठिन फैसले न ले सकें।

ऑस्ट्रेलिया के शीर्षक्रम के निराशाजनक प्रदर्शन की तीखी आलोचना हुई है, जिसमें उस्मान ख्वाजा, नाथन मैकस्वीनी और मार्नस लाबुशेन का संयुक्त औसत 14.40 रहा, जो 1887/88 के बाद से घरेलू टेस्ट समर में ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष तीन खिलाड़ियों का सबसे कम आंकड़ा है। नाथन मैकस्वीनी, विशेष रूप से खुद को कड़ी निगरानी में पाते हैं। लेहमैन ने मंगलवार को बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला के तीसरे टेस्ट के बारिश से ड्रॉ होने पर बेली पर निशाना साधा, जिससे पूर्व ऑस्ट्रेलियाई अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी के टीम के साथ करीबी संबंधों पर संदेह पैदा हो गया। ह्लमेरे खयाल से, वह टीम के बहुत नजदीक है। मैं चाहूंगा कि वह कहीं चयनकर्ताओं के बॉक्स में बैठकर देखे और अपने फैसले खुद ले सके। लेहमैन ने एबीसी स्पोर्ट पर कहा था।

हालांकि, कमिंस ने बेली का बचाव करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और ऐसे किसी भी सुझाव को खारिज कर दिया, जो उनके कठोर फैसले लेने के फैसले को प्रभावित करता हो। कमिंस ने 7न्यूज को बताया, मुझे नहीं पता कि यह (आलोचना) कैसे सच हो सकती है। सिर्फ.इंटरनेट पर नजर डालने से कहीं ज्यादा किसी टीम को चुनने में बहुत कुछ होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप निष्पक्ष रहें और मुझे लगता है कि चयन पैनल इस मामले में कमाल का है।

उन्होंने आगे कहा, पिछले कुछ सालों में उन्होंने सभी फॉर्मेट में कुछ बहुत ही साहसिक फैसले लिए हैं। शायद पिछले सालों में मैंने अन्य चयनकताओं को जितना साहसिक फैसला करते देखा है, उससे कहीं ज्यादा साहसिक। वे कभी भी कठोर फैसले लेने से पीछे नहीं हटे। जॉर्ज ने जो भूमिका निभाई है, वह कमाल की है और मुझे लगता है कि आप इसे सिर्फ.टीम के खिलाड़ियों से ही नहीं, बल्कि राज्य के खिलाड़ियों से भी सुनेंगे। कमिंस के समर्थन के बावजूद, अगर मेलबर्न में चौथे टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम में महत्वपूर्ण बदलाव नहीं किए गए तो बेली को कड़ी जांच का सामना करना पड़ सकता है।

रियाल मैड्रिड ने इंटरकॉन्टिनेंटल कप जीता, कोच एंसेलोटी ने बनाया रिकॉर्ड

लुसैल (कतर) (एजेंसी)। रियाल मैड्रिड ने मैक्सिको की टीम पचुका को 3-0 से हराकर इंटरकांटिनेंटल कप फुटबॉल टूर्नामेंट का खिताब जीता, जिससे कार्लो एंसेलोटी क्लब के इतिहास में सर्वाधिक ट्राफियां जीतने वाले कोच बन गए। रियाल मैड्रिड ने एंसेलोटी के कोच रहते हुए अपना 15वां खिताब जीता। एंसेलोटी ने इस तरह से मिगुएल मुनोज़ को पीछे छोड़ा जिन्होंने 1960 और 70 के दशक में स्पेन के इस क्लब का कोच रहते हुए 14 खिताब जीते थे। एंसेलोटी ने मैच के बाद कहा, 'मैं इस जीत से बहुत खुश हूं। हमारी शुरुआत बहुत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने अच्छा अंत किया। किलियन एम्बाप्पे, रोड्रिगो और विनीसियस जूनियर ने एक-एक गोल किया जिससे रियाल मैड्रिड चार खिताबों के साथ प्रतियोगिता में सबसे सफल क्लब बन गया।

महिला क्रिकेट : न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच पहला वनडे बारिश के कारण रद्द

ऑस्ट्रेलिया पहले ही 2025 के आयोजन के लिए क्वालीफाई कर चुका है, लेकिन न्यूजीलैंड में शेष मुकाबलों में से दो में जीत के साथ महिला चैम्पियनशिप में शीर्ष स्थान हासिल कर सकता है।

प्रात: किरण/ एजेंसी

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया महिला क्रिकेट टीमों के बीच तीन मैचों की श्रृंखला का पहला वनडे गुरुवार को वेलिंगटन में खराब मौसम के कारण रद्द कर दिया गया। दोनों टीमों के बीच दूसरा एकदिनी 21 और तीसरा व आखिरी मैच 23 दिसंबर को खेला जाएगा।

यह श्रृंखला वर्तमान आईसीसी महिला चैम्पियनशिप का हिस्सा है और मैच रद्द होने से दोनों टीमें निराश हैं, क्योंकि वे अगले वर्ष होने

वाले आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप में जगह बनाने की कोशिश में हैं। ऑस्ट्रेलिया पहले ही 2025 के आयोजन के लिए क्वालीफाई कर चुका है, लेकिन न्यूजीलैंड में शेष मुकाबलों में से दो में जीत के साथ महिला चैम्पियनशिप में शीर्ष स्थान हासिल कर सकता है।

भारत ऑस्ट्रेलियाई टीम से 10 अंक पीछे है, लेकिन उसे अभी भी छह मैच खेलने हैं और उन सभी मैचों में जीत के साथ वह मौजूदा विश्व कप चैंपियन से आगे निकल सकता है। न्यूजीलैंड ने अगले साल के 50 ओवर के विश्व कप में अपनी जगह पक्की नहीं की है, गुरुवार को बेसिन रिजर्व में कोई परिणाम नहीं मिलने के बाद कीवी टीम वर्तमान में 21 अंकों के साथ महिला चैम्पियनशिप स्टैंडिंग में छठे स्थान पर है।

दोनों टीमें इस प्रकार हैं: न्यूजीलैंड : सूजी बेट्स, लॉरेन डाउन, सोफी डिवाइन (कप्तान), ब्रुक हॉलिडे, मैडी ग्रीन, इसाबेला गेज (विकेट कीपर), अमेलिया केर, ईडन कार्सन, फ्रैन जोनास, जेस केर, मौली पेनफोल्ड, इसाबेला रोज जेम्स, रोजमेरी मैयर।

ऑस्ट्रेलिया : एलिसा हीली (विकेट कीपर/कप्तान), फोबे लिचफील्ड, बेथ मूनी, एलिस पेरी, एशले गार्डनर, एनाबेल सदरलैंड, ताहलिया मैकग्राथ, हीथर ग्राहम, जॉर्जिया वेयरहैम, डार्सी ब्राउन, अलाना किंग, किम गर्थ, मेगन शुट्ट, जॉर्जिया वोल।

मैच महाराज को मंगलवार को पार्ल में पहले वनडे से पहले अभ्यास के दौरान चोट लगी थी।

केशव महाराज पाकिस्तान के खिलाफ शेष वनडे मैचों से बाहर

महाराज को मंगलवार को पार्ल में पहले वनडे से पहले अभ्यास के दौरान चोट लगी थी। उनकी जगह दक्षिण अफ्रीका की एकादश में तेज गेंदबाज ऑलराउंडर एंडिले फेहलुकवायो को शामिल किया गया है। महाराज पुनर्वास के लिए डरबन लौटेंगे, जबकि ब्योर्न फोर्टुइन को पाकिस्तान के खिलाफ शेष दो वनडे मैचों के लिए उनके प्रतिस्थापन के रूप में नामित किया गया है, जो क्रमशः केपटाउन और जोहान्सबर्ग में गुरुवार और रविवार को खेले जाने हैं।

प्रात: किरण/ एजेंसी

केपटाउन। दक्षिण अफ्रीका के स्पिनर केशव महाराज बाएं हाथ की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण पाकिस्तान के खिलाफ शेष वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं। महाराज को मंगलवार को पार्ल में पहले वनडे से पहले अभ्यास के दौरान चोट लगी थी। उनकी जगह दक्षिण अफ्रीका की एकादश में तेज गेंदबाज ऑलराउंडर एंडिले फेहलुकवायो को शामिल किया गया है।

महाराज पुनर्वास के लिए डरबन लौटेंगे, जबकि ब्योर्न फोर्टुइन को पाकिस्तान के खिलाफ शेष दो वनडे मैचों के लिए उनके प्रतिस्थापन के रूप में नामित किया गया है, जो क्रमशः केपटाउन और जोहान्सबर्ग में गुरुवार और रविवार को खेले जाने हैं। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा, केशव महाराज पाकिस्तान के खिलाफ शेष वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं, क्योंकि स्कैन में बाएं हाथ की मांसपेशियों में खिंचाव का पता चला है। वह पुनर्वास के लिए डरबन लौटेंगे और पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट से पहले उनकी स्थिति का फिर से आकलन किया जाएगा।

इसमें कहा गया है, अंतिम दो वनडे के लिए ब्योर्न फोर्टुइन को उनके

प्रतिस्थापन के रूप में नामित किया गया है। महाराज की चोट दक्षिण अफ्रीका के अनुपलब्ध गेंदबाजों की बढ़ती सूची में जुड़ गई है। मेजबान टीम पहले से ही एनरिक नोर्टजे (पैर की अंगुली में फ्रैक्चर), गेराल्ड कोएट्जी (कमर में), लुंगी एनगिडी (कूल्हे), नांद्रे बर्गर (पीठ के निचले हिस्से) और वियान मुल्डर (उंगली में फ्रैक्चर) से वंचित है। हाल ही में, महाराज ने गकेबरहा में श्रीलंका के खिलाफ अंतिम दिन दक्षिण अफ्रीका की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उन्होंने 76 रन देकर 5 विकेट लिए थे जिससे बल्लेबाजी ढह गई थी। उनकी अनुपस्थिति में, दक्षिण अफ्रीका पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए स्पिन गेंदबाजी विकल्पों डेन पीट और सेनुरन मुथुसामी की ओर रुख कर सकता है। अन्य संभावित उम्मीदवारों में बल्लेबाजी ऑलराउंडर नील ब्रांड शामिल हैं, जो बाएं हाथ से स्पिन गेंदबाजी करते हैं और इस साल की शुरुआत में न्यूजीलैंड का दौरा किया था; लेग स्पिनर शॉन वॉन बर्ग, जिन्होंने उसी दौरे पर पदार्पण किया था; और बाएं हाथ के स्पिनर तबरेज शम्सी, हालांकि उन्होंने आखिरी बार 2021 में प्रथम श्रेणी मैच खेला था।

पाकिस्तान के खिलाफ दो मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट 26 दिसंबर को सेंचुरियन में शुरू होगा। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में वर्तमान में नंबर 1 पर काबिज दक्षिण अफ्रीका को फाइनल में जगह पक्की करने के लिए एक और जीत की जरूरत है।

ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष तीन बल्लेबाजों की फॉर्म गंभीर चिंता का विषय: इयान हीली

प्रात: किरण/ एजेंसी

मेलबर्न। अपने जमाने के दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज इयान हीली ने भारत के खिलाफ 26 दिसंबर से शुरू होने वाले चौथे टेस्ट मैच से पहले ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष क्रम के तीन बल्लेबाजों की फॉर्म को गंभीर चिंता का विषय करार देते हुए उन्हें अपने बेसिक्स पर ध्यान देने की सलाह दी।

ऑस्ट्रेलिया ने बारिश से प्रभावित तीसरे टेस्ट मैच की पहली पारी में ट्रैविस हेड और स्टीव स्मिथ के शतकों की मदद से 445 रन बनाए, लेकिन दूसरी पारी में उसके बल्लेबाज लड़खड़ा गए, जिसे उसने सात विकेट पर 89 रन बनाकर समाप्त घोषित किया था। यह मैच ड्रॉ रहा, जिससे पांच मैच की श्रृंखला अभी 1झ1 से बराबरी पर है। हीली ने एसईएन एन रेडियो से कहा, ह्यह्यमुझे नहीं लगता कि ऑस्ट्रेलिया मेलबर्न टेस्ट से पहले उन पर किसी तरह का दबाव बनाएगा लेकिन वे फॉर्म में नहीं है। वे गंभीर रूप से फॉर्म से बाहर हैं। सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा और नाथन मैकस्वीनी तथा तीसरे नंबर के बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन रन बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हीली ने कहा, चयन समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बेली से पूछा जाना चाहिए कि क्या यह तीनों बल्लेबाज फॉर्म में वापसी कर सकते हैं। क्या उन्हें विश्वास है कि हमारे शीर्ष क्रम के तीन बल्लेबाज फॉर्म में वापसी करेंगे। उन्होंने कहा कि मेलबर्न टेस्ट मैच फॉर्म में वापसी करने के लिए इन तीनों बल्लेबाजों के लिए सर्वश्रेष्ठ मौका होगा।

संक्षिप्त खबरें

पुराने हथियारों के निपटान के लिए यूक्रेन को हथियार भेज रहा स्पेन

मैड्रिड। स्पेन पुराने हथियारों से छुटकारा पाने के लिए यूक्रेन को हथियार भेज रहा है। मैड्रिड में रूसी राजदूत यूरी क्लिमेंको ने स्पूतनिक के साथ एक साक्षात्कार में यह जानकारी दी। श्री क्लिमेंको ने कहा, स्पेनिश सशस्त्र बलों की वास्तविक क्षमता को ध्यान में रखते हुए, सहायता के तौर पर स्पेन के अनुसार, 2022-24 में 600 मिलियन यूरो पश्चिमी आपूर्ति में दी जा रही है। यूक्रेनी सशस्त्र बलों को हस्तांतरित हथियारों की सूची पुराने हथियारों के निपटान और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में अपनी स्थिति को मजबूत करने की स्पेन की इच्छा को दशार्ती है।

यमन से प्रक्षेपित मिसाइल को रोका गया: आईडीएफ

सना। इजरायल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने कहा कि यमन से प्रक्षेपित की गई एक मिसाइल को रोक दिया गया है। आईडीएफ ने टेलीग्राम पर एक बयान में कहा, मध्य इजराइल में कई क्षेत्रों में बजने वाले सायरन के बाद, इजराइली वायु सेना ने यमन से लॉन्च की गई एक मिसाइल को इजरायली क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले रोक दिया। अवरोधन से मलबा गिरने की संभावना के बाद रॉकेट और मिसाइल सायरन बजाए गए।

ड्रोन हमले की वजह से रोस्तोव क्षेत्र में तेल रिफाइनरी में लगी आग

मॉस्को। रूस के दक्षिणी रोस्तोव क्षेत्र में नोवोशाख्तिंस्क तेल रिफाइनरी में ड्रोन हमले के कारण आग लग गई। कार्यवाहक गवर्नर यूरी स्लीयुसर ने यह जानकारी दी। श्री स्लीयुसर ने टेलीग्राम पर लिखा, नोवोशाख्तिंस्क में ड्रोन हमले के परिणामस्वरूप नोवोशाख्तिंस्क तेल रिफाइनरी में आग लग गई। उन्होंने कहा कि आपातकालीन बचाव दल घटनास्थल के लिए रवाना हो गए हैं।

पाक सुरक्षा बलों ने खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में 11 आतंकवादियों को ढेर किया

पेशावर। पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने अशांत उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में तीन अलग-अलग अभियानों में 11 आतंकवादियों को ढेर किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पाकिस्तान सशस्त्र बलों की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) के अनुसार ये अभियान 17 और 18 दिसंबर को प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में संचालित किए गए। क्षेत्र में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद टैंक जिले में पहला अभियान प्रारंभ किया गया जिसमें सात आतंकवादी गए। दूसरा अभियान उत्तरी वजीरिस्तान जिले के दत्ता खेल में प्रारंभ किया गया, जहां दो आतंकवादी मारे गए। मोहमंद जिले में दो और आतंकवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों के पास से हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया गया। सेंटर फॉर रिसर्च एंड सिक्योरिटी स्टडीज (सीआरएसएस) की ओर से जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 की तीसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में पाकिस्तान में आतंकवादी हिंसा में लोगों के मारे जाने और आतंकवाद रोधी अभियानों में बड़ी संख्या में आतंकवादियों के मारे जाने की घटनाएं हुईं।

इजरायली हमलों में कम से कम 24 फिलिस्तीनियों की मौत

गाजा। गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में कम से कम 24 फिलिस्तीनियों की मौत हो गई। फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों के मुताबिक, बुधवार को इजरायली लड़ाकू विमानों ने उत्तरी गाजा के बेत हनौन शहर में एक घर पर एयर स्ट्राइक की। गाजा में सिविल डिफेंस के प्रवक्ता महमूद बसल ने सिन्हुआ को बताया कि हमले में दो महिलाओं सहित चार लोगों की मौत हुई तथा कई अन्य अभी भी मलबे के नीचे लापता हैं। बसल के अनुसार, उत्तरी गाजा में एक अलग घटना में, जबालिया क्षेत्र में फिलिस्तीनियों की एक सभा को निशाना बनाकर एक इजरायली ड्रोन ने हमला किया किया। हमले में दो और लोग मारे गए और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया।

गिसेले पेलिकॉट के पूर्व पति को बलात्कार और अन्य सभी आरोपों में दोषी पाया गया

एविग्नन (फ्रांस)। फ्रांस की एक अदालत ने देश के सनसनीखेज बलात्कार मामले में बृहस्पतिवार को गिसेले पेलिकॉट के पूर्व पति को बलात्कार और उसके खिलाफ अन्य सभी आरोपों में दोषी करार दिया। एविग्नन की अदालत के मुख्य न्यायाधीश रोजर अराता ने इस मामले में अपना फैसला सुनाया, हालांकि उन्होंने अभी सजा नहीं सुनाई है। दोषी को 20 साल तक की कैद हो सकती है। पांच न्यायाधीशों की पीठ मामले में चार दर्जन से अधिक पुरुषों के खिलाफ फैसला सुना रही है, जिन पर पेलिकॉट के साथ बलात्कार और यौन उत्पीड़न का आरोप है।

ग्रीस नौका हादसे में कम से कम 40 पाकिस्तानियों की मौत, दूतावास ने भेजी रिपोर्ट

प्रात: किरण/एजेंसी

इस्लामाबाद। हाल ही में ग्रीस के पास समुद्र में तीन नावों के पलटने से पाकिस्तान के कम से कम 40 नागरिकों की मौत हो गई। इनमें से सिर्फ पांच के शव खोजे जा सके हैं। बाकी के जीवित बचने की कोई संभावना नहीं है। इसलिए उनको भी मृत मान लेना चाहिए। वजह यह है कि ग्रीस तटरक्षक बल ने समुद्र में बचाव अभियान को बंद कर दिया है। ग्रीस की राजधानी एथेंस से पाकिस्तान के दूतावास ने सरकार को भेजी रिपोर्ट में यह सूचना साझा की है।

जियो न्यूज चैनल में प्रसारित खबर के अनुसार, लीबिया में अभी भी 5,000 से अधिक पाकिस्तान के नागरिक हैं। वह लीबियाई और पाकिस्तानी एजेंटों के साथ यूरोप की यात्रा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने पाकिस्तान से वीजा प्राप्त किया और

कानूनी रूप से लीबिया पहुंचे। ग्रीस के समुद्रीय जल क्षेत्र में पलटने वाली तीन नावें लीबिया के टोब्रुक बंदरगाह से आई थीं। पहले जहाज में 45 यात्री सवार थे। इनमें से छह पाकिस्तानी थे। दूसरी नाव पर सवार 47 यात्रियों में से पांच पाकिस्तानी थे। तीसरी नाव में सवार 83 यात्रियों में तीन बांग्लादेशी, दो मिस्र, दो सूडानी और 76 पाकिस्तानी शामिल थे। एक नाव से पांच पाकिस्तानियों के शव बरामद हुए। इनमें चार के नाम हैं- सुफियान, रहमान अली, हाजी अहमद और आबिद। पांचवें की पहचान नहीं हो सकी।

इस बीच प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अधिकारियों को मानव तस्करों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। शहबाज ने अधिकारियों को याद दिलाया कि पिछले साल उसी क्षेत्र में एक अन्य घटना में 262 पाकिस्तानी नागरिकों की जान चली गई थी।

भारत-चीन संबंध : यूएन चीफ ने किया बीजिंग-नई दिल्ली कूटनीतिक प्रयासों का किया स्वागत

द्विपक्षीय कोशिशों के जरिए अंतरराष्ट्रीय विवादों को निपटाने की 'प्रशंसा' की जानी चाहिए। यह बयान ऐस समय में आया है जब भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल चीन के दौरे पर हैं। वह विशेष प्रतिनिधियों की 23वें दौर की वार्ता में हिस्सा लेने के लिए मंगलवार को यहां पहुंचे हैं। यह बैठक एक लंबे अर्से के बाद हो रही है। 2019 में पिछली बैठक दिल्ली में हुई थी।

प्रात : किरण/एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत-चीन के बीच हुए नवीनतम समझौते का स्वागत किया है, जिसका मकसद द्विपक्षीय रिश्तों में सुधार लाना और सीमा मुद्दों पर सकारात्मक कदम उठाना है। उनके प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने यह बात बुधवार को कही। बयान में कहा गया, हम द्विपक्षीय कूटनीति के इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम का स्वागत करते हैं। द्विपक्षीय कोशिशों के जरिए अंतरराष्ट्रीय विवादों को निपटाने की ह्यप्रशंसाह्ल की जानी चाहिए। यह बयान ऐस समय में आया है जब भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल चीन के दौरे पर हैं। वह विशेष प्रतिनिधियों की 23वें दौर की वार्ता में हिस्सा लेने के लिए मंगलवार को यहां पहुंचे

हैं। यह बैठक एक लंबे अर्से के बाद हो रही है। 2019 में पिछली बैठक दिल्ली में हुई थी।

डोभाल ने चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ बुधवार को बैठक की। इस दौरान सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और सौहार्द बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करते हुए, दोनों नेताओं ने जमीनी स्तर पर शांतिपूर्ण स्थिति सुनिश्चित करने की जरूरत पर बल दिया, ताकि सीमा पर मुद्दे द्विपक्षीय संबंधों के सामान्य विकास में बाधा न बनें। एनएसए डोभाल और वांग यी ने आपसी हितों के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। उन्होंने कैलाश मानसरोवर यात्रा को फिर से शुरू करने, सीमा पार नदियों पर डाटा साझा करने और सीमा व्यापार सहित सीमा पार सहयोग और आदान-प्रदान के लिए सकारात्मक दिशा-निर्देश दिए।

दोनों नेताओं ने हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच कजान में हुई बैठक के दौरान लिए गए फैसले के तहत मुलाकात की। इस मीटिंग में सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और सौहार्द के प्रबंधन की देखरेख करने, सीमा प्रश्न का निष्पक्ष, उचित और परस्पर स्वीकार्य समाधान तलाशने के लिए शीघ्र बैठक करने का फैसला लिया गया था।

यमन में विद्रोहियों के गढ़ सना और बंदरगाह शहर पर इजराइल ने हवाई हमले में नौ लोगों की मौत

प्रात : किरण/एजेंसी

दुबई। यमन में हूती विद्रोहियों का गढ़ बनी राजधानी सना और बंदरगाह शहर पर बृहस्पतिवार को इजराइल की ओर से एक के बाद एक किए गए हवाई हमलों में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इस हमले से कुछ समय पहले ही हूती विद्रोहियों ने मध्य इजराइल को निशाना बनाते हुए एक मिसाइल दागी। इन हमलों से ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के खिलाफ इजराइल के अभियान में तेजी आने के आसार हैं।

इजराइल अब तक हूती विद्रोहियों पर उस स्तर के सैन्य हमलों से परहेज करता रहा है जिस स्तर के हमले उसने फलस्तीन के चरमपंथी समूह हमास और लेबनान के हिजबुल्ला पर किए हैं। हूती के नियंत्रण वाले समाचार चैनल ह्यअल-मसीराह्ल ने खबर में बताया कि कुछ हमलों में राजधानी में बिजलीघरों के साथ-साथ लाल सागर पर रास ईसा तेल टर्मिनल को निशाना बनाया गया। चैनल ने अपनी खबर में बताया कि बंदरगाह शहर हुदेदा में कम से कम सात लोगों की मौत हो गई, जबकि रास ईसा तेल टर्मिनल पर दो लोगों की जान चली गई। इजराइली सेना ने बयान में यह नहीं बताया कि उसने हमला किसे निशाना बनाकर किया था। बयान में कहा गया, सैन्य उद्देश्यों के तहत हूती विद्रोहियों को निशाना बनाया गया। ये हमले हूती विद्रोहियों के आतंकवादी शासन को कमजोर करेंगे। इजराइली सेना के प्रवक्ता रियर एडमिरल डैनियल हगारी ने कहा कि इन हमलों ने बिजली और बंदरगाह के बुनियादी ढांचों को नुकसान पहुंचाया है। हगारी ने कहा, इजराइल हूती के हमलों से खुद को और अपने नागरिकों को बचाने के लिए बड़ी कार्रवाई करने में नहीं हिचकेगा।

वानुअतु में भूकंप के बाद हालात गंभीर, सरकार ने मांगी अंतरराष्ट्रीय मदद : यूएन

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार अधिकारियों को आशंका है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

प्रात : किरण/एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। वानुअतु में भीषण भूकंप के बाद स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से मदद की अपील की है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने मीडिया को जानकारी दी की राहत और बचाव कर्यों को पूरा करने के लिए सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मदद मांगी है।

वानुअतु की सरकार ने मंगलवार को आए 7.3 तीव्रता के भूकंप के बाद सात दिनों के लिए आपातकाल की स्थिति घोषित की है। कम से कम 14 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि 200 से अधिक लोग घायल हुए हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार अधिकारियों को आशंका है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, भूकंप से अस्पताल, घर, सार्वजनिक भवन, सड़कें, जलाशय और गैस पाइप सहित व्यापक क्षति हुई है। इफेट के पास के गांवों में भी भूस्खलन हुआ है। कई इलाकों में संचार व्यवस्था टूट गई है। संयुक्त राष्ट्र मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (ओसीएचए) ने बताया कि राजधानी शहर में पोर्ट विला

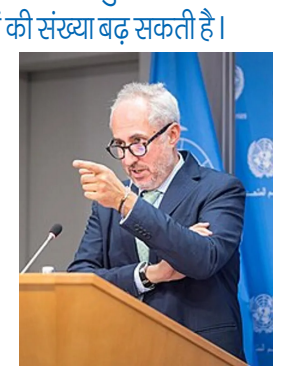

इंटरनेशनल एयर पोर्ट पर ऑपरेशन में देरी हो रही है। हवाई अड्डा सभी कमर्शियल सर्विस के लिए बंद है। भूस्खलन के कारण बंदरगाह तक पहुंच भी बाधित है, जिससे जरूरी आपूर्ति और कर्मियों का परिवहन सीमित हो गया है। ओसीएचए ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र और सहयोगी मदद के लिए संसाधन जुटा रहे हैं और भूकंप प्रभावित क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र आपदा मूल्यांकन और समन्वय टीम सहित प्रतिक्रिया टीमों को तैनात किया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र के मानवीय कार्यकर्ताओं ने कहा कि तत्काल जरूरतों में मेडिकल सप्लाई और चिकित्सा संरचनाओं की मरम्मत, मोबाइल मेडिकल टीम, भारी मशीनरी के साथ खोज और बचाव दल, साथ ही सुरक्षित पेयजल शामिल हैं।

अमेरिका के सांसद ने बांग्लादेश के विरूद्ध लक्षित प्रतिबंधों की मांग की

भारतीय अमेरिकी कांग्रेस सदस्य श्री थानेदार ने बुधवार को दोपहर में देश के विभिन्न भागों से आए हिंदू अमेरिकियों की उपस्थिति में यूएस कैपिटॉल में कहा, मैं वित्त और विदेश विभाग से बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ इन जघन्य कृत्यों को अंजाम देने वालों पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान करता हूं।

प्रात : किरण/एजेंसी

वाशिंगटन। बांग्लादेश में मानवाधिकार उल्लंघन के बढ़ते संकट पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत रेखांकित करते हुए एक प्रभावशाली अमेरिकी सांसद ने बुधवार को वित्त और विदेश विभाग से इस दक्षिण एशियाई देश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ इन जघन्य कृत्यों को अंजाम देने वालों पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान किया। भारतीय अमेरिकी कांग्रेस सदस्य श्री थानेदार ने बुधवार को दोपहर में देश के विभिन्न भागों से आए हिंदू अमेरिकियों की उपस्थिति में यूएस कैपिटॉल में कहा, मैं वित्त और विदेश विभाग से बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ इन जघन्य कृत्यों को अंजाम देने वालों पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान करता हूं। उन्होंने कहा कि जुलाई से बांग्लादेश में राजनीतिक हिंसा में वृद्धि हुई है, जिसके कारण पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा और वह देश छोड़कर

चली गयीं। थानेदार ने कहा, तब से हमने बांग्लादेश को राजनीतिक उथल-पुथल में उलझते देखा है, जहां हिंदू, बौद्ध और ईसाई अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी के हिंसक कृत्यों का खामियाजा भुगतना पड़ा है तथा उनके पूजा स्थलों को निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में नई सरकार का गठन देश में स्थायी शांति और स्थिरता कायम करने के लिए उनके इतिहास में एक और प्रयास है। हालांकि इस नई सरकार के बारे में मेरी अपनी चिंताएं हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि हमारी सहायता से बांग्लादेश अंततः इन संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान ढूंढ लेगा।

अमेरिका ने बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम में मदद के आरोप में चार पाकिस्तानी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया

प्रात : किरण/एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका ने पाकिस्तान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम में मदद के आरोप में सरकारी एयरोस्पेस एवं रक्षा एजेंसी नेशनल डेवलपमेंट कॉम्प्लेक्स समेत चार पाकिस्तानी कंपनियों पर बुधवार को प्रतिबंध लगा दिए। विदेश मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान के लंबी दूरी के मिसाइल कार्यक्रम से होने वाले खतरे के मद्देनजर अमेरिका ने चार संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा रहा है। एनडीसी के अलावा, तीन अन्य संस्थाएं अख्तर एंड संस प्राइवेट लिमिटेड, एफिलिएट्स इंटरनेशनलह्ल और रॉकसाइड एंटरप्राइज हैं। ये तीनों कराची में स्थित हैं, जबकि एनडीसी इस्लामाबाद में है। एनडीसी ने पाकिस्तान के लंबी दूरी के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के

लिए सामग्री हासिल करने के वास्ते काम किया है।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका का आकलन है कि एनडीसी पाकिस्तान की बैलिस्टिक मिसाइलों के विकास के लिए जिम्मेदार है, जिसमें शाहीन सीरीज की बैलिस्टिक मिसाइल भी शामिल हैं। वहीं, अख्तर एंड संस प्राइवेट लिमिटेड ने पाकिस्तान के लंबी दूरी के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम के लिए उपकरणों की आपूर्ति के वास्ते एनडीसी के लिए काम किया है। एफिलिएट्स इंटरनेशनल ने पाकिस्तान के बैलिस्टिक-मिसाइल कार्यक्रम की खातिर एनडीसी और अन्य के लिए उपकरण खरीदे हैं।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि रॉकसाइड एंटरप्राइज ने पाकिस्तान के लंबी दूरी के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम के लिए उपकरणों की आपूर्ति के लिए एनडीसी के लिए काम किया है।

सीरिया संकट पर मिलकर काम करेंगे तुर्की, लेबनान : एर्दोगन और मिकाती का ऐलान

प्रात : किरण/एजेंसी

अंकारा। तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन ने कहा कि तुर्की और लेबनान, बशर अल-असद के पतन के बाद सीरिया मुद्दों पर मिलकर काम करने पर सहमत हुए हैं। एर्दोआन ने बुधवार को लेबनान के प्रधानमंत्री नजीब मिकाती के साथ एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, सीरिया में एक नए युग की शुरूआत हो गई है। सीरिया के दो प्रमुख पड़ोसियों के रूप में, हम इस बात पर सहमत हैं कि हमें मिलकर काम करना चाहिए। तुर्की के राष्ट्रपति ने कहा, सीरिया की स्थिरता क्षेत्र की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि युद्धग्रस्त सीरिया का पुनर्निर्माण दोनों देशों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार एदोर्गान ने कहा कि लेबनान के खिलाफ इजरायली हमले कोई नई बात नहीं है और देश पिछले कुछ वर्षों में इसी तरह के हमलों का सामना कर चुका है। एदोर्गान ने कहा कि तुर्की इजरायल के हमलों के खिलाफ लेबनान के पक्ष में खड़ा रहेगा। उन्होंने इजरायल द्वारा युद्ध विराम समझौते के प्रति प्रतिबद्धता की जरुरत पर बल दिया। मिकाती ने हाल के महीनों में इजरायल के साथ युद्ध के दौरान लेबनान को के समर्थन के लिए एर्दोगन को धन्यवाद दिया। उन्होंने सीरिया की राजनीतिक उथल-पुथल का फायदा उठाने और सीरियाई भूमि पर अपने कब्जे का विस्तार करने के लिए इजरायल की निंदा की, और इस बात पर जोर दिया कि इसे रोकने के लिए इजरायल पर दबाव डाला जाना चाहिए।

नीति बिल को पहले सदन से मंजूरी मिल चुकी है और अब राष्ट्रपति जो बाइडेन के इस पर हस्ताक्षर करने का इंतजार है।

अमेरिकी सीनेट ने वार्षिक रक्षा नीति बिल किया पारित, हस्ताक्षर के लिए राष्ट्रपति बाइडेन के पास भेजा

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, वर्मोंट राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले स्वतंत्र सीनेटर बर्नी सैंडर्स ने इस बिल के खिलाफ मतदान किया। उन्होंने कहा कि यह सैन्य व्यय के लिए अनावश्यक रूप से उच्च राशि है। सैंडर्स ने सीनेट में अपनी टिप्पणी में कहा, हमें सेना पर लगभग एक ट्रिलियन डॉलर खर्च करने की जरूरत नहीं है, जबकि पांच लाख अमेरिकी बेघर हैं, बच्चे भूखे रहते हैं और बुजुर्ग लोग सर्दियों में अपने घरों को गर्म करने में असमर्थ हैं। सैंडर्स ने सोमवार को विधेयक पर सीनेट की प्रक्रियागत वोटिंग के दौरान कहा कि अमेरिका को ऐसी रक्षा प्रणाली की जरुरत नहीं है।

प्रात : किरण, एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी सीनेट ने वित्त वर्ष 2025 के लिए 895 अरब डॉलर के रक्षा नीति बिल को पारित करने के लिए मतदान किया। बिल को पहले सदन से मंजूरी मिल चुकी है और अब राष्ट्रपति जो बाइडेन के इस पर हस्ताक्षर करने का इंतजार है।

2025 राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकरण अधिनियम (एनडीएए) को 85-14 वोट से पारित किया गया, जो 100 सदस्यीय ऊपरी सदन में पास होने के लिए जरूरी 60 मतों से कहीं अधिक है। बिल में स्वीकृत सैन्य व्यय पिछले वर्ष के 886 बिलियन डॉलर के शीर्ष मूल्य से 1 प्रतिशत अधिक है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, वर्मोंट राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले स्वतंत्र सीनेटर बर्नी सैंडर्स ने इस बिल के खिलाफ मतदान किया। उन्होंने कहा कि यह सैन्य व्यय के लिए अनावश्यक रूप से उच्च राशि है। सैंडर्स ने सीनेट में अपनी टिप्पणी में कहा, हमें सेना पर लगभग एक ट्रिलियन डॉलर खर्च करने की जरूरत नहीं है, जबकि पांच लाख अमेरिकी बेघर हैं, बच्चे भूखे रहते हैं और बुजुर्ग लोग सर्दियों में अपने घरों को गर्म करने में असमर्थ हैं। सैंडर्स ने सोमवार को विधेयक पर सीनेट की प्रक्रियागत वोटिंग के दौरान कहा कि अमेरिका को ऐसी रक्षा प्रणाली की जरुरत

बिल को पहले सदन से मंजूरी मिल चुकी है और अब राष्ट्रपति जो बाइडेन के इस पर हस्ताक्षर करने का इंतजार है। 2025 राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकरण अधिनियम (एनडीएए) को 85-14 वोट से पारित किया गया, जो 100 सदस्यीय ऊपरी सदन में पास होने के लिए जरूरी 60 मतों से कहीं अधिक है।

नहीं है, जो मुट्ठीभर रक्षा ठेकेदारों के लिए भारी मुनाफा कमाने के लिए डिजाइन की गई हो, जबकि देश की जरूरत से कम आपूर्ति करती हो। इस वर्ष के एनडीएए ने सैन्यकर्मियों के लिए सामान्य से अधिक वेतन वृद्धि को भी अधिकृत किया है। सबसे निचले रैंक के सैनिकों के लिए 14.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी, शेष सशस्त्र बलों के लिए 4.5 फीसदी की वृद्धि की गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादक: रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोट: प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129